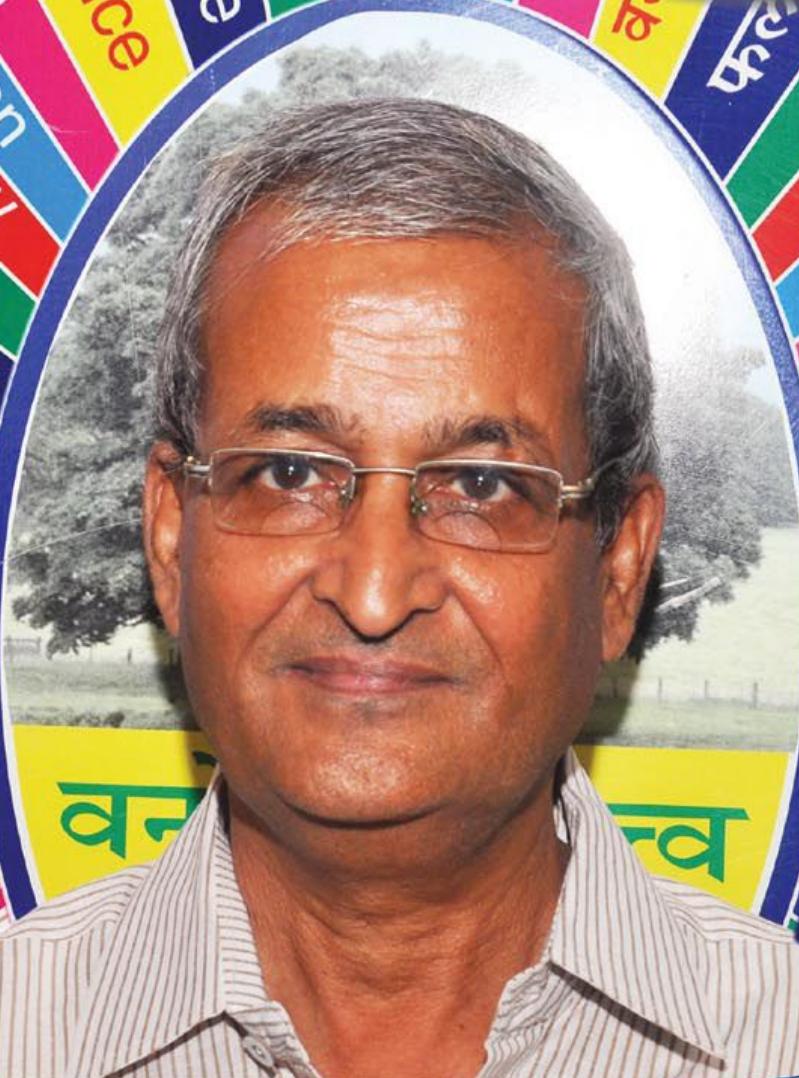




श्री माहेश्वरी टाईम्स



निरंतर सफल प्रकाशन
के 15 वर्ष



वन
नव

निसर्ग के नायक

नवल डागा

पर्यावरण भी करता है जिन पर नाज़



बहुप्रतिक्रिया

श्री माहेश्वरी मेलापक 2020
वैवाहिक डायरेक्ट्री प्रकाशित

Visit us
www.srimaheshwaritimes.com



देखें प्रति मंगलवार

SMT NEWS

VIDEO NEWS BULLETIN



Padhegi Pari

in Maheshwari. Jaipur



A COLLEGE AS SAFE AS HOME.



Hostel facility with Govt. approved food, hygiene & safety standards.



Safe and secure campus.



No touch sanitisation.



Latest e-learning facilities.

Courses Offered	B.Sc.	B.A.	B.Com
B.B.A.	M.Com (ABST, BADM, EAFM)		
MHRM	MA (Geo., Socio, Eco, Eng. Lit)		

SOCIAL DISTANCING IN
CLASSROOMS AND HOSTEL
AS PER GOVERNMENT NORMS
(5 YARDS) WILL BE MAINTAINED.

MAHESHWARI GIRLS P.G. COLLEGE

A Prestigious English Medium P.G. College for Girls with Hostel Facility

Affiliated to the University of Rajasthan

Governed by The Education Committee of The Maheshwari Samaj (Society), Jaipur.

Sector-5 (Extn), Pratap Nagar, Near Bambala Puliya, Tonk Road, Jaipur
www.maheshwaricollege.ac.in • maheshwaricollegejpr@gmail.com

Pradeep Baheti
President

Natwar Lal Ajmera
Gen. Secretary (Edu.)

Kailash Chand Ajmera
Hon. Secretary

Apply online @ www.maheshwaricollege.ac.in Mob.: 9649418880, 9649318880



अपनी के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

► अंक-02 ► अगस्त 2020 ► वर्ष-16

प्रेरणास्रोत

स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक

पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैनल)
श्री नेमीचन्द्र तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्डा (कोलकाता)
श्री रामकुमार टावरी (दिल्ली)

अतिथि सम्पादक

घनश्याम करनानी, कोलकाता

परामर्शदाता

दिनेश माहेश्वरी (भूतडा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक

अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार

राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार

गोविन्द मालू (इन्दौर)

बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)

कार्यालय-

९०, विद्या नगर (टेढ़ी खजूर दरगाह के पीछे),
सांचेर रोड, उज्जैन - 456010 (म.प्र.)

Phone : 0734-2526561, 2526761

Mobile : 094250-91161

e-mail : smt4news@gmail.com

स्वत्त्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुत्रक श्रीमती सरिता
बाहेती द्वारा छार्ट ऑफिसेट, श्री माहेश्वरी भवन,
गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर
सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह अवश्यक नहीं है।

सभी प्रसंगों का न्यायश्वर उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times

■ PNB A/c. No. : 0459002100043471
IFSC- PUNB0045900

■ ICICI A/c. No. : 030005001198
IFSC- ICIC0000300

Tariff of Membership

Rs. 800/- for Three years
Rs. 3100/- for Life Time (12 Years)

निसर्ग के नायक

नवल डागा

17

पर्यावरण भी करता है जिन पर नाज़

महाभारत का पर्यावरण संदेश

विचार क्रान्ति

महाभारत के आदिपर्व की दो कथाएँ आज भी मनुष्य जाति के लिए पर्यावरण के रक्षण की प्रेरक बनी हुई हैं। आवश्यकता केवल इसके प्रतीकों को निहितार्थ को समझने की है।

आपने सुना होगा कि भगवान् श्रीकृष्ण और अर्जुन ने अग्निदेव के आग्रह पर इन्द्रप्रस्थ के निकट खाण्डव वन को जला दिया था। अग्निदेव इस वन को जलाने का सात बार प्रयास कर चुके थे लेकिन हर बार असफल हुए थे, कारण इस वन में देवराज इंद्र का सखा तक्षक नाग रहता था। उसकी रक्षा के लिए इन्द्र हर बार जलवर्षा करते और वन को जलाने का अग्नि का मनोरथ अधूरा रह जाता। तब अग्नि ने कृष्ण-अर्जुन की सहायता मांगी और इन्द्र के विरोध करने पर उन सहित देवताओं से लड़ने के लिए कृष्ण को चक्र व कौमोद नामक गदा, अर्जुन को गाण्डीव धनुष, दो अक्षत तरकश तथा दिव्य कपिध्वज रथ भी दिए थे। तब दिव्यास्त्रों की सहायता से कृष्ण-अर्जुन ने विशाल खाण्डव वन को जला दिया। घटना के समय तक्षक वन में नहीं था, यद्यपि इन्द्र ने वन को बचाने में पूरी शक्ति झोकी मगर बचा नहीं पाया। परिणामस्वरूप भीषण दाह में वन के लाखों वृक्ष तो जले ही, उसमें निवास करने वाले असंख्य पशु-पक्षी, जीव-जंतु भी आग में जलकर खाक हो गए। केवल तक्षक पुत्र नाग अश्वेन, मयासुर और चार शारङ्ग पक्षियों को छोड़ कोई भी जीव और वनस्पति न बची।

खाण्डव दाह पर्व की कथा प्रमाण है कृष्ण-अर्जुन ने यह कार्य आवेश और लाभ के लिए किया था, जिसमें वन के साथ उसमें वसे मूक प्राणियों के हित की स्पष्ट उपेक्षा की गई थी। हम भी इसी तरह आज तक बगैर अन्य प्राणियों की चिंता किए जंगलों को नष्ट किए जा रहे हैं। यह भूलकर कि केवल वर्षा और वायु के कारक वन ही नहीं, इस धरती के प्राणीमात्र हमारे पर्यावरण का महत्वपूर्ण अंग है। सभी के साहचर्य में ही हमारा भी हित है। जब हम केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति पर केंद्रित रख वनों के विनाश का कार्य करते हैं, तो एक समय तो वह सही प्रतीत होता है, किंतु उसके प्रभाव आने वाली पीढ़ियों को भुगतना पड़ते हैं। प्रकृति और पेड़ों के नष्ट होने से न केवल अकाल और विषाक्त वायु के दुष्प्रभाव सामने आते हैं बल्कि हमारी भावी सन्तति को भी उसकी कीमत अन्ततः चुकाना पड़ती है।

जिसका संकेत आदिपर्व के आस्तिक पर्व की कथा में है, जिसमें खाण्डव वन को जलाने के प्रतिशोध में तक्षक नाग ने अर्जुन ने पोते परिक्षित को डंस कर मार डाला था। तब जब परिक्षित की हत्या का बदला लेने के लिए जनमेजय ने नागयज्ञ किया तो आस्तिक मुनि ने आकर उसे रुका दिया। उस यज्ञ में अनेक सर्प जलकर भस्म हो गए, लेकिन तक्षक बचा लिया गया। मानो आस्तिक मुनि ने प्रतीकाभ्यक्त रूप से जनमेजय के बढ़ाने हम सब मनुष्यों को सिखाया कि प्रतिशोध की प्रतिक्रिया प्रतिशोध होगी, तो यह सिलसिला कभी खत्म न होगा। वन को अकारण जलाने पर तक्षक ने परिक्षित के प्राण लिए, अब तक्षक के मारे जाने पर उसकी संतानें आगे भी प्रतिशोध लेती रहीं। इस धृणा का अंत तब तक नहीं है, जब तक धरती पर हम सब साथ रहने की आदत न डाल लें। मनुष्य बिना कारण वन न फूंके, प्राणियों की हिंसा न करें, नदियों को प्रदूषित न करें तो जल-थल-नभ के सारे जीव भी सुरक्षित रहेंगे और उनके साथ पर्यावरण भी शुभ बना रहेगा। सब मिलकर रहेंगे तो पर्यावरण ही नहीं, सबका जीवन भी मङ्गलमय होगा।

■ विवेक चौरसिया



२१म्पादकीय

गुलमोहर गर तुम्हारा नाम होता...

आपकी अपनी पत्रिका श्री माहेश्वरी टाइम्स ने १६ वें वसंत में प्रवेश किया है। १६ की उम्र पर शृंगार रस के कवियों की खूब कलम चली तो चिकित्सा, समाज और शिक्षण शास्त्रियों ने भी इस उम्र पर काफी कुछ शोध कर डाले। पर मैं बात करना चाहता हूं, १६ वीं शताब्दी में चर्चित हुए मेडागास्कर के गुलमोहर की। बगीचों, रोड साइड और कॉलोनियों में यह पेड़ गर्मियों में ऐसा खिलता है, मानो पेड़ पर अंगरे खिल उठे हों। भारत में यह मार्च-अप्रैल से जुलाई तक दहकता नजर आता है। इसका वैज्ञानिक नाम भले ही कुछ भी हो लेकिन क्रासिसियों द्वारा दिया गया नाम मुझे पसंद है- 'सर्वग का फूल'। भारत में इसका इतिहास कीरीब दो सौ वर्ष पुराना है। संस्कृत में इसका नाम 'राज-आभरण' है, जिसका अर्थ है राजसी आभूषणों से सजा हुआ वृक्ष। गुलमोहर के फूलों से भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा के मुकुट का शृंगार किया जाता है, इसलिए संस्कृत में इस वृक्ष को 'कृष्ण चूड' भी कहते हैं। फूलों से लदा होने से शहद की मक्खियां इस पर हमेशा मंडराती हैं। वसंत से गर्मी तक गुलमोहर अपने ऊपर लाल-नारंगी रंग के फूलों की चादर ओढ़े भीषण गर्मी को सहनकर देखने वालों की आँखों में ठंडक का अहसास देता है। इसलिए कवि अपनी प्रेयसी से भी यह कहने से नहीं चूका- 'गुलमोहर गर तुम्हारा नाम होता'।

श्री माहेश्वरी टाइम्स के संदर्भ में गुलमोहर की बात शायद आपको कुछ अजीब लगे लेकिन आज मैं इसे गुलमोहर की तरह ही देख रहा हूं। हमने हमेशा कोशिश की है कि पाठकों तक वह सब कुछ पहुंचे जो पाठक पढ़ना चाहते हैं। इस कड़ी में अपने आप को कई बार झुलसा देने से भी गुरेज नहीं किया। सत्य, निष्ठा और समर्पण की वेदी पर अपने आप को हमेशा कस्टी पर रखा कि पाठकों के साथ कोई अन्याय न हो। इस सफर में कहीं नाराजगी तो कहीं प्रताङ्ना का दंश भी झेलना पड़ा लेकिन सुकून यह है कि पाठकों ने हमेशा हमारा साथ दिया। यह सबसे बड़ा संबल है, सच कहने का, ताकत है- सच के साथ रहने की। हमने कोशिश की गुलमोहर की तरह तमाम अपनी शक्ति निचौड़ कर पाठकों को संतुष्ट किया जाए। इस कड़ी में हमारे विज्ञापनदाता और आशीर्वाददाता भी हैं जिन्होंने हमेशा साथ देकर आगे बढ़ने की ललक बनाए रखी। यहीं कारण है कि श्री माहेश्वरी टाइम्स समाज की सिरमौर पत्रिका है, पाठकों की चहेती है। हमारी कोशिश है, पाठकों के साथ हमारा यह रिश्ता सदैव इसी तरह बना रहे। पाठकों के भीतर की दहक हम अपने भीतर महसूस करते रहें। कितनी भी आंच आए लेकिन पाठकों के सुकून के लिए श्री माहेश्वरी टाइम्स का हर पत्रा खिला हुआ गुलमोहर बना रहे।

यह अंक खास कर पर्यावरण को समर्पित है, या यूं कहें पर्यावरण को समर्पित समाजजनों को समर्पित है। इस कड़ी में पहला नाम जयपुर के नवल डागा का ही लेना चाहूंगा जिनकी जिंदगी पर्यावरण के बिना कुछ भी नहीं है। पर्यावरण संरक्षण उनका जुनून है। किस हद तक जाकर वे अपने इस जुनून को पूरी जिंदगी का फलसफा बना पाए, यह आप इस अंक में पढ़ेंगे। उज्जैन के श्याम माहेश्वरी ऐसे पर्यावरण प्रेमी हैं जिन्होंने 'एक परिवार एक सुरक्षित पौधा' मुहिम चला कर लाखों पौधे लगवाए, इनमें नीम सबसे ज्यादा है। २२ साल से चल रहा उनका अभियान ६७ की उम्र में भी जारी है। ऐसे पर्यावरण प्रेमियों से ही यह धरती हरियाली है। हमारे समाज में ऐसे भी व्यक्तित्व हैं जिनसे समाज हरियाला नजर आता है। इनमें पदाश्री बंशीलाल राठी और रामकुमार भूतड़ा का उल्लेख उनको जन्मोत्सव की बधाई के रूप में करना सार्थक है। ऐसे समाजसेवियों से ही हमें प्रेरणा मिलती है समाज के लिए कुछ करने की। उन्होंने तमाम उम्र समाज को आगे ले जाने, हराभरा बनाने में अपनी ताकत और सामर्थ्य लगाने में कभी कसर नहीं रखी। तमाम संघर्षों के बाद भी उन्होंने समाज को आगे बढ़ाया।

पूर्वी मध्यप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन ने लॉकडाउन की अवधि में ५ हजार पौधों के रोपण का लक्ष्य रखा था लेकिन ४ हजार पौधों का रोपण कर सच्चे अर्थों में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी निभाइ। इस उपलब्धि के लिए संगठन बधाई का पात्र है। इसी अंक में हमने कोशिश की है मुंबई जैसे महानगर में निवास कर रहे कारेंट क्षेत्र में सेवारत व्यंकटेश माहेश्वरी से भी आपको परिचित करवाने की जिन्होंने विश्व की सबसे बड़ी पर्वत चोटी एवरेस्ट के प्रथम माहेश्वरी आरोही बनने का गौरव प्राप्त किया है।

अब बात यह भी करना चाहता हूं जो समाज में भविष्य के गुलमोहर बनने वाले विद्यार्थी हैं। श्री माहेश्वरी टाइम्स का अगला अंक प्रतिभा विशेषांक के रूप में आपके पास पहुंचेगा। बोर्ड परीक्षाओं में ९० फीसदी से ज्यादा अंक लाने वाले विद्यार्थियों को श्री माहेश्वरी टाइम्स की ओर से सम्मानित किया जाएगा। ये वे प्रतिभाएं हैं, जो भावी माहेश्वरी समाज की तस्वीर बनेगी। इन्होंने पढ़ाई की तपन सह कर अच्छे रिजल्ट के फूल खिलाए हैं। ये ऐसे ही समाज में महकते, गमकते रहें, यह हमारी शुभकामनाएं भी हैं। समाजजनों से आग्रह है कि यदि आपके घर, परिवार, आसपास ऐसी प्रतिभाएं हैं, तो उनकी जानकारी श्री माहेश्वरी टाइम्स को जरूर पहुंचाएं। इस अंक में सभी स्थायी स्तंभ, रोचक व ज्ञानवर्द्धक आलेख और वह सब कुछ सहेजने की कोशिश की है जो आप पढ़ना चाहते हैं। अपनी प्रतिक्रिया से अवगत करना न भूलें। जय महेश।

पुष्कर बाहेती

सम्पादक





अतिथि सम्पादकीय

३ जनवरी १९६५ को ग्राम सिंहस्थल, जिला-बीकानेर, (राजस्थान) में जन्मे व वर्तमान में कोलकाता में निवासरत-गौंपठ श्री धनश्याम करनानी देश के एक सफल उद्यमी के रूप में तो प्रतिष्ठित हैं ही, साथ ही आपने युवा समाज सेवी के रूप में भी अपनी एक पहचान बनाई है। मात्र १५ वर्ष की आयु में प्रारम्भ सेवा यात्रा में आप वर्तमान में माहेश्वरी समाज सहित ५० से ज्यादा सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। माहेश्वरी महासभा में २५वें सत्र में प्रोफेशनल सेल सदस्य, २६ वें सत्र में महासभा के संयुक्त मंत्री, २७ वें सत्र में कोटारी बंधु शौर्य स्मृति ट्रस्ट प्रबंध न्यासी, श्री आदित्य विक्रम बिड़ला मेमोरियल व्यापार सहयोग केंद्र ट्रस्टी सदस्य, कोलकाता प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के २४वें सत्र में कोषाध्यक्ष रहे हैं। पूर्वांचल में बनने वाले माहेश्वरी भवनों में अर्थिक सहयोग प्रदान करवाने के साथ पिछले १५ साल से श्री माहेश्वरी टाइम्स के प्रारम्भदाता, वर्तमान में माहेश्वरी कलब (कोलकाता) के सभापति व अन्य रूप में भी सेवा दे रहे हैं। आप क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बंगाल के आजीवन मेम्बर व अन्य सामाजिक संस्थाओं में जोन चेयरमेन लायंस क्लब डिस्ट्रीक्ट ३२२बी२ तथा अध्यक्ष लायंस क्लब ऑफ वीआईपी रहे हैं। पिछले २० सालों से कपिलमुनि चैरिटेबल ट्रस्ट में आजीवन ट्रस्टी हैं। गंगा सागर में वर्षव्यापी निःशुल्क भोजन एवं आवास की व्यवस्था, बाबा बासुकीनाथ सेवा ट्रस्ट में आजीवन ट्रस्टी, कोलकाता पिंजरापोल सोसायटी में कार्यसमिति सदस्य एवं कैप प्रभारी व आदि कई संस्थाओं में महत्वपूर्ण पद के साथ संबद्ध हैं। व्यावसायिक तौर पर आप कर्नानिका फाईनेंशियल सर्विसेस प्रायवेट लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं जो कि नॉन बैंकिंग फायरेंस कम्पनी हैं। साथ ही आप रियल एस्टेट, भवन निर्माण तथा शेयर व निवेश का कार्य भी करते हैं।



महामारी के दौर में समाजहित में होने निर्णय

कोरोना रूपी वैश्विक आपदा से सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि सारा विश्व आतंकित है। मरीजों के संक्रमण के आंकड़े निरंतर बढ़ते जा रहे हैं मगर संतोष की बात यह है कि मृत्यु दर काफी कम है और मरीजों के स्वस्थ होने के आंकड़े भी उत्साहवर्धक हैं। गत कुछ महीनों में हमारे माहेश्वरी समाज के कई परिवार भी इस आपदा की चपेट में आए हैं। वैसे तो हमारा समाज देश भर में अर्थिक रूप से संपन्न समाजों की श्रेणी में आता है मगर फिर भी काफी समाज बंधु मध्यम अथवा निम्न आय वर्ग में से हैं। ऐसे कई परिवार लग्जे लॉकडाउन व उसके पश्चात आर्थिक गिरावट में अपने व्यवसाय में हो रही भारी हानि से गुजर रहे हैं, तो कई नौकरीपेशा अपनी नौकरी छूटने से परेशान हैं। अतः इन परिवारों के लिये अपने परिवार की अर्थव्यवस्था को सुचारू बनाये रखना भी किसी चुनौती से कम नहीं है।

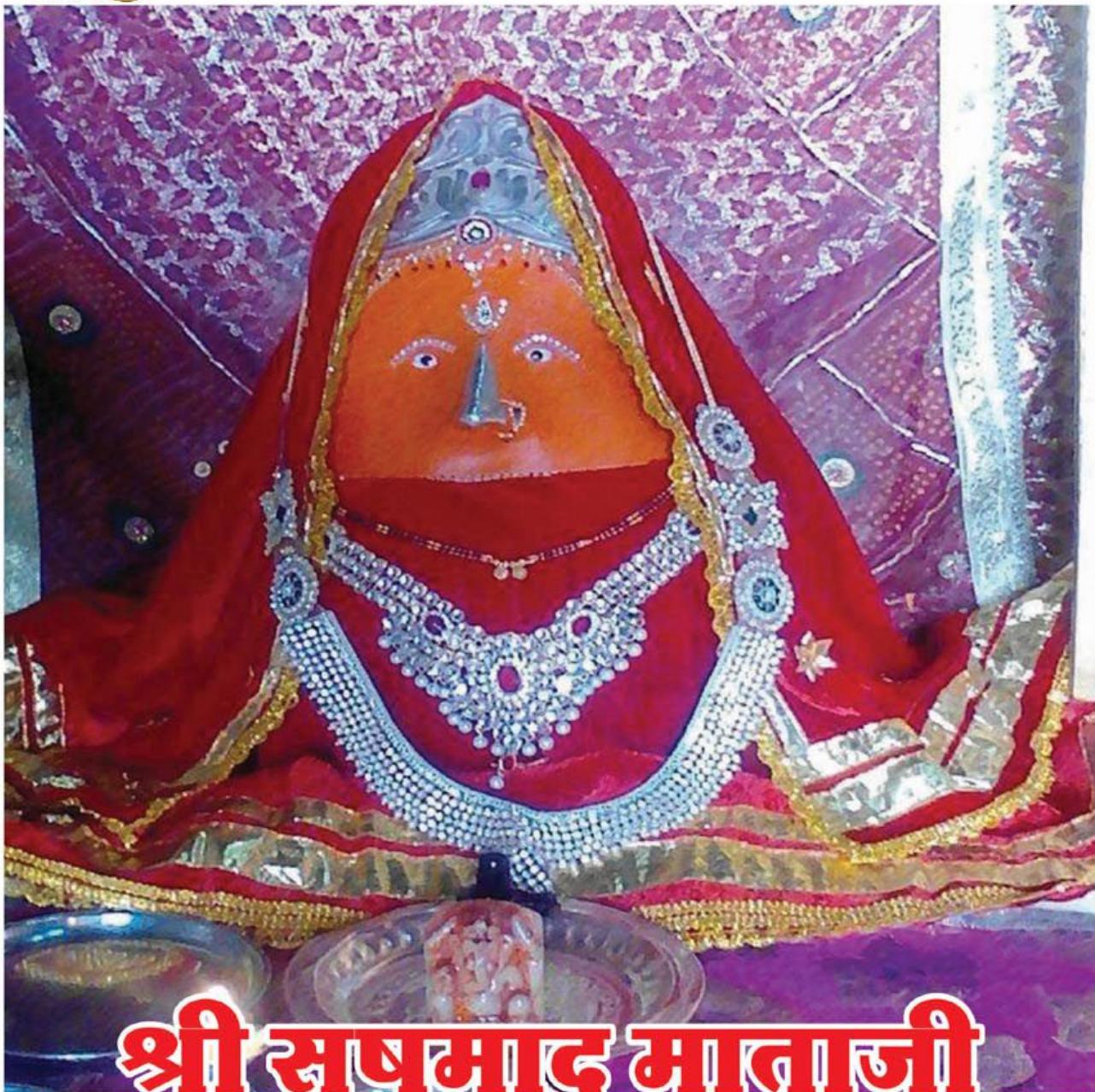
ऐसे में मैं समाज की संस्थाओं के उच्च पदों पर आसीन समाज बंधुओं और समाज के उच्च आय वर्ग के भाइयों का ध्यान कुछ मुद्दों की तरफ आकर्षित करना चाहूँगा। माहेश्वरी समाज द्वारा संचालित विभिन्न ट्रस्टों द्वारा आवंटित व्यापारिक एवं शैक्षणिक ऋण का चालू वित्तीय वर्ष का ब्याज माफ किया जाय। एक ऐसी व्यवस्था भी हो, जिससे समाज के सभी जरूरतमंद परिवारों को कम से कम आगामी दिसंबर मास तक राशन एवं अतिआवश्यक दवाओं की अबाध आपूर्ति हो सके। यह विपदा की घड़ी है, अतः कोरोना महामारी की वजह से समाज के जिन जरूरतमंद परिवारों को जन हानि एवं अर्थ हानि हुई है, उन परिवारों के लिए आर्थिक सहयोग की व्यवस्था हो। आखिरी मगर सबसे महत्वपूर्ण सुझाव ही नहीं अपितु अनुरोध है कि इस महामारी के दौर में हमारे समाज में विगत डेढ़-दो महीनों में काफी शादियाँ एवं अन्य आयोजन सरकारी प्रतिबन्धों एवं संस्थाओं के पदाधिकारियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं की सक्रियता के कारण सादगी पूर्ण माहौल में संपन्न हुए, जिन्हे समाज के सभी वर्गों द्वारा काफी सराहना प्रदान की गई। समाज की सर्वोच्च संस्थाओं के उच्च पदस्थ समाज बंधुओं से आग्रह है कि ऐसी कोई नियमावली बनायें जिससे इस महामारी से छुटकारा मिलने के पश्चात् भी सभी समाज बंधु स्वेच्छा से शादियों और अन्य आयोजनों में दिखावे की प्रवृत्ति और उससे पैदा हो रही होड़ को त्याग कर सादगी को अपनावें। मध्यम और निम्न मध्यम वर्ग को इससे बड़ी राहत मिलेगी।

मेरे विचार से उपरोक्त बातें यदि अमल में लाई जायें तो समाज बंधुओं को इस महामारी से लड़ने का संबल प्राप्त होगा और समाज की कीर्ति व यश भविष्य में और भी उज्ज्वल होंगे। मैं अपने क्षेत्र में पिछले ४ महीने से तन-मन-धन से सेवा कार्य में लगा हुआ हूं। खास करके रोग प्रतिरोधक क्षमता अर्थात इम्युनिटी बढ़ाने की आसेनिकम एलबम ३० होम्योपैथिक दवाई निःशुल्क घर-घर तक पहुंचा कर आया हूं एवं देश के अन्य क्षेत्रों में लोगों के साथ इसको भिजवाई है। समय-समय पर हमारी कार्य शैली समाज के लोगों तक पहुंचाने के लिए मैं माहेश्वरी टाईम्स का धन्यवाद एवं आभार प्रकट करता हूं। अंत में समाज के वरिष्ठ समाजसेवी पदमश्री बंशीलाल राठी व श्री रामकुमार भूतड़ा को जन्म दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूं, जिनकी सेवा भावना सदैव ही समाजसेवियों को मार्गदर्शित करती रही है। मैं भगवान महेश से आप दोनों महानुभावों के दीर्घ जीवन की कामना करता हूं।

जय महेश!

धनश्याम करनानी

अतिथि सम्पादक



श्री सुषमाद माताजी

□ टीम SMT □

राजस्थान के कुचेरा ग्राम, जिला नागौर में श्री सुषमाद माताजी माहेश्वरी समाज की काबरा खांप की कुलदेवी विराजित हैं। इसके साथ ही इन्हें अन्य समाज मांडया, पालडया, अठारया, भगत, सिंगी, धौल व कोठारी भी पूजते हैं।

माताजी का मंदिर राजस्थान के नागौर जिले के कुचेरा ग्राम में स्थित है। यह गाँव पुष्कर व मेड़ता के बीच आता है। यहाँ यह मंदिर मेड़ता मार्ग पर गणपतसिंह, मदनसिंह सिसौदिया के खेत में स्थित है। स्थानीय स्तर पर माताजी की चमत्कारिक ख्याति है। नवरात्रि जैसे विशेष आयोजनों पर यहाँ उत्सव होता है।

कहाँ ठहरें

ग्रामीण क्षेत्र होने से यहाँ तो ठहरने के लिए कोई अच्छी व्यवस्था नहीं है। आवश्यक होने पर स्थानीय लोगों से सम्पर्क कर व्यवस्था जुटाई जा सकती है। समीपस्थ शहर मेड़ता व पुष्कर में ठहरने की व्यवस्था है। यहाँ लॉज आदि उपलब्ध हैं।

कैसे पहुँचें

श्री सुषमाद माताजी का मंदिर नागौर जिले के कुचेरा ग्राम में बस स्टैंड से लगभग डेढ़ किमी दूर खेत में स्थित है। पुष्कर व मेड़ता से सड़क मार्ग से ग्राम कुचेरा पहुँचा जा सकता है।



अपनों के लिए-अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

ज्ञान


आपकी अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स ने पूर्ण किए 15 वर्ष

आदरणीय पाठकों

आपकी अपनी पत्रिका श्री माहेश्वरी टाईम्स ने अब अपनी स्थापना के 15 वर्ष पूरे कर 16 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। आपको बधाइयाँ! समाज के इस सृजनात्मक-सावन की मङ्गलकामनाएं!

श्री माहेश्वरी टाईम्स डेढ़ दशक पहले देखे गए एक मधुर स्वप्न का साकार स्वरूप है, जो केवल और केवल आपके बूते पूरा हो सका है। इन बीते वर्षों में आपने अपने प्यार और आत्मीयता से सींचकर एक पल्लवित, पुष्पित, सुगन्धित और सुदर्शन वृक्ष ही नहीं बनाया अपितु प्रेरक व पल्लवित भी किया। तभी तो आज यह समाज में सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली प्रिया पत्रिका बन सकी। इस सफर में न केवल पाठक अपितु लेखकों और विज्ञापनदाताओं का योगदान भी महत्वपूर्ण है। इसे आप तक पहुँचाने में हमारा उद्यम और श्रम तो केवल 'समाज-गङ्गा' की उपासना-सा, निमित्त मात्र है।

महत्वपूर्ण है कि श्री माहेश्वरी टाईम्स ने इस यात्रा में समय के अनुशासन के साथ नई तकनीक का भी सदृप्योग किया है। श्री माहेश्वरी टाईम्स की अपनी वेबसाइट www.srimaheshwaritimes.com है, जिसमें समाज की नई पीढ़ी को सामाजिक गतिविधियों से जोड़ने का प्रयास जारी है।

SMT VIDEO NEWS के अलावा समाज की ज्वलंत समस्या विवाह संबंध बनाने में सहायक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर श्री माहेश्वरी मेलापक का प्रकाशन अनवरत किया जा रहा है, जिसका फायदा समाज के कई परिवारों को मिला है। श्री माहेश्वरी टाईम्स ने हरदम उन मुद्दों को उठाया जिससे समाज को नई दिशा मिली। लोहार्गल तीर्थ के लिए जागरण अभियान, जरूरतमंद समाजजनों, विद्यार्थियों, उद्यमियों की मदद के लिए हेल्पलाइन, हर साल समाज की प्रतिभाओं का सम्मान, माहेश्वरी ऑफ द ईयर, महिलाओं की उद्यमशीलता और सामाजिक रचनात्मकता को समाने लाने के लिए महिला विशेषांक, वरिष्ठ लोगों के लिए वरिष्ठजन विशेषांक सालाना अंकों में खास जगह रखते हैं। सामाजिक संगठनों की गतिविधियों की हमने तटस्थ भाव से पाठकों तक पहुँचाया, ताकि समाजजन स्वयं फैसला कर सकें।

विश्वास है आगे भी आपका स्नेह और साथ इसी तरह बना रहेगा। पत्रिका को निरन्तर बेहतर बनाने के लिए सदा की भाँति सदैव आपके बहुमूल्य सुझाव, मार्गदर्शन की हमें प्रतीक्षा रहेगी। पुनः आप सभी को बधाई।

SMT NEWS
VIDEO NEWS BULLETIN

@ www.srimaheshwaritimes.com

आपका अपना
पुष्कर बाहेती
सम्पादक



HEMA
FOUNDATION

Each Value
3 Weeks
Every Saturday
12 Activities with
awards.

HEM-Virtues

A Learning Revolution

eValue Education - Web Portal

9 Values
27 Weeks
Course begins
from 1st August
3 Webinars
for each Value.

Unique Features

9 Movies, 9 Values



Abhay
(Fearless)

Webinars
Wednesday at 5 pm



Jigyasa
(Attitude)

Webinars
05 Aug, 12 Aug, 19 Aug



Name Plate
(Nature's Love)

Webinars
26 Aug, 02 Sept, 09 Sept

Activities
Saturday 01 Aug, 08 Aug, 15 Aug



Dagdu
(Confidence)

Webinars
Wednesday at 5 pm



Aashaye
(Hope)

Webinars
07 Oct, 14 Oct, 21 Oct



Swachhata
(Cleanliness)

Webinars
28 Oct, 04 Nov, 11 Nov

Activities
Saturday 03 Oct, 10 Oct, 17 Oct



Sanskriti
(Cultural Values)

Webinars
Wednesday at 5 pm



Paropkar
(Kindness)

Webinars
09 Dec, 16 Dec, 23 Dec



Atthani ki khushi
(Inner harmony)

Webinars
30 Dec, 06 Jan, 13 Jan

Activities
Saturday 05 Dec, 12 Dec, 19 Dec

Value integrated Academic Program



Accelerated Learning Program (ALP):
By Dr. Nagpal Singh



Psychological Expression:
By Dr. Chinu Agarwal



Scientific Heritage and Culture:
By Manoj Joshi



Integrated learning with Subject Teaching
By Dr. Vijayam Ravi



Let every Lesson be the Mission
By Dr. Sanjay Malpani By Anita Maheshwari



Healing from Real Stories:
By Anita Maheshwari



Leaders in Action:
By Dr. Narayan B. Iyer



Learn Everything in Technology:
By Vidushi Daga



Opportunities Unlimited:
By Mr. Rajeev Bhargava



Ved aur Vigyan:
By Vedacharya Balkrishna Dave



Activities from Hem-Disha Self Affirmation and Gratitude
By Hetal Desai By Mahendra Kabra



Register now : <http://www.hemvirtues.com/>



हेमा फाउंडेशन ने प्रारंभ की नैतिक मूल्यों की शैक्षणिक क्रांति

शैक्षणिक क्रांति के लिए ई-पोर्टल 'हेम वर्च्युज' का 1 अगस्त से हुआ शुभारंभ, भारतीय नैतिक मूल्यों का पढ़ाएगा पाठ

मुंबई। समाजसेवा से शिक्षा के क्षेत्र में अपना विशिष्ट योगदान दे रही उद्योग समूह आर.आर. कॉबेल की सेवा संस्था हेमा फाउंडेशन द्वारा 1 अगस्त से नैतिक मूल्यों के क्षेत्र में शैक्षणिक क्रांति के आगाज के रूप में अपने ई-पोर्टल 'हेम वर्च्युज' का शुभारंभ किया गया। यह ई-पोर्टल लघु फिल्मों तथा अन्य गतिविधियों द्वारा 9 जीवन मूल्यों को विद्यार्थियों तथा विद्यालयों तक पहुंचा कर मानवता की सेवा करेगा।



उद्योग समूह आर.आर. कॉबेल के एकजीक्यूटिव डायरेक्टर व हेमा फाउंडेशन के मैनेजिंग ट्रस्टी महेंद्र काबरा ने बताया कि समाज में नैतिक मूल्यों को नई दिशा देने के लिए फाउंडेशन विगत पांच वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत है। संस्था द्वारा कक्षा 1 से लेकर यूनिवर्सिटी स्तर तक नैतिक मूल्यों पर आधारित शैक्षणिक पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक तैयार व प्रकाशित भी कर लिया गया है। फाउंडेशन की ट्रस्टी व क्रिएटिव डायरेक्टर अनिता माहेश्वरी ने बताया कि इसके साथ ही केंद्र व राज्य स्तरीय शैक्षिक निकाय जैसे एनसीएफ, एनसीईआरटी, सीबीएसई, स्टेट बोर्ड आदि के दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए कक्षा 1 से कक्षा 8 तक के लिए प्रति वर्ष 6 जीवन मूल्यों सहित कुल 48 विषयों पर शिक्षक मार्गदर्शिका 'हेम दिशा' तथा विद्यार्थियों के लिए गतिविधि आधारित अभ्यास पुस्तिका 'हेम फॉर्मशन' का प्रकाशन भी किया जा चुका है।

विशेषज्ञों से नैतिक मूल्यों का पाठ

फाउंडेशन के एसोसिएट डॉयरेक्टर अशोक माहेश्वरी ने बताया कि भारतीय जीवन मूल्य देश ही नहीं बल्कि समूचे विश्व तक पहुंचे, इस उद्देश्य से 25 जून को हेमा फाउंडेशन द्वारा एक क्रांतिकारी निर्णय लेते हुए नैतिक मूल्यों पर आधारित शैक्षणिक वेब पोर्टल 'हेम वर्च्युज' लॉन्च किया गया, जिसके माध्यम से वर्तमान में 9 जीवन मूल्यों पर आधारित लघु फिल्मों तथा गतिविधियों को विद्यार्थियों तथा विद्यालयों तक पहुंचाया जा रहा है। एसोसिएट डायरेक्टर प्रकाश जाखोटिया ने बताया कि इन पाठ्यक्रम में निर्भयता (अभय), व्यवहार (जिज्ञासा), प्रकृति प्रेम (नेम प्लेट), आत्मविश्वास (दगड़), आशाएं (आशा), स्वच्छता (स्वच्छता), सांस्कृतिक प्रेम (संस्कृति), दयालुता (परोपकार), आंतरिक समरसता (अठनी की

खुशी) जैसे गुणों को शामिल किया गया है। हेमा फाउंडेशन के एकेडमिक डॉयरेक्टर डॉ. नागपाल सिंह ने बताया कि इस पाठ्यक्रम को 12 शिक्षाविद, मनोवैज्ञानिक व अन्य विशेषज्ञ बेहद प्रभावशाली व तार्किक ढंग से पेश करेंगे, जिससे छात्र सरलतापूर्वक निरंतर आत्मसात कर सकें।

अत्यंत प्रभावशाली रहेगा पाठ्यक्रम

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डॉक्टर चीनू अग्रवाल ने कहा कि इस पाठ्यक्रम में मुख्य रूप से पठन सामग्री, मल्टीपल च्वॉइस क्वेश्चन (बहुविकल्पी प्रश्न), प्रैक्टिकल (प्रयोगात्मक), टास्क, रिजल्ट, रिसर्च रिपोर्ट्स, ई-सर्टिफिकेट, पुरस्कार व प्रोत्साहन आदि छात्रों, शिक्षकों व संस्थाओं के लिए हैं। इसके अलावा अभिभावक व शिक्षकों के लिए 15 जुलाई से हर बुधवार को एक वेबीनार भी आयोजित किया जा रहा है। वहीं छात्रों का शैक्षणिक सत्र एक अगस्त से शुरू हो रहा है। इसमें हर विषय से जुड़ी अनेक गतिविधियां हर शनिवार को करायी जाएंगी। यह कोर्स 30 जनवरी 2021 को पूर्ण होगा। प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता मनोज जोशी ने विशेष आग्रह किया कि नैतिक मूल्यों को वैश्विक स्तर पर वापस जगह दिलाने के प्रयास में हेमा फाउंडेशन विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं, सामाजिक संगठनों आदि का सहयोग चाहता है। फाउंडेशन के एसोसिएट डायरेक्टर तथा कार्यक्रम संयोजक संजय उपाध्याय ने बताया कि इसके लिए पोर्टल www.hemvirtues.com पर अपना पंजीकरण करें। एक क्लिक पर छात्रों की लिस्ट एक्सल शीट में दर्ज हो जाएगी। उन्होंने विनम्र अनुरोध किया कि सदगुणों व नैतिक मूल्यों को सीखने के लिए इस क्रांति का बढ़चढ़ कर हिस्सा बनें।



पूर्वी मध्यप्रदेश महिला संगठन ने कायम की मिसाल

5 हजार पौधारोपण का लिया था संकल्प, कर गया 8 हजार पार

भोपाल। पूर्वी मध्यप्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन ने पौधारोपण के क्षेत्र में एक मिसाल कायम की है। अपने “प्रकृति के रूप में ईश्वर का समान” अभियान के अन्तर्गत संगठन द्वारा 5 हजार पौधों के रोपण का लक्ष्य रखा



अनुपिता जावंधिया
प्रदेश अध्यक्ष

गया था लेकिन सदस्याओं के उत्साह ने इस लक्ष्य को पीछे छोड़ते हुए 8 हजार पौधों के रोपण का नया कीर्तिमान स्थापित करवा दिया।

पूर्वी मध्यप्रदेश प्रादेशिक महिला संगठन अध्यक्ष अनिता जावंधिया ने बताया कि वृक्षों से औषधि मिलती है, और इससे ही पर्यावरण भी खिलखिला उठता है, जिससे हमारा जीवन भी खुशहाल होता है। अतः पौधारोपण द्वारा “प्रकृति के रूप में ईश्वर का समान” के हमारे लक्ष्य के अन्तर्गत प्रदेश में 5 हजार पौधों के रोपण का लक्ष्य रखा गया था। सम्पूर्ण प्रदेश में संगठन की सदस्याओं की संख्या 2443 है। इस अभियान में प्रत्येक घर से दो पौधे लगाने का संकल्प लिया गया था लेकिन सदस्याओं ने वह उत्साह दिखाया कि पौधारोपण की संख्या 8 हजार पौधों को पार कर गई। अब संगठन इनकी बड़े होने तक पूर्ण देखरेख भी करेगा।

पूर्ण उत्साह से सभी ने किया प्रचार-प्रसार

श्रीमती जावंधिया ने बताया कि जब यह संकल्प लिया गया था, तब कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन का दौर चल रहा था। ऐसे में 5000 पौधों के रोपण के लक्ष्य को प्राप्त करना भी अत्यंत कठिन कार्य था। इस स्थिति में संगठन की एकता ने काम किया। प्रदेश के साथ ही 4 संभाग, 22 जिला व 78 स्थानीय संगठनों ने मिलजुलकर इस पौधारोपण अभियान का व्यापक प्रचार-प्रसार किया। इसके लिये लॉकडाउन अवधि में यथासम्भव समस्त संचार माध्यमों का उपयोग किया गया। समस्त कार्यकर्ताओं ने भी पूर्ण जिम्मेदारी के साथ न सिर्फ पौधारोपण अपितु इस अभियान के व्यापक प्रचार-प्रसार में भी सहयोग दिया। इसमें सचिव रंजना बाहेती, कार्य समिति सदस्या प्रतिभा झंवर आदि के साथ ही समस्त संभाग, जिला व स्थानीय संगठन की पदाधिकारी व सदस्याओं ने पूर्ण सहयोग दिया और अभियान को घर-घर तथा गाँव-गाँव तक पहुँचा दिया।

अब लिया गौ संरक्षण का संकल्प

संगठन ने अब गांवों को संगठन से जोड़ने के साथ ही गौ संरक्षण का संकल्प लिया है। इसके लिये गाय के दूध से बने उत्पादों का ही उपयोग किया जायेगा। इसमें भविष्य में गाय के दूध से निर्मित उत्पादों को बनाना भी योजना में शामिल है। इसके साथ ही गाय के गोबर से निर्मित वस्तुओं के उत्पादन तथा उनके उपयोग का संकल्प भी लिया गया। इनके पीछे संगठन का लक्ष्य यही है कि गाय का अधिकाधिक महत्व बढ़े जिससे गौ पालन व संरक्षण की वृद्धि हो एवं इसके साथ ही पर्यावरण संरक्षण भी हो सके।



रंजना बाहेती, प्रदेश सचिव



रेनू झंवर कोषाध्यक्ष



प्रतिभा झंवर कार्यसमिति सदस्य



राजश्री राठी, प्रकल्प प्रमुख



तर्मिला सादानी, संभागीय उपाध्यक्ष



सुनीता झंवर



कविता चांडक



रेखा मोहता



अनिता राठी



निश्ला राठी



बीणा राठी, खालियर



शिखा जावंधिया



संगीता बजाज



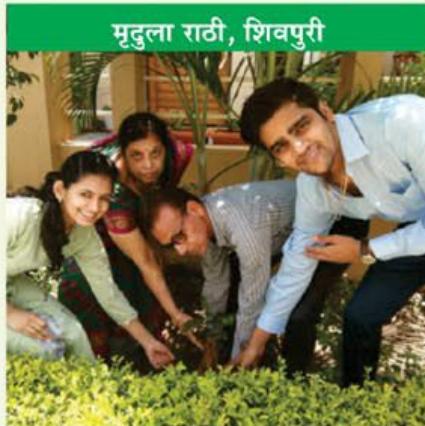
सुनिता जावंधिया



संतोष गगरानी भोपाल



डॉ. मीना मूंद्रा, आरती परवाल

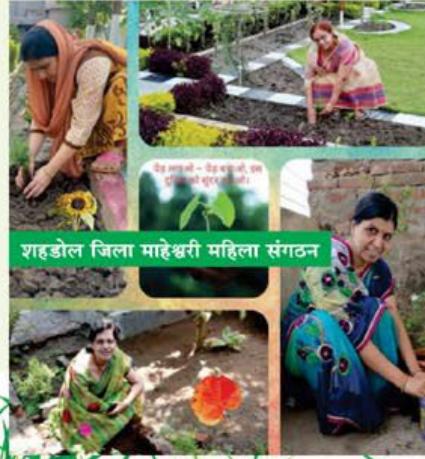


मृदुला राठी, शिवपुरी



सुरेखा बिसानी

जया मजेजी



शहडोल जिला माहेश्वरी महिला संगठन



सागर जिला माहेश्वरी महिला मंडल



डॉ. सुनिता नागौरी एवं पुष्पा नागौरी



फलदार एवं छायादार वृक्षों का रोपण



रायपुर। माहेश्वरी सभा रायपुर द्वारा माहेश्वरी भवन डुंडा में वृहद वृक्षारोपण किया गया। इसमें 100 प्रकार के वृक्ष लगाए गए एवं आगे के लिए भी इनकी देख रेख की जिम्मेदारी समाजजनों द्वारा ली गयी। माहेश्वरी भवन के कार्यकारी अध्यक्ष अजय सारडा ने बताया कि इसमें नीम, आम, चम्पा, बेल, आंवला, जाम, सोनपत्ती, जामुन आदि के फलदार एवं छायादार वृक्षों का समाजजनों द्वारा रोपण किया गया। इस अवसर पर सीएसपी खमतराई अभिषेक माहेश्वरी विशेष रूप से उपस्थित रहे। माहेश्वरी सभा के निवृत्तमान अध्यक्ष विजय दम्मानी, अध्यक्ष सम्पत काबरा, सचिव कमल राठी, राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री नारायण राठी, महेश सभा के अध्यक्ष महेश बिड़ला, जिला माहेश्वरी सभा के सचिव सुरेश मोहता, गोपाललाल राठी आदि उपस्थित थे।

कोरोना के प्रति किया जागरूक



निजामाबाद। जिला माहेश्वरी युवा संगठन के तत्वावधान में समाज में कोरोना वायरस के प्रति जागरूकता लाने के लिए ऑनलाइन वेबीनार का आयोजन किया गया। वेबीनार के संयोजक गोविंद झंवर ने बताया कि श्रोता जूम एवं फेसबुक के माध्यम से इस वेबीनार को देख रहे थे। निजामाबाद जिला माहेश्वरी युवा संगठन के अध्यक्ष श्रीकांत झंवर ने वेबीनार के वक्ता डॉ. सुरेश जाजू का स्वागत किया एवं उनका परिचय दिया। डॉक्टर जाजू ने कोरोना वायरस से बचाव के लिए हमें क्या करना चाहिए उसकी जानकारी सरल भाषा में दी। वेबीनार के अंत में निजामाबाद जिला माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा समाज जन को कोरोना वायरस से जागरूक करने हेतु पोस्टर का विमोचन डॉ जाजू, युवा संगठन के अध्यक्ष श्री झंवर, मंत्री अनुराग भांगड़िया एवं तेलंगाना आंश्र प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन के कोषाध्यक्ष मधुसूदन मालू के हाथों हुआ।

पर्यावरण दिवस पर प्रतियोगिता का आयोजन

हावड़ा। स्थानीय माहेश्वरी युवा मंच द्वारा पर्यावरण दिवस पर प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें प्रथम पुरस्कार पंकज राठी, द्वितीय केशव बाहेती तथा तृतीय पुरस्कार रेखा गढ़ाणी को प्राप्त हुआ। उक्त जानकारी पंकज राठी ने दी।



डॉ. गांधी को प्रथम स्थान

भानुप्रतापपुर

। समाज सदस्य जी बनलाल गांधी के सुपुत्र डॉ. पंकज गांधी ने



लगातार दूसरी

बार वित्तीय वर्ष 2019-20 में स्टार हैल्ट्य इंश्योरेंस में पूरे छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उन्होंने वित्तीय वर्ष 2018-19 में भी प्रथम स्थान प्राप्त कर समाज को भी गौरवान्वित किया। इस उपलब्धि के लिये डॉ. गांधी को स्विटजरलैंड यात्रा के लिए भी चयनित किया गया है।

सात दिवसीय महेश नवमी उत्सव



भोपाल। माहेश्वरी समाज भोपाल दक्षिणांचल एवं महिला संगठन दक्षिणांचल दोनों संगठनों ने कदम से कदम मिलाकर महेश नवमी कार्यक्रम में एक नया कीर्तिमान बनाया। महेश नवमी कार्यक्रम के अंतर्गत दो बड़े-बड़े वेबनार आयोजित किए। इसके साथ ही ऑनलाइन फैसी ड्रेस, फैशन शो, निर्बंध, रंगोली, नोकझोंक प्रतियोगिता एवं प्रतिदिन 7 दिन तक रोज रात को ऑनलाइन पारिवारिक गेम का आयोजन किया गया। जूम एप पर सांस्कृतिक संध्या का आयोजन भी किया, जिसमें मुख्य अतिथि प्रदेश अध्यक्ष मदन गोपाल जेठा, महिला संगठन प्रदेश अध्यक्षा अनीता जावंदिया, विशेष अतिथि प्रदेश सचिव दीपक चांडक एवं रंजना बाहती थे। अतिथियों का स्वागत अध्यक्ष सुरेश लाहोटी व अध्यक्ष मनीषा लाढा द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन सचिव भूपेश राठी ने किया एवं आभार सचिव आशा पलोड ने माना।

स्कूल को भेंट की सेनीटाइजर मशीनें

पुणे। सांगवी परिसर महेश मंडल (पुणे) द्वारा स्थानीय स्वामी विवेकानंद विद्या मंदिर स्कूल को दो संपर्क रहित स्वचालित हैंड सेनेटाइजर मशीन भेंट की गई। मंडल अध्यक्ष सतीश लोहिया, नीलेश अटल, विवेक झंवर, पंकज टावरी आदि ने मशीनों को स्कूल के पर्यवेक्षक विश्वास जाधव और उनके साथी शिक्षकों को सौंपा।



कोरोना महामारी काल में विवाह

वरंगल। स्व.श्रीनिवास जाजू के सुपुत्र संतोष जाजू के पुत्र का विवाह गदग निवासी स्व.श्री सत्यनारायण पिंगलिया के पुत्र रामेश्वर की सुपुत्री सौम्या के साथ 28 नवम्बर को बहुत ही सादगी से संपन्न हुआ। लड़की पक्ष



से 15 एवं लड़के पक्ष के 25 सदस्यों ने मिलकर वरंगल के नूतन भवन प्रगतिशील मारवाड़ी एवं माहेश्वरी चैरिटेबल ट्रस्ट भवन में 1 दिन में सभी रीति रिवाज पूर्ण किये।

बेमेतरा (छत्तीसगढ़)। समाज सदस्य मोतीलाल गिलड़ा बेमेतरा के सुपुत्र चि.अमित का विवाह, सोनम सुपुत्री मगराज चांडक जगदलपुर के साथ गत 30 जून को संपन्न हुआ। गिलड़ा एवं चांडक दोनों परिवारों ने शासन के निर्देशों का पालन करते हुए एवं अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी



महासभा के आग्रह को ध्यान में रखते हुए तथ तिथि में ही, सीमित परिवारजनों की उपस्थिति में, समस्त सामाजिक रीति रिवाजों के साथ विवाह संपन्न कराया।

सूरत। माहेश्वरी समाज के सक्रिय कार्यकर्ता और माहेश्वरी नवयुवक मंडल तथा उधना माहेश्वरी सभा के निवर्तमान सचिव राधाकिसन मूँदङ्डा की सुपुत्री एड्वोकेट जयश्री की शादी प्रवेश भूतङ्ग के संग एक पारिवारिक माहौल में हुई। कोरोना काल के कारण इसमें सीमित परिवार



जनों की उपस्थिति में मास्क, सेनेटाइजर, सोशल डिस्टेंस जैसे नियमों का पालन किया गया। कोरोना काल में एक सप्ताह के भीतर सगाई होकर संपन्न होने वाली क्षेत्र की ये पहली शादी है।

युवाओं की आवाज बने विकास

जोधपुर। प्रदेश के युवा पिछले कुछ दिनों से अभियान Youth Want Vikas Chandak सोशल मीडिया के माध्यम से चला रहे हैं। इसका नातीजा ये हुआ कि यह ट्रेंड पाली से लेकर उदयपुर नागौर और जयपुर तक पहुंच चुका है। यह हैशटैग अब पूरे राजस्थान में फेसबुक व टिक्टॉक पर ट्रेंड करता दिख रहा है। इस ट्रेंड के तुरंत बाद गूगल ने इंडियाज मोस्ट एंगेजिंग युवा के तौर पर विकास चांडक को उत्तर के तौर पर दिखाना शुरू कर दिया है। युवाओं का कहना है कि हम विकास चांडक को युवाओं की आवाज़ मानते हैं। उल्लेखनीय है कि उनकी पुस्तक अनदेखी 'बेस्ट सेलर' पुस्तक भी बन चुकी है।



राज्यस्तरीय योगासन प्रतियोगिता आयोजित

संचमनेर। महाराष्ट्र प्रदेश की बाल संस्कार समिति द्वारा आयोजित योगासन प्रतियोगिता में प्रदेश से 213 प्रतियोगी सम्मिलित हुए। प्रदेश बाल संस्कार समिति अध्यक्ष गणेशलाल बाहेती ने बताया कि इसमें प्रदेशाध्यक्ष श्रीकिशन भन्साली, प्रदेश मंत्री मदनलाल मनियार, डॉ संजय मालपाणी, प्रसारण

मंत्री ओमप्रकाश बजाज, प्रदेश के प्रचार समिति प्रमुख विठ्ठलदास भुतडा, बाल संस्कार समिति के सदस्य संतोष साबू आदि का विशेष सहयोग मिला। प्रतियोगी सदस्यों के बीड़ीओं का परीक्षण माधवलाल मालपाणी नैचुरोपैथी, सेंटर के बिहारीलाल जोशी एवं फापाले सर ने किया। निर्णायक मंडल ने इनके परामर्शनुसार विजेताओं के नाम घोषित किये।

महिला मंडल के चुनाव संपन्न

भीलवाड़ा। महेश बचत एवं साख समिति के संयोजक शांतिलाल डाढ़ द्वारा सत्र 2020-22 के लिए महिला कार्यकारिणी की घोषणा की गई। इसमें अध्यक्ष सुधा चांडक व सचिव अमिता मूँदङ्डा को चुना गया।



संरक्षक आशा डाढ़, ममता इनानी, सुमन लाहोटी व रेखा सोमानी होंगी। इसी तरह वरिष्ठ उपाध्यक्ष चेतना जागेटिया, उपाध्यक्ष उर्मिला अजमेरा, रंजना बिडला, कोषाध्यक्ष अनिता सोमानी, संगठन मंत्री रेखा गगरानी, सांस्कृतिक मंत्री प्रीति डाढ़ प्रचार, प्रसार मंत्री सीमा सोमानी, विशेष आमंत्रित सदस्य में निशा सोनी व रीना डाढ़ का चयन किया गया।

त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन



बरेली। माहेश्वरी महिला समिति द्वारा लॉकडाउन का पालन करते हुए तीन दिवसीय ऑनलाईन महेश नवमी महोत्सव मनाया गया। इसमें बच्चों की भजन प्रतियोगिता व क्रमबद्ध अखंड रामायण पाठ का आयोजन किया गया। अपने-अपने घरों पर सबने दीप जलाए एवं मिठाई बनाई। भगवान शिव पार्वती को भोग लगाकर महेश नवमी मनायी। कार्यक्रम का आयोजन संरक्षक कुमकुम काबरा के मार्गदर्शन तथा अध्यक्ष शशि साबू व सचिव रेनु परवाल के नेतृत्व में किया गया।

**अपने हर कार्य को इतने दिल से कीजिये,
मानो इसी पर ही आपका जीवन टिका हो।**



सेवा गतिविधियों का किया आयोजन



कानपुर। पश्चिमी उत्तर प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन (उत्तरांचल) द्वारा गत जून माह में भी सतत रूप से विभिन्न सेवा गतिविधियों का आयोजन किया गया। व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति द्वारा जूम एप पर भजन, कुकिंग, सलाद मेकिंग, एक्टिविटी, क्लासेस, ड्राइंग आदि प्रतियोगिता रखी गई। ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति 12 शहरों द्वारा अंतर्गत 3 जी (गाय, गंगा, गांव) के तहत गोविंद के खाने की व्यवस्था, शरबत मास्क, सेनेटाइजर वितरण, गौ सेवा के लिए 3100/- रुपए की धनराशि बैंटकर वृक्षारोपण किया गया। प्रादेशिक स्तोगन लेखन प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। पर्यावरण दिवस पर 14 शहरों द्वारा वृक्षारोपण किया गया। स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति द्वारा इम्यूनिटी सिस्टम को मजबूत बनाने के लिए योग कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त जानकारी देते हुए प्रदेश अध्यक्ष मंजू हरकुट ने बताया कि अन्य समितियों ने भी विभिन्न सेवा गतिविधियों का आयोजन किया।

शरद बागड़ी को गुडविल एंबेसडर एवं माहेश्वरी ऑफ द डिकेड अवार्ड

कानपुर। विवेकानंद वर्ल्ड पीस फाऊंडेशन कलकता (कारपोरेट अफेयर्स मंत्रालय भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त संस्था) द्वारा वर्ष 2020 में महाराष्ट्र से नागपुर के लेखक व वरिष्ठ समाज सेवी शरद गोपीदास बागड़ी को उनके सामाजिक मुद्दों पर लेखन, समाज सुधार के विचारों व समाज सेवा के लिये विशिष्ट सम्मान के अंतर्गत 'गुडविल एंबेसडर' नियुक्त कर सर्टिफिकेट प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है कि हाल ही में 'माहेश्वरी एकता' द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला पुरस्कार 'माहेश्वरी ऑफ द डिकेड' से सम्मानित किया गया एंग 'ब्रैवो इंटरनेशनल बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' ने भी को उनके समाज सुधारक लेखन व समाज सेवा के लिए मनोनीत किया है।



लायंस क्लब उज्जैन महाकाल द्वारा पौधारोपण



उज्जैन। लायंस क्लब उज्जैन महाकाल द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर परिसर इन्दौर रोड पर 51 सुरक्षित पौधे झोन चेयरमैन कमल माहेश्वरी, क्लब अध्यक्ष कैलाश डागा, सचिव राजेंद्र सिंह गिल, कोषाध्यक्ष पुष्णेन्द्र जैन, श्याम माहेश्वरी, सुनील जैन, अनुराग निगम, विशाल नीमा, चार्टर अध्यक्ष अजय मुंदडा आदि सदस्यों की उपस्थिति में पौधे रोपे गये।

इनानी अध्यक्ष लाहोटी सचिव

भीलबाड़ा। महेश बचत एवं साख समिति के संयोजक शांति लाल डाड द्वारा सत्र 2020-22 के लिए कार्यकारिणी की घोषणा की गई। इसमें अध्यक्ष जगदीश इनानी व सचिव अशोक (नारायण) लाहोटी को बनाया गया। इसी तरह वरिष्ठ उपाध्यक्ष रामेश्वर सोमानी, उपाध्यक्ष राजेन्द्र कालिया व रूप लाल गगरानी, कोषाध्यक्ष राम निवास लढा, संगठन मंत्री संदीप लढा, प्रचार प्रसार मंत्री विकास कचोलिया, सह सचिव अशोक लाहोटी तथा विशेष आमंत्रित सदस्य में दिनेश काबरा व राजेश सोमानी का चयन किया गया। इनके अलावा 13 अन्य कार्यकारिणी सदस्य भी होंगे।



दिल्ली प्रदेश की प्रथम बैठक सम्पन्न

दिल्ली। व्यक्तित्व विकास एवं प्रशिक्षण समिति तथा साहित्य चिंतन मनन समिति के अन्तर्गत 5 व 6 जुलाई के दिन 2 दिवसीय प्रथम कार्यकारिणी बैठक मंथन आयोजित हुई। प्रथम दिन पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष लता लाहोटी द्वारा विधान की जानकारी एवं पूर्व



मंथन
दो दिवसीय प्रथम कार्यकारिणी बैठक

राष्ट्रीय अध्यक्ष गीताजी द्वारा श्रंखलाबद्ध संगठन की कार्य शैली पर प्रेरक उद्घोषण दिया गया। व्यक्तित्व विकास एवं प्रशिक्षण शिविर की राष्ट्रीय प्रभारी नम्रता बियानी ने प्रशिक्षण शिविर में सहभागिता पर बल दिया। राष्ट्रीय सह प्रभारी उर्वशी साबू ने मुस्कुराने की कला सिखाई। संयोजिका नेहा बागड़ी ने अपनी टीम का परिचय कराया और मैनेजमेंट गेम से संगीत का जीवन में सकारात्मक प्रभाव बताया। जानकारी अध्यक्ष श्यामा भांगड़िया व प्रभा जाजू ने दी।

**यह मत पूछो की मैं कहाँ जा रहा हूँ।
मेरा हर एक कदम एक मंज़िल है?
'एक कदम सफलता की ओर...'**



महिला संगठन की सेवा गतिविधि

कानपुर। मध्य उत्तर प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन की व्यक्तित्व विकास एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण समिति द्वारा दो प्रादेशिक बैठकों का आयोजन प्रतियोगिता “रंगोली बनाओ अपने द्वार” आयोजन किया गया। ग्राम विकास एवं राष्ट्रीय समस्या निवारण समिति द्वारा पर्यावरण दिवस पर कानपुर, झांसी, मैनपुरी, उरई आदि जिलों में पौधारोपण कर बच्चों को पर्यावरण के बारे में जानकारी दी गई। लॉकडाउन में जिला मैनपुरी महिला मंडल अध्यक्षा ने अपने घर के बाहर गायों के लिए पानी तथा भूसे की व्यवस्था की। स्वास्थ्य एवं पारिवारिक समरसता समिति द्वारा योगा

दिवस पर 2 दिवसीय योगा प्रशिक्षण जूम एप पर प्रशिक्षिका शोभा मंधाना द्वारा दिया गया। महिला अधिकार एवं सशक्तिकरण समिति द्वारा प्रदेश की महिलाओं को स्वावलंबी बनाने एवं उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए उनके उत्पादनों का प्रचार-प्रसार किया गया। बाल विकास एवं किशोरी विकास समिति के अंतर्गत 22 जून से 27 जून तक सृजन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसी प्रकार अन्य समितियों की गतिविधि भी सतत जारी रही। उक्त जानकारी अध्यक्ष प्रीति तोषनीवाल व सचिव सीमा झाँवर ने दी।



मंजू बांगड़ को 7 स्टार अवॉर्ड



कानपुर। समाजसेवी मंजू बांगड़ को रोटरी डिस्ट्रिक्ट वर्चुचल अवॉर्ड फंक्शन में असिस्टेंट गवर्नर का दायित्व सफलतापूर्वक निभाने के लिए रोटरी डिस्ट्रिक्ट गवर्नर किशोर कटरु द्वारा रोटरी सत्र 2019-20 हेतु 7 स्टार असिस्टेंट गवर्नर अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। श्रीमती बांगड़ वर्तमान में रोटरी क्लब कानपुर विनायक श्री की चार्टर अध्यक्ष हैं।

ऑनलाईन परिचर्चा का हुआ आयोजन

कोलकाता। प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के आतिथ्य एवं पूर्वांचल संभाग की सभी प्रादेशिक सभाओं, नेपाल चेप्टर, महिला एवं युवा संगठन के संयुक्त तत्वावधान में माहेश्वरी समाज के प्रथम एवं एकमात्र माउंट एवरेस्ट आरोही वैकटेश माहेश्वरी के साथ एक परिचर्चा का आयोजन जूम के

माध्यम से गत 19 जुलाई को सायं काल 5 बजे से पूर्वांचल उपाध्यक्ष कैलाश काबरा की अध्यक्षता में हुआ। परिचर्चा में महासभा के अध्यक्ष श्याम सोनी, महामंत्री संदीप काबरा, महिला संगठन अध्यक्ष आशा माहेश्वरी व युवा संगठन अध्यक्ष राजकुमार काल्या समेत अन्य राष्ट्रीय पदाधिकारियों की विशेष रूप से उपस्थिति रही। सर्वप्रथम संयोजक भंवर राठी ने परिचर्चा की भूमिका रखी। वैकटेश माहेश्वरी का परिचय राजेश नागोरी ने एवं प्रशस्ति पत्र का वाचन कार्यसमिति सदस्य गोपाल दमाणी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रदेश मंत्री नन्द कुमार लड्डा द्वारा किया गया।



कोरोना योद्धा पूनम धूत



वापी जिला बलसाड़ (गुजरात) निवासी पुष्पकुमार धूत की धर्मपत्नी पूनम धूत को कोरोना काल में दी गई अभूतपूर्व सेवाओं के लिये स्थानीय मीडिया द्वारा कोरोना योद्धा के

रूप में सम्मानित किया गया। श्रीमती धूत कई संस्थाओं से सम्बद्ध हैं। अतः उनके प्रयासों से कंटेनमेंट क्षेत्र के लोगों व गरीबों को राशन का वितरण किया गया। इसी प्रकार 500 से अधिक सफाईकर्मी तथा फेरीवालों को इम्फूनिटी बूस्टर दवाओं का वितरण किया गया। उल्लेखनीय है कि श्रीमती धूत विभिन्न समाजसेवी संस्थाओं के माध्यम से तो अपनी सेवा देती ही रही हैं, साथ ही बलसाड व दीव माहेश्वरी महिला संगठन अध्यक्ष के रूप में भी अपनी सेवा दे चुकी हैं।

तोतला दम्पत्ति ने किया पौधारोपण



उज्जैन। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की कार्यसमिति की विशेष आमंत्रित सदस्य गीता तोतला और उनके पति उज्जैन के वरिष्ठ चार्टर्ड अकाउंटेंट एवं उज्जैन में बनने वाले माहेश्वरी भवन महेशधाम के बोर्ड सदस्य ओं पी तोतला ने महेश धाम में एक नीम का पौधारोपण किया। इस अवसर पर अजय मूंदडा, शैलेन्द्र राठी सहित कई गणमान्य जन उपस्थित थे। इस अवसर पर श्रीमती तोतला ने सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया; का उद्वरण देते हुए अपील की कि सभी अपने घर या उसके आसपास एक नीम का पौधा जरूर रोपित करें। ताकि उस क्षेत्र के सभी निवासियों का स्वास्थ्य उत्तम रहे।

**माना बरगद और पीपल जैसे विशाल नहीं हम,
लेकिन छोटी सी तुलसी का छोटा सा
पौधा भी किसी से कम नहीं होता?**



सहकारी संस्थायें सशक्तिकरण का साधन

हैदराबाद। सहकारी संस्थायें विकसित और विकासशील देशों के आर्थिक सशक्तिकरण का एक आदर्श साधन हैं। व्यक्ति और देश को आत्मनिर्भर बनाने के सामूहिक प्रयास से न केवल सामूहिक सहभागिता को बल मिलता है वरन् सुरक्षित व सक्षम राष्ट्र का आधार भी सुदृढ़ होता है। उपरोक्त विचार महेश बैंक के चेयरमैन इमीरेट्स रमेशकुमार बंग ने राजेंद्रनगर स्थित सहकारिता प्रशिक्षण संस्थान द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सहकारिता दिवस पर “सहकारिता द्वारा क्लाइमेट एक्शन” विषय पर आयोजित वेबिनार कान्फ्रेन्स में भाग ले रहे प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुये व्यक्त किये। वेबिनार कान्फ्रेन्स का प्रारंभ करने के पूर्व सहकारिता प्रशिक्षण संस्थान के प्रांगण में सहकारिता ध्वजारोहण श्री बंग द्वारा संस्थान के निदेशक एच.एच.के. तंगीराला के साथ किया गया। वेबिनार कान्फ्रेन्स में सहकारिता प्रशिक्षण संस्थान के प्रोफेसर डॉ. श्यामकुमार एवं अन्य प्रशिक्षकों के साथ विभिन्न सहकारी संस्थानों के प्रतिनिधि रविंद्रकुमार भाटिया, पी.के. पोरवाल, जुगलकिशोर सोनी, सुरेश गोयल आदि ने भी सक्रियता से भाग लेकर अपने विचार रखे।



सारडा अध्यक्ष एवं राठी सचिव निर्वाचित

चंद्रपुर। स्थानीय माहेश्वरी सेवा समिति चंद्रपुर (महेश भवन) की नई कार्यकारिणी का चुनाव महेश भवन तुकुम में गत 9 जुलाई को संपन्न हुआ। इसमें अध्यक्ष सीए दामोदर शिवराज सारडा तथा सचिव सुरेश मोहनलाल राठी निर्वाचित हुए। तत्पश्चात अध्यक्ष द्वारा डॉ. सुशील मूंदडा और उमेश चांडक को उपाध्यक्ष तथा सहसचिव शेखर लोहिया, सुशील भट्टड़ को नियुक्त किया गया। कोषाध्यक्ष शिवनारायण सारडा चुने गए। कार्यकारिणी में सदस्य भी चुने गए।



महेश धाम पर किया पौधारोपण



उज्जैन। पर्यावरण के प्रति सजगता व संरक्षण के उद्देश्य से श्री माहेश्वरी सभा महिला मंडल गोलामंडी द्वारा महेश धाम पर पौधारोपण किया गया। इसमें संस्था अध्यक्ष हेमलता गांधी, सचिव मनोरमा मंडोवरा, शांता मंडोवरा, पुष्पा मंत्री, सीमा परवाल, ज्योति राठी, विमला कासट, संगीता भूतडा, उषा सोडानी आदि ने उपस्थित होकर पौधारोपण किया।

सेवा सप्ताह में रक्तदान



ब्यावर। भारत विकास परिषद की स्थानीय शाखा द्वारा अपने 57 वें स्थापना दिवस पर चल रहे सेवा सप्ताह के तहत रक्तदान किया गया। राजकीय अमृतकौर हॉस्पिटल के रक्तकोष विभाग में कार्यकर्ता स्टॉफ ने भाविप के अध्यक्ष राजेंद्र काबरा से मोबाइल पर संपर्क कर वर्तमान में खाली हुए ब्लड बैंक की जानकारी दी थी। अध्यक्ष श्री काबरा ने तुरंत प्रभाव से परिषद सचिव प्रशांत पाबूवाल व समाजसेवी दिनेश झांवर से संपर्क कर परिषद सदस्यों सहित अन्य लोगों से कोरोना नियमों की गाइड लाइन की पालना करते हुए रक्तकोष विभाग में पहुंचकर स्वैच्छिक रक्तदान कराया।



हरियाली तीज का हुआ आयोजन

बूंदी। हरियाली तीज के अवसर पर शहर में घर-घर में माहेश्वरी समाज की महिलाओं ने माता पार्वती की पूजा अर्चना कर दाम्पत्य जीवन की खुशहाली की कामना की। महिलाओं ने सज-धजकर चुंदी लहरिया पहन विधि विधान से पूजा अर्चना कर घेर का भोग लगाया और बहू ने सास को, देवरानी ने जेठानी को कल्पना दिया। इस अवसर पर महिलाओं ने बागों में झूले झूले और ब्रत खोला। इस दौरान सविता, अनिता, मधु, मीना, शीला, अंतिमा, ममता आदि मौजूद रहीं।



राठी परिवार को छूट देने की मांग

भीलवाड़ा। दक्षिणी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा वें प्रदेशाध्यक्ष कैलाश कोठारी व भीलवाड़ा जिला माहेश्वरी सभा के जिलाध्यक्ष दीनदयाल मारू के नेतृत्व में समाज द्वारा मुख्यमंत्री के नाम अतिरिक्त जिला कलेक्टर



(शहर) को ज्ञापन सौंपा गया। इसमें भीलवाड़ा में धीसूलाल राठी निवासी भदादा मोहल्ला पर जिला प्रशासन द्वारा भारी राशि आरोपित की गई जिसे निरस्त करने की मांग की गई। उल्लेखनीय है कि विवाह में 50 से अधिक व्यक्ति होने पर अधिकतम् 10,000 रु. का जुर्माना बसूल करने का प्रावधान है, जबकि प्रशासन द्वारा भारी राशि आरोपित की गई। इस सम्बन्ध में पहले से ही एफ.आई.आर. भी दर्ज है, जो न्यायालय में निर्णय हेतु लम्बित है। माहेश्वरी समाज ने पीड़ित राठी परिवार हर्जाना नोटिस तुरन्त प्रभाव से रद्द कर प्रकरण की निष्पक्ष जांच करने की मांग की है। देवकरण गगड़ पूर्व उपसभापति महासभा, राधेश्याम सोमानी पूर्व प्रदेशाध्यक्ष, प्रहलाद राय लड़ा मंत्री जिला महेश सेवा निधि, सत्येन्द्र बिड़ला प्रदेश मंत्री, देवेन्द्र सोमानी जिलामंत्री, ओमप्रकाश गड्ढाणी जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष, केदर जागेटिया नगर अध्यक्ष, सुरेश कचौलिया प्रदेश कोषाध्यक्ष, महेन्द्र काकाणी व राजेन्द्र भदादा जिला संयुक्त मंत्री, मनोहरलाल अजमेरा आदि उपस्थित थे। उक्त जानकारी जिला मंत्री देवेन्द्र सोमानी ने दी।

तीज का सिंजारा पर प्रतियोगिता संपन्न

दिल्ली. महिला संगठन द्वारा तीज का सिंजारा युगल नृत्यों की फुहारों के साथ मनाया गया। शुभारंभ राष्ट्रीय संगठन महामंत्री मंजू बांगड़ व पूर्व अध्यक्ष विमला साबू के कर कमलों से हुआ। नन्हीं बालिका गोद्या माहेश्वरी ने गणेश वंदना पेश की। राष्ट्रीय पर्व समिति प्रभारी पुष्पा सोमानी, उत्तरांचल की राष्ट्रीय पर्व समिति सहप्रभारी प्रियंता चौला, उत्तरांचल उपाध्यक्ष किरण लड़ा ने संबोधित किया। एंकरिंग में सांस्कृतिक मंत्री पंकज लोहिया, पर्व समिति संयोजिका सरोज साबू ने सेठ-सेठानी बनकर सबका मनोरंनज भी किया। नृत्य के उपर्यात युगल जोड़ियों ने जो पोज बनाए उस पर जजमेंट किया गया। इसमें प्रथम श्रेणी में प्रथम : नोएडा, द्वितीय : उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र, तृतीय : पश्चिमी क्षेत्र रहे। सांत्वना पुरस्कार पूर्वी क्षेत्र को मिला। द्वितीय श्रेणी में प्रथम : दक्षिणी क्षेत्र, द्वितीय : उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्र, तृतीय : पूर्वी क्षेत्र रहे। अंत में आभार प्रचार-प्रसार मंत्री सरिता सोनी ने माना। अध्यक्ष श्यामा भांगडिया, सचिव प्रभा जाजू, सांस्कृतिक मंत्री पंकज लोहिया एवं पर्व समिति संयोजिका सरोज साबू व उनकी टीम ने अपना योगदान दिया।

**कुछ देने के लिए हैसियत नहीं
दिल बड़ा होना चाहिए....!!**

**आपके पास क्या है और कितना है
यह कोई मायने नहीं रखता है।**

आपकी सोच व नियत सर्वोपरि होना आवश्यक है।

श्रद्धांजलि श्रीमती प्रेमलता चौधरी



जयपुर। कई सामाजिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक संस्थाओं में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाली वरिष्ठ समाजसेवी श्रीमती प्रेमलता चौधरी धर्मपत्नी विठ्ठल माहेश्वरी का गत 9 जून को देहावसान हो गया। आप अपने पीछे 2 पुत्र निखिल एवं नितिन तथा पुत्री निधि राठी आदि का भरा पूरा परिवार छोड़ गयी है। आप रेनवाल (किशनगढ़) के भण्डारी परिवार की पुत्री थी।

श्री सुरेशचंद्र भराडिया



गुलबर्गा। माहेश्वरी प्रगति कलबुर्गी एवं राजस्थानी सेवा मंच गुलबर्गा के पूर्व अध्यक्ष सुरेशचंद्र भराडिया का गत दिनों कोरोना महामारी से देहावसान हो गया। आपका हैंदराबाद के हॉस्पिटल में इलाज चल रहा था। श्री भराडिया का अंतिम संस्कार हैंदराबाद में ही कोरोना के दौरान सरकारी नियम अनुसार किया गया।

शिव महापुराण का डिजिटल आयोजन



बहादुरगढ़। हरियाणा पंजाब प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा माइक्रोसॉफ्ट टीम्स एलेटफार्म पर श्री शिव महापुराण कथा का भव्य आयोजन गत 5 से 9 जुलाई तक रखा गया। पूजा तीन शक्ति मंदिर, बहादुरगढ़ में पंडित राधेश्याम सास्त्री भागवत कथा व्यास द्वारा कराई गई। पूजा में प्रदेश अध्यक्षा सुमन जाजू, संगठन मंत्री सरोज सारडा, कार्य समिति सदस्य अनीता जाजू, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य अनीता भुराडिया एवं हरियाणा पंजाब प्रदेश माहेश्वरी सभा के सचिव सतीश माहेश्वरी व बहादुरगढ़ माहेश्वरी समाज के कार्यसमिति सदस्य संदेश जाजू आदि उपस्थिति थे। श्री शिव महापुराण कथा का लाइव प्रसारण भीलवाड़ा से पं. शंकर दाधीच कथा व्यास द्वारा सायंकाल 3 से 5 बजे तक प्रतिदिन किया गया। कथा का शुभारंभ श्रीगणेश एवं महेश वंदना से राष्ट्रीय माहेश्वरी महिला अध्यक्षा आशा कोटा, महामंत्री मंजू बांगड़ कानपुर एवं भूतपूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा विमला साबू सूरत द्वारा किया गया। प्रसारण में उत्तरांचल उपाध्यक्ष किरण लड़ा दिल्ली, राष्ट्रीय कार्य समिति सदस्य पूनम राठी भटिंडा, निवर्तमान प्रदेश अध्यक्षा मंजू सोमानी रेवाड़ी, प्रदेश सचिव सीमा मूंदडा फरीदाबाद आदि कई सदस्याएं उपस्थित रहीं।



चीन व चीन उत्पाद का विरोध



देवास। वैश्य महासम्मेलन देवास द्वारा प्रदेश मंत्री अशोक सोमानी के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में व्यस्ततम एमजी रोड पर हाथों में चीन और चीन निर्मित सामान के बहिष्कार की तर्जियां पकड़े वैश्य महासम्मेलन के कार्यकर्ता और देशभक्त नागरिक एकत्रित हुए। सभी के मन में चीन द्वारा की गई द्वेषपूर्ण कार्रवाई को लेकर जबर्दस्त गुस्सा था। इस जागरण में महिला शक्ति ने भी उपस्थिति दर्ज कराई। इस अवसर पर वैश्य महासम्मेलन के सांस्कृतिक प्रकोष्ठ प्रदेश संयोजक द्वारका मंत्री, महिला जिलाध्यक्ष मंजूबाला जैन, आयुषी गुप्ता, दुर्गा पोरवाल, दिपाली खंडेलवाल, ममता गुप्ता, पूजा मंगल, जिला महामंत्री अमित गुप्ता, जिला संगठन मंत्री राजेंद्र संघवी, जिला मीडिया प्रभारी राजेंद्र मूदडा, जिला युवा अध्यक्ष आलोक मंगल, समीर मेहता, घनश्याम माहेश्वरी सहित बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित थे। उक्त जानकारी मीडिया प्रमुख राजेंद्र मूदडा ने दी।

जाजू के नेतृत्व में पौधारोपण सम्पन्न



घाटाबिल्लोद (धार)। व्यापारी संघ के संयोजक, हरे राम हरे कृष्ण मंडल के अध्यक्ष, माहेश्वरी समाज के पूर्व जिला अध्यक्ष व भाजा के वरिष्ठ नेता समाजसेवी घनश्याम जाजू के नेतृत्व में नगर में हराभरा घाटाबिल्लोद, साफ सुथरा घाटाबिल्लोद, ग्रीन घाटाबिल्लोद, क्लीन घटाबिल्लोद के नारे के साथ सामूहिक पौधारोपण किया गया। व्यापारी संघ की ओर से पंचायत को कचरा गाड़ी भेंट की गई। इस अवसर पर अनेक संस्थाओं ने इस योगदान पर श्री जाजू का अभिनंदन किया।

डिजिटल मीटिंग आयोजित

कोलकाता। पश्चिम बंगाल प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा अध्यक्ष निर्मला मल्ल व सचिव कृष्ण पेड़ीवाल के नेतृत्व में गत 15 जुलाई को डिजिटल मीटिंग 'बंगाल भ्रमण' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन सुधा कल्याणी ने किया। कार्यक्रम की रूपरेखा प्रदेशाध्यक्षा निर्मला मल्ल तथा प्रदेश की रिपोर्ट प्रदेश सचिव कृष्ण पेड़ीवाल द्वारा प्रस्तुत की गई। प्रदेश कोषाध्यक्ष कांता मल्ल व संगठन मंत्री आभा लाहोटी ने भी संबोधित किया। उपाध्यक्षों व सहसचिवों का परिचय रेखा लखोटिया, सरोज मालपानी, अलका मर्दा एवं सुशीला लोहिया ने दिया। राष्ट्रीय पूर्वांचल संयुक्त मंत्री गिरिजा सारङ्गा ने प्रोटोकॉल, फंड राइजिंग एवं रिपोर्टिंग की जानकारी दी।

सेवा गतिविधियों का हुआ आयोजन

कानपुर। श्री माहेश्वरी महिला मंडल कानपुर द्वारा जून माह में विभिन्न सेवा कार्य किए गए। अध्यक्ष करुणा अटल ने बताया कि 21 जून योगा दिवस के अवसर पर मंडल की सदस्याओं ने अपने-अपने घरों में विभिन्न योगासन किए। विवाह योग्य युवक-युवतियों के 30 बायोडाटा व्हाट्सएप के माध्यम से आदान प्रदान किए गए। सूर्य ग्रहण के अवसर पर हनुमान चालीसा, सुंदरकांड एवं गीता पाठ किए गए। 22 जून से 27 जून तक आयोजित सृजन कार्यशाला में कानपुर जिले से 10 किशोरियों ने सहभागिता की। जयश्री करनानी ने तीन पुरस्कार प्राप्त किये। निबंध प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। विषय था "परिवार के स्तंभ" जिसमें कानपुर जिले की महिलाओं ने भाग लिया और प्रदेश स्तर पर लता भुराडिया ने प्रथम एवं रुचि राठी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।



सदा - सर्वदा - सर्वोत्तम

50
मंगल
वस्त्रालय

जयस्तंभ चौक, अमरावती.
2572672

Colors
&
Weaves

by shreemangalam
1st Floor, Sahakar Bhavan,
Jaistambh Chowk, Amravati. 444001
2569458

मंगलम्

जयस्तंभ चौक, अमरावती.
2564172



घागरा ओढणी, बनारसी शालु, डिजायनर वर्क साड़ीयाँ, प्युअर सिल्क साड़ीयाँ, पैठणी, कांजीवरम्, ९वारी पातळे, सलवार सुट, कुर्ती, इंडो वेस्टर्न, इव्हीनींग गाऊन

पर्यावरण प्रेमी...

जुनूनी पर्यावरणविद् नवल डागा

पर्यावरण संरक्षण का परचम तो कई लोग थामे हुए हैं, फिर भी पर्यावरण का दृष्टित होना थम नहीं रहा। कारण है, उनके समर्पण की कमी। यदि वे जयपुर निवासी पर्यावरणविद् नवल डागा के प्रति “जुनून” का एक अंश भी अपने जीवन में आत्मसात कर लें तो पर्यावरण को सुधारने में समय नहीं लगेगा आइये जानें पर्यावरण के प्रति कितने समर्पित हैं, श्री डागा।

“जुनून” वह अवस्था है, जो किसी भी कार्य के प्रति समर्पण का सर्वोच्च शिखर प्रदान करती है। एक ऐसा सर्वोच्च शिखर, जिस पर पहुंच कर उसके लिये अपने लक्ष्य से बढ़कर कुछ नहीं होता। जयपुर निवासी पर्यावरणविद् नवल डागा का सम्पूर्ण जीवन ही पर्यावरण के प्रति जुनून की हड़तक समर्पित हो चुका है। वैसे तो पर्यावरण पर मानव ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि का अस्तित्व निर्भर करता है। लेकिन श्री डागा ने पर्यावरण ही नहीं बल्कि इसके संरक्षण को अपने जीवन में इस तरह शामिल किया कि उनका सम्पूर्ण जीवन ही पर्यावरणमय हो गया या कहें पर्यावरण को ही समर्पित हो गया। कई टेलीविजन चैनल व रेडियो स्टेशन श्री डागा के साक्षात्कार का प्रकाशन भी कर चुके हैं।

पिता की प्रेरणा ने दिखाई दिशा

श्री डागा का जन्म 1 दिसम्बर 1956 को जयपुर (राजस्थान) में स्व. श्री शिवरतन व स्व. श्रीमती चम्पादेवी डागा के यहाँ दो भाई व 4 बहनों से भरे परिवार में हुआ था। उनका परिवार मूल रूप से बीकानेर का निवासी था, लेकिन व्यावसायिक कारणों से जयपुर आ गया था। श्री डागा ने वर्ष 1976 में बीकानेर किया और उनकी नौकरी लग गई। उस समय के मान से वेतन भी अच्छा ही था, लेकिन पिताजी को यह उचित नहीं लगा। कहा,

“ऐसा काम कर जिससे तेरे नाम से मैं पहचाना जाऊँ।” अधिक पूछने पर उनका परामर्श पर्यावरण के क्षेत्र में काम करने के लिये था। इसके लिये उन्होंने पेड़ों की सैकड़ों उपयोगिता भी बताई। अभी तक वे मात्र 6 दिन ही नौकरी पर गये थे, वेतन भी नहीं मिला था और इस नये लक्ष्य के लिये नौकरी को तिलांजलि दे दी।

सर्वप्रथम पेड़-पौधे ही बने आजीविका

उस समय आयु के मान से भी उन्हें आजीविका का चयन करना था। पिताजी का फल बागवानी तथा बीज का व्यवसाय था। उन्होंने आरडू के पेड़ों का प्लांटेशन भी किया था। परिवार खेत में ही रहता था। बस श्री डागा ने भी वहीं से अपने स्व व्यवसाय की शुरुआत कर दी। उन्होंने 13 जुलाई 1977 को अपने खेत पर ही नर्सरी प्रारंभ की, जिसमें टमाटर व बैंगन आदि की पौधे तैयार की जाती थी। इसकी सफलता के बाद वन विभाग के लिये बीज व लिट्रेचर सप्लाय, ट्री लेबल प्रिंटिंग आदि व्यवसाय भी प्रारंभ किये। इस तरह उनका व्यवसाय ही नहीं बल्कि उनके जीवन की संपूर्ण दिनचर्या ही पेड़-पौधों को समर्पित हो गई।

पेड़ों के लिये रिश्ते किये सीमित

धीरे-धीरे पेड़-पौधे उनके लिये सिर्फ व्यवसाय नहीं बल्कि उनके जीवन का हिस्सा ही बनते चले

गये। इनकी देखरेख व संरक्षण तथा इसके प्रति जनजागृति उत्पन्न करना ही उनके जीवन का लक्ष्य बन गया। इस अभियान ने उनके जीवन की दिनचर्या को इतना व्यस्त कर दिया कि उन्हें अपने संबंध तक सीमित कर देना पड़े। श्री डागा ने रिश्तों को सीमित रखने के लिये एक नियम बनाया जिसके अंतर्गत वे अपने यहां आयोजित कार्यक्रम में अत्यंत निकटवर्ती रिश्तेदारों को ही आमंत्रित करते हैं, जिससे उन्हें भी अनावश्यक रिश्ते नहीं निभाने पड़ें। इसका नजारा कोरोना काल से बहुत पहले 23.10.13 को श्री डागा की माताश्री के देहावसान के पश्चात उठावने की रस्म के दौरान दिखा। इसके लिये श्री डागा ने अखबारों में बकायदा विज्ञापन प्रकाशित करवाकर स्नेहीजनों की संवेदना को स्वीकार करते हुए उनसे घर पर उठावने की रस्म नहीं कर रहे हैं, ऐसा अनुरोध तक कर लिया।

परिवार को भी रखा सीमित

विवाह पूर्व से ही श्री डागा का पर्यावरण के प्रति समर्पण के कारण सम्पूर्ण जीवन ही बदल चुका था। समय बचाने के लिये न सिर्फ रिश्तों को उन्होंने सीमित किया अपितु टीवी जैसे मनोरंजन के साधनों से भी दूरी बना ली थी। उन्होंने आज तक अपने घर के अंदर टेलीविजन को प्रवेश तक नहीं दिया। घर के अंदर भी शुद्ध प्राकृतिक तौर तरीके का जीवन यापन शुरू कर दिया। इन सबका नतीजा यह रहा कि लोग उन्हें असामान्य समझने लगे, लेकिन ऐसे में भी श्रीमती शारदा डागा ने उनकी जीवनसंगीनी बनने का निर्णय लेकर उनके जीवन को संबल दिया। वे आज भी पर्यावरण संरक्षण के लिए उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हैं। उनके परिवार में मात्र एक पुत्री ही है क्योंकि पुत्री का जन्म होने के मात्र दो दिन बाद ही श्री डागा ने यह कहकर परिवार नियोजन को अपना लिया था कि यदि परिवार बढ़ता गया तो उसे समय भी देना पड़ेगा, जिससे उनका लक्ष्य प्रभावित होगा। इस निर्णय से पत्नी को छोड़ संपूर्ण परिवार यहां तक कि निकट परिजन भी बहुत नाराज हुए थे, लेकिन श्री डागा अपने मार्ग पर दृढ़ रहे।

हर भेंट भी पर्यावरण के नाम



आप गत 43 वर्षों से विभिन्न भेंट सामग्री आदि के साथ ही अपनी पुस्तक शृंखला पर्यावरण हजारा द्वारा भी पर्यावरण संरक्षण की ज्योति जलाते रहे हैं। पर्यावरण संरक्षण के अंतर्गत अभी तक आपकी 557 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें पर्यावरण हजारा के सात भाग भी शामिल हैं। पर्यावरण पर आधारित ग्यारह हजार से अधिक स्वरचित दोहों का संग्रह हैं। दोहों की विशेषता है, इन सभी में नीचे की पांचों





दोहों का सृजन अत्यंत दुष्कर कार्य है और वह भी पर्यावरण के संदेश के साथ। उनके द्वारा उपहार स्वरूप दी जाने वाली भेंट सामग्री पर भी पर्यावरण संरक्षण के संदेश अंकित रहते हैं।

लॉकडाउन में पर्यावरण की सेवा

कोरोना महामारी के कारण गत दिनों हुए लॉकडाउन की अवधि में जब हर आम व्यक्ति खाद्य पदार्थों के लिये परेशान था, ऐसे में भी डागा परिवार बिल्कुल भी प्रभावित नहीं हुआ। कारण था, घर पर उगाइ गई सब्जियां। ये सब्जियां बिना किसी प्रकार के कीटनाशकों के प्रयोग के पूर्णतः प्राकृतिक वातावरण में उत्पन्न की जाती हैं। इसके कारण उनके घर का मैन्यू तो बिगड़ने से बचा और कई परिवारों के भी वे मददगार बन गए। इस दौरान उनकी लेखनी ने पेड़ों की उपयोगिता से संबंधित 185 विषयों तथा गाय से संबंधित भी 105 विषयों पर विभिन्न दोहों का सृजन किया। श्री डागा आशु कवि हैं और उसमें भी इन दोहों की विशेषता है, जिसमें नीचे की लगने वाली मात्राओं का न होना। वर्तमान में श्री डागा ने अपने 36 पूर्वजों के नाम पर पक्षियों के पर्यावरण के विषय परिदेश एवं लकड़ी के धौंसलें अपने घर पर लगाए हैं, जिन पर पूर्वजों की जन्म एवं मोक्ष दिनांक अंकित हैं।

प्रकृति का घर है उनका निवास

श्री डागा का निवास स्थान भी आम लोगों के लिए किसी दर्शनीय स्थल से कम नहीं है। कारण ही इसका प्राकृतिक संसाधनों से ओतप्रोत होना। उनका मकान 111 वर्गज में 5 मंजिला बना हुआ है, लेकिन यदि दूर से देखा जाए तो वह मकान नहीं बल्कि हरियाली का झुरमुट नजर आएगा। कारण यह है कि उन्होंने अपने निवास स्थान को पूरी तरह हरियाली से ढंक रखा है। उनके पांच मंजिला घर पर ऊपर तक लंबी-लंबी पांच तरह की बेलें फैली हैं। पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी कई चीजें उनके घर में मौजूद हैं। उनकी विशेषता है कि अपने मिलने जुलने वालों से सबसे अधिक बातें वे पर्यावरण के बारे में ही करते हैं। यह उनकी प्रेरणा का ही असर है कि उनके निवास स्थान के आसपास के घर भी हरियाली से सराबोर नजर आते हैं। यही नहीं नवल डागा के घर के सामने वाली सड़क ही नहीं और भी काफी दूर तक पेड़ ही पेड़ लगे नजर आते हैं। साथ ही पर्यावरण संरक्षण से जुड़े स्लोगन भी हर ओर दिखते हैं। यह इसी हरियाली का परिणाम है कि उनके मकान में गर्मी के दिनों में भी एयरकंडीशनर या वाटर कूलर आदि की जरूरत नहीं होती क्योंकि हरियाली के कारण स्वतः ही उनके मकान में बाहर के तापमान से घर के अंदर लगभग 10 डिग्री कम तापमान रहता है। वहीं ठंड के दिनों में तापमान अधिक कम नहीं होता।

अजूबे से कम नहीं पूरा मकान

उनके घर में प्रवेश करने के साथ ही एक-एक इंच की जगह का नायब इस्तेमाल देखा जा सकता है। दरवाजे का एक पलड़ा छोटा और दूसरा



बड़ा होना स्वयं में एक रहस्य है। मकान की सीढ़ियों से लेट-बाथ तक के क्षेत्र में जीवनोपयोगी और पर्यावरण संरक्षण के स्लोगन लिखी कुल 1525 टाइल्स लगाई हुई है। सीढ़ियों के साथ लगी रेलिंग भी बहुपयोगी है। फोल्ड होने वाली विभिन्न सात प्रकार की रेलिंग को 20 सेकंड से भी कम समय में लगा और हटा सकते हैं, वहीं सीढ़ी के एक ओर लगे लकड़ी के बोर्ड को पलंग बनाया जा सकता है। सन् 1987 में बने इस मकान को भूकंपरोधी बनाने के लिए ग्राउंड फ्लोर की सभी दीवारों को साइकिल की ताड़ियों से बांधा गया है, वहीं ऑक्सीजन उत्सर्जन हेतु घर के बाहर की ओर जीवंती, गिलोय और कई तरह की उपयोगी बेल और पौधे लगे





हैं। अपनी इन अनूठी विशेषताओं के कारण यह घर इन दिनों युवा आर्किटेक्टस और पर्यावरण प्रेमियों के लिए एक ट्रेनिंग स्कूल बना हुआ है।

फर्नीचर की भी अनोखी व्यवस्था

इस मकान की हर चीज अद्भुत, अनोखी और खास है। ड्राइंग रूम की सेंट्रल टेबल बड़ी खूबसूरत है। इस पर खाना रखने के बाद किचन में जाने की जरूरत नहीं है। खाने के सभी बर्तन सेंटर टेबल की ड्राइंगर्स में ही रखे हैं और वह भी इतनी खूबसूरती से छिपे हुए मानों जैसे इन्हें किसी डिजाइन में छिपा दिया गया हो। इस टेबल की डिजाइन करने वाले भी स्वयं श्री डागा ही हैं। पूरे मकान की खिड़कियों पर यिल इस तरह से लगाई गई है ताकि पूरा हाथ अंदर जा सके और सफाई में कोई परेशानी नहीं आए। सफाई का ध्यान रखने के लिए दीवारों में कोने नहीं छोड़े गए हैं। इस घर की सभी दीवारें भूकंपरोधक हैं। किसकी चिट्ठी आई, किसको पत्र भेजना है, किसकी बुकिंग हो गई और किसकी बुकिंग बाकी है? दूर-दूर तक कोई असमंजस ना हो इसलिए डागा युगल ने सभी चीजों के लिए बनाई है, अलग से शेल्फ। उनके पास पोस्टकार्ड रखने के लिए भी अलग से शेल्फ हैं, जिसमें साल के सभी महीनों और तारीखों के अलग विभाजन किए गए हैं। कब किस को क्या भेजा, इसकी जानकारी रखने

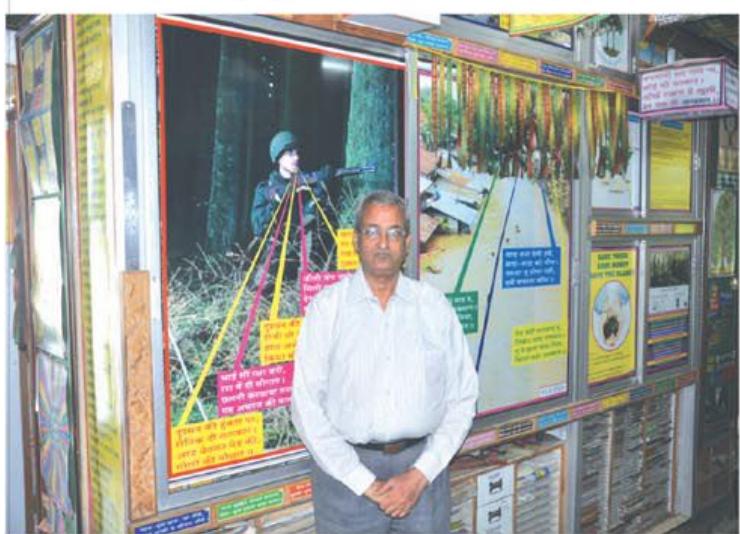
में कोई परेशानी नहीं। सभी सामग्री को रखने का निर्धारित स्थान होने से जरूरत होने पर ढूँढने में लगने वाले समय की बचत होती है। ज्ञादू व्यवस्थित रखने हेतु दीवार में चुनाई के साथ ही पांच पाइप दबाएं गए हैं।

अलमारी व पलंग सब अजूबे

इस मकान का हर दरवाजा अलमारी है। कमरों के दरवाजे के पीछे वाली खाली जगह को ग्रील लगाकर बुक शेल्फ में बदल दिया है। वहीं हर छोटी बड़ी अलमारी का दरवाजा काम का है। कोई हैंगिंग ट्रैसिंग टेबल है, तो कोई कुछ रखने की जगह। लकड़ी के पलंग पर तो आप सभी सोए होंगे मगर इनके पलंग पत्थर से बने हुए हैं और दीवार के साथ चुने गए हैं। हर पलंग में रजाई, गड़, गिफ्ट आयटम और कहीं आने जाने के समय कपड़े तक बदलकर उन्हें विस्तार के नीचे डंप करने की व्यवस्था भी है। इन पलंगों की खास बात यह है कि सालों साल ना तो इसकी रंगत उड़ेगी और ना ही इसमें दीमक लगेगी।

हर कहीं प्रकृति के लिये मोहब्बत

डागा दम्पत्ति के इस अनोखे घर में जहां सब कुछ अनोखा और अलग है, वहां छत कैसे अछूती रह सकती है। लिहाजा यहां गर्दन को जगा-सा ऊंचा करने की देर है, सैकड़ों संदेश और काम की कतरनों के साथ जरूरी सूचनाएं और रिमाइंड लिखे नजर आएंगे, लेकिन बात यहीं खत्म नहीं हो जाती, इस नोटिस बोर्ड के पीछे बने हुए हैं, एक-दो नहीं, सैकड़ों लॉकर जिन्हें परिजनों-परिचितों के नाम से अलॉट किया गया है। इनमें उस व्यक्ति के नाम का उपहार रखा जाता है। श्री डागा की एक और अनूठी कृति है, 2928 फुट लंबे कपड़े पर लिखे 2928 स्लोगन। इनमें सिर्फ और सिर्फ गाय की ही महिमा का गुणगान है। इसकी लंबाई पर मत जाइए क्योंकि यह लगातार बढ़ रही है लेकिन किसी रिकॉर्ड के लिए नहीं, बल्कि हर उस इंसान के लिए जो पर्यावरण और प्रकृति को बचाने के लिए कुछ करना चाहता है। मक्सद गाय के साथ सृष्टि को बचाना और संवारना है, कल के लिए। जीवन संगिनी शारदा जी के साथ बिट्या पिंकी को भी पर्यावरण संरक्षण का पाठ पढ़ाया जिसके तहत इनकी बिट्या बिना पेड़ काटे हेण्डमेड कागज के उत्पादन एवं उत्पादन निर्माण के उद्योग में संलग्न है।





पेड़ सम्पूर्ण जीवन का आधार- श्री डागा

श्री डागा पेड़ों को सर्वाधिक महत्व देने का कारण इससे पर्यावरण संरक्षण को जुड़ा हुआ तो मानते ही हैं, साथ ही इसे सम्पूर्ण जीवन का आधार भी मानते हैं। उनका कहना है कि पेड़ स्वयं किसी भी परिवार के लिये आजीविका का आधार भी बन सकते हैं। वे जीवन के लिये ऑक्सीजन तो देते ही हैं साथ ही अन्य ऐसे उत्पाद भी देते हैं, जिनके विक्रय से संपूर्ण आर्थिक आवश्यकता की पूर्ति भी की जा सकती है। वहीं यदि हम पेड़ों को नष्ट करते हैं, तो हम न सिर्फ पर्यावरण को क्षति पहुँचाते हैं, बल्कि देश की प्राकृतिक संपदा का भी नुकसान कर रहे हैं।

व्यवसाय से सीए इंदौर निवासी जगदीशप्रसाद बाहेती व उनकी धर्मपत्नी सुनीता बाहेती ने 'हरियाली की खुशहाली' बिखेरने का ऐसा संकल्प लिया कि स्वयं का जीवन ही हराभरा कर लिया। वे इतने पर ही नहीं थमे, बल्कि जैसे भी हो सके निःस्वार्थ भाव से हरियाली अभियान को आमजन में भी जुनून की तरह पहुँचाने के लिए तन-मन से जुटे हुए हैं।

पर्यावरण प्रेमी

बाहेती छन्दपति

सीए जगदीश बाहेती व उनकी धर्मपत्नी सुनीता बाहेती ने इंदौर स्थित अपने निवास को पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से हरियाली से सजाने का एक छोटा सा प्रयास वर्ष 2002 में प्रारंभ किया था। आज उनके बच्चे भी इस अभियान का हिस्सा बन चुके हैं। परिणाम ये है कि वे अपने निवास स्थान को हरियाली से पूरी तरह आच्छादित कर चुके हैं। उनके निवास पर करीब 150 वैरायटी के गुलाब तथा साथ ही करीब 2 हजार पौधे उन्होंने लगाए हैं।

'सर्वश्रेष्ठ उद्यान' से 'भगीरथ' का सफर

बाहेती दंपत्ति ने उद्यानिकी विभाग मप्र शासन एवं मालवा रोज सोसायटी, इंदौर द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली उद्यान स्पर्धा एवं गुलाब प्रदर्शनी में पिछले 14 वर्षों से लगातार 'सर्वश्रेष्ठ गुलाब उद्यान' का प्रथम पुरस्कार जीता है जो कि एक रिकॉर्ड है। इनके साथ ही कट फ्लावर प्रतियोगिता में भी उनके उद्यान के गुलाबों को कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। इसमें गुलाबों की गुणवत्ता को देखते हुए उनके गुलाब को 'क्वीन ऑफ रोज' का महत्वपूर्ण पुरस्कार प्रदान किया जा चुका है। उनके प्रकृति प्रेम को देखते हुए समाचार पत्र नईदुनिया द्वारा उन्हें 'हरियाली के भागीरथ'



अवॉर्ड से भी नवाजा गया है और इस बात का प्रकाशन उनके द्वारा पेपर के प्रथम पेज पर किया गया था। उनके दोनों बच्चों पूर्वा बाहेती एवं अक्षत बाहेती ने प्रकृति की गोद में ही पढ़-लिखकर चार्टर्ड अकाउंटेंट की परीक्षा अखिल भारतीय स्तर पर रैंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की है।

पर्यावरण की ज्योति जलाते

पर्यावरण संरक्षण हेतु उन्होंने कई स्थानों पर पौधारोपण करवाया। उन्हें जो भी इच्छुक लोग मिल जाते हैं, उनको वे मार्गदर्शन करने के साथ-साथ निःशुल्क पौधे भी उपलब्ध करवाते हैं। साथ ही पौधों के रखरखाव एवं देखभाल हेतु उचित जानकारी भी देने की कोशिश करते हैं। इस हेतु मालवा रोज सोसायटी एवं कृषि विभाग के विशेषज्ञों के साथ कार्यशाला भी आयोजित करवाते हैं। इसके लिए कोई शुल्क भी नहीं लिया जाता है। श्री बाहेती को तो इतना जुनून है कि अगर रास्ते में कोई बनता हुआ मकान देखते हैं तो उसके मालिक को ढूँढकर इतना जरूर कह ही देते हैं कि भाई साहब थोड़ी जगह छोड़ना ताकि आप कुछ पेड़ या पौधे लगा सको, इसमें कोई ज्यादा खर्चा भी नहीं आता है।

पर्यावरण प्रेमी...

**22 वर्षों से चला रहे मुहिम
‘एक परिवार – एक सुरक्षित पौधा’
पौधों के पितामह**

२याम माहेश्वरी

नीम के 1 लाख पौधे रोपे ▪ बच्चों की तरह की परवरिश ▪ काम अब भी जारी

जब एक परिवार एक या दो बच्चों को पाल पोसकर बढ़ाकर देता है, तो फिर वह मात्र एक पौधे को रोपकर उसकी देखरेख कर उसे बढ़ा क्यों नहीं कर सकता? ठीक इसी सोच के साथ लोगों में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी के भाव की अलख जगा रहे हैं, उज्जैन समाजसेवी श्याम माहेश्वरी। इसे लेकर चल रहे उनके “एक परिवार व एक पौधा” अभियान ने उन्हें विशिष्ट पहचान दे दी है।

वर्तमान में हरियाली कम सिर्फ इसलिये नहीं हो रही है कि पेड़ काटे जा रहे हैं, बल्कि उसका मूल कारण यह भी है कि हम पेड़-पौधों के प्रति अपनी जिम्मेदारी भूल गये हैं। अपनी आवश्यकता के लिये तो पेड़-पौधों की कटाई वर्षों से होती आई है, लेकिन पहले उनकी पूजा होती थी, वे परिवार के सदस्य की तरह महत्वपूर्ण थे। अतः इनका अनावश्यक दोहन नहीं होता था। वर्तमान दौर में कमी यही है कि पेड़-पौधों के प्रति हमारा पारिवारिक सदस्य की तरह जुड़ाव व लगाव नहीं रहा, अन्यथा हरियाली के विनाश की समस्या ही नहीं रहती। इसी सोच के साथ उज्जैन निवासी वरिष्ठ समाजसेवी श्याम माहेश्वरी (पलोड़) गत 22 वर्षों से एक मुहिम चला रहे हैं, “एक परिवार-एक सुरक्षित पौधा।”

ऐसे चलता है उनका अभियान

पेशे से प्रॉफर्टी ब्रोकर श्री माहेश्वरी का नाम पौधों के पितामह के रूप में ख्यात है। बीते 22 साल में नीम के 1 लाख से अधिक पौधे खुद ने रोपे व बच्चों की तरह इनकी परवरिश भी की है। इतना ही नहीं उन्होंने अपने मिलने वाले 2 हजार लोगों को उनके जन्म दिन पर चिट्ठियां लिखकर व मोबाइल से एसएमएस भेज पौधे भी रोपवाए। इस प्रेरक कार्य के लिए इन्हें कई बार पर्यावरण मित्र सम्मान से नवाजा गया। वर्तमान में 67 की उम्र में भी पौधों के प्रति इनकी गहरी लगन है कि वे नित्य एक पौधा अवश्य रोपते हैं। पर्यावरण प्रेमियों को वे अपने खर्च पर नीम और तुलसी का पौधा निःशुल्क देते हैं। वर्तमान में उनका यह अभियान नगर निगम के पूर्व अध्यक्ष प्रकाश सिंहोड़ की प्रेरणा व लायंस क्लब उज्जैन महाकाल के माध्यम से चल रहा है।

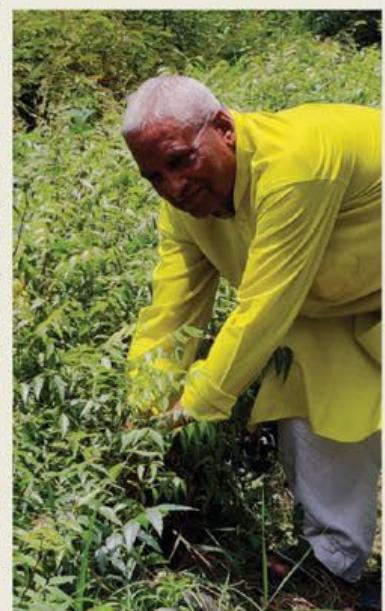
ऐसे हुई थी अभियान की शुरूआत

श्री माहेश्वरी 22 साल पहले सिर्फ परिवार व समाज कल्याण पर केंद्रीत थे। फिर जब लायंस क्लब महाकाल के अध्यक्ष बने तो बड़े भाई श्री मदनलाल पलोड़ की प्रेरणा से पर्यावरण के लिए काम करने का

संकल्प ले लिया। बस पौधे लगाने की ऐसी लगन लगी कि ‘एक परिवार, एक सुरक्षित पौधा’ मुहिम शुरू कर रोज पौधारोपण करने व करवाने लगे। उन्होंने अपने साथियों से भी कई पौधे रोपवाए। मिलने वाले जिन 2 हजार लोगों के पते, कांटेक्ट नंबर थे, उन्हें जन्मदिन पर शुभकामना संदेश देने के साथ पौधे उनसे रोपने की अपील भी की और रिटर्न गिफ्ट में पौधे रोपने वाली तस्वीर मांगी। इस बार भी हरियाली अमावस्या पर फिर गोवर्धनधाम कालोनी के बगीचे में 21 पौधे रोपे गये। रोपण में नीम ही क्यों, इस सबाल पर श्री माहेश्वरी बोले कि नीम एक औषधीय छायादार पौधा है, जो कम पानी में भी पनप जाता है। इसलिए नीम के पौधे ज्यादा रोपे। वरना इसके अलावा आंवला, करंज, बरगद और फल-फूल वाले पौधे भी श्री माहेश्वरी ने रोपे हैं।

परिवार भी बना पर्यावरण प्रेमी

श्री माहेश्वरी गत 22 वर्षों से पौधारोपण व पेड़ों के संरक्षण का जो अभियान चला रहे हैं, इसने उनके पूरे परिवार को भी पर्यावरण प्रेमी बना दिया है। उनके इस अभियान में धर्मपत्नी मनोरमा माहेश्वरी, पुत्र सुनील कुमार, पुत्रवधु सीमा, पौत्र विवेक के साथ ही 10 वर्षीय नन्ही पौत्री तनिष्का भी तन-मन से सहयोग देने में पीछे नहीं है। श्री माहेश्वरी की समाजसेवा भी यहीं तक सीमित नहीं है, वे दिव्यांगों के उत्थान के लिए भी काम करते हैं। लॉकडाउन से पहले समर्थ सेवा संस्थान के माध्यम से उन्होंने अपने एवं सहयोगी विट्टल नागर के खर्च पर 180 दिव्यांगों को जगत्राथपुरी, रामेश्वरम, द्वारका, तिरुपति, पशुपतिनाथ की निःशुल्क यात्रा कराई। श्री माहेश्वरी ने श्री माहेश्वरी टाइम्स के सभी पाटकों से प्रतिवर्ष एक सुरक्षित पौधा लगाने की अपील की है।



जज्बा हो तो कुछ भी असंभव नहीं है। इसी वाक्य को सिद्ध कर दिखाया है लातूर निवासी डॉ. पवन लड्डा ने। वे व्यवसाय से तो चिकित्सक हैं, लेकिन ग्रीन लातूर बनाने के जज्बे ने उनकी एक ऐसी टीम खड़ी कर दी, जो हरियाली को समर्पित होकर सतत रूप से वृक्ष बचाने व वृक्ष लगाने में जुटी हुई है।

• □ टीम SMT •

पेड़ों के लिये बनाई ग्रीन ट्री टीम

डॉ. पवन लड्डा

डॉ. पवन लड्डा द्वारा वर्ष 2015 में स्थापित लातूर ट्री मूवमेंट की ग्रीन लातूर ट्री टीम अपनी स्थापना से ही पेड़ों को बचाने तथा उन्हें लगाने का काम कर रही है। इसने 1 जून 2019 से 20 जुलाई 2020 तक 422 दिनों में अभूतपूर्व रूप से 24860 छोटे और बड़े पेड़ लगाए। लॉकडाउन के 70 दिनों के भीतर, ग्रीन आर्मी के इन सदस्यों ने 1880 बड़े पेड़ लगाए। ये सदस्य एक घर, एक पेड़, एक महिला, एक पेड़, एक नल, एक पेड़ की अवधारणा को साकार करते हुए लगातार 420 दिनों से काम कर रहे थे। गर्मियों के दौरान टीम ने शहर की सड़कों पर सभी पेड़ों को जीवित रखने के लिए पानी के 266 छोटे और बड़े टैंकरों का इस्तेमाल किया और उन्हें पानी पिलाया।

पूरी टीम है समर्पित

पूर्ण समर्पित भाव से उनकी संस्था पेड़-पौधों के लिए काम कर रही है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि इस 1 जून 2019 से 20 जुलाई, 2020 तक, इस टीम ने एक भी दिन बिना अवकाश मनाये वृक्षों के रख-रखाव का निरंतर कार्य किया है।

हर दिन सुबह 6 से 9 बजे तक, उन्होंने गड्ढों को खोदने, पौधों को लाने, पेड़ों को पानी देने, पौधों को रोपने, जैसे सभी काम किए, वह भी बिना किसी सरकारी मदद के। इससे ग्रीन बेल्ट में कई पेड़ बच गए। साथ ही भविष्य में पेड़ों के माध्यम से स्वच्छ हवा प्रदान करने के लिए 26 स्थानों पर पेड़ लगाकर हरित ऑक्सीजन क्षेत्र की स्थापना भी की गई। संस्था ने मियावाकी जैसी परियोजनाएं पूरी कीं। शहर के कई मुख्य चौराहों को सजावटी पेड़ों से सजाया गया था।

नीम है इस संस्था का अध्यक्ष

ग्रीन ट्री टीम शहर के सभी हिस्सों जैसे डिवाइडर, जिला खेल



परिसर, बस स्टैंड, विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों में सड़क के दोनों ओर पेड़ लगा रही है। टीम के पास कोई अध्यक्ष और कोई पदाधिकारी नहीं है। कोई बैंक खाता भी नहीं है। टीम का पेड़ इसका अध्यक्ष है और वाड-पिंपल गाइड है। शहर में जन्मदिन, शादी, वर्षगांठ और दोस्तों की वर्षगांठ के अवसर पर, दानदाताओं की उपस्थिति में पेड़ों को लगाने का अनुरोध किया जाता है और लगाया जाता है। पेड़ लगाने और पेड़ की देखभाल के इस आंदोलन से ग्रीन लातूर ट्री टीम के डॉ. पवन लड्डा के साथ नगर निगम पार्षद इमरान सैयद, डॉ. भास्कर बोरगांवकर, डॉ. कल्याण बरमडे, पद्माकर बागल, प्रमोद निपानिकर, मनमोहन डागा, वैशाली लोंडे, श्वेता लोंडे, ऋषिकेश दरेकर, गंगाधर पवार, सुहास पाटिल, जफर शेख, हितेश डागा, चेतन्य प्रयाग, डॉ. शैलेष पडगीलवार, मिर्झा मोईझा, सीताराम कनजे, नामदेव सुब्बनवाड, डॉ मंजुषा कुलकर्णी सुलेखा कारपुरक, डॉ शांतिलाल शर्मा, सार्थक शिंदे, ऋषिकेश पोदार, शैलेश सुर्यवंशी, कल्पना फरकांडे, स्वाती यादव, पूजा निचडे, प्रफुल्ला पाटिल, विमल रेड्डी, विकास कातपुरे आदि कई प्रबुद्धजन जुड़े हुए हैं। ये सभी पेड़ों को लाने, गड्ढों को खोदने, पेड़ लगाने, पेड़ों को बांधने, पेड़ को पानी देने आदि के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं।



सपनों की बगिया सजाती निधि लाहोटी

यदि हम अपने घर को हरियाली से सजाकर सपनों की बगिया बनाना चाहते हैं, तो इसमें वास्तव में कोई बाधा यदि कोई हो सकती है, तो वह है सिर्फ इच्छाशक्ति की कमी। अन्यथा स्थान की कमी हो या अन्य बाधा। दृढ़ संकल्प के सामने सभी नतमस्तक हो जाती हैं। आईये जानें कोटा निवासी निधि लाहोटी की जुबानी उनकी कहानी।

मधु ललित बाहेती, कोटा

पर्यावरण संरक्षण हेतु एक छोटा सा प्रयास मैंने भी किया है। बागवानी के बचपन के शौक को जीवंत करने हेतु अपने घर की एक बालकनी को बगीचे का रूप दे दिया है। इसकी शुरुआत मैंने चार गमलों से की थी और आज छोटे-बड़े 125 से ज्यादा पौधे मेरी बगिया की शोभा बढ़ा रहे हैं। यकीन मानिए, ये हमारे घर का सबसे खूबसूरत हिस्सा बन गया है। महंगे से महंगे शो-पीस भी इनकी हरियाली के आगे फीके हैं। रसोई-घर हो या बैटक, शयन कक्ष हो या बाथरूम सभी जगह छोटे-बड़े गमलों से की गई सजावट आंखों और मन को शीतलता देती है।

परिवार के सदस्य की तरह देखभाल

पौधों में भी जान होती है, जीवन होता है। ये भी हमारी भावनाओं को बगूबी समझते हैं। यदि इन्हें प्यार और ममता से सीचे व संभालें तो बदले में ये भी हम पर अपनी खूबसूरत छठा व प्रेम लुटाने में पीछे नहीं रहते हैं। मैं अपने पेड़-पौधों को बच्चों की तरह संभालती हूं। गर्मी, सर्दी, बरसात हर मौसम में इनका पूरा ध्यान रखती हूं। किसको खाद, किसको दवा और किसको कितना पानी चाहिए इसका पूरा हिसाब रखती हूं। ज्यादातर जैविक खाद का इस्तेमाल करती हूं, रसोई घर के वेस्ट संबंधियों के छिलके, प्रयोग आ चुकी चाय पती और नींवू व केले के छिलकों से घर में ही तैयार की गई खाद डालती हूं। ढेर सारे प्रेम और निष्ठा व थोड़ी सी मेहनत और सूझ-बूझ से घर को हरियाली से सजाया जा सकता है।

खुशहाली की सजी बगिया

हर सबेरे उठते ही फर्लॉक्स के रंग-बिरंगे फूल मुझे ऊर्जा से भर देते हैं और सांझ ढलने पर रातरानी की मनमोहक सुगंध सरे घर-आंगन को महका देती है। मोगरा और अनंत की खुशबू, गुलाब और ऐडिनियम के सुख्ख रंग, बोगनवेल और पीस लिली की सुंदरता और मनीप्लांट की बढ़ती हुई बेलें तन-मन को प्रसन्नता से भर देती हैं। नीम, तुलसी, एलोवेरा और गिलोय तो हमारे फैमिली डॉक्टर बन चुके हैं। बागवानी एक प्रकार का ध्यान भी है। ये आपके मन को शांति देता है। स्वयं पौधा रोपना एवं उसको प्रतिदिन बढ़ते हुए देखना, आपको सकारात्मकता एवं खुशियों से भर देता है।

पूरा परिवार इसमें साथ-साथ

पेड़-पौधों की देखभाल और साज-संवार में मुझे परिवार का भरपूर सहयोग मिलता है। मेरे पति प्रमोद लाहोटी, जो कि पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट है, मुझे बागवानी में बहुत मदद करते हैं। हम दोनों अक्सर नए पौधे लेने नसरी जाते हैं। उन्हें भी हरियाली बहुत भाती है। हमने अपने कार्यालय के परिसर को भी पेड़-पौधों से सजा रखा है। वहां के हर कैविन में आपको हरियाली की खूबसूरती नजर आएगी। बेटा अक्षत अभी सीए फाउंडेशन का छात्र है और फोटोग्राफी उसका शौक है। पौधों की खूबसूरती को कैमरे में कैद करने में उसका पूरा सहयोग रहता है। बेटी सौम्या भी गुड़ाई करने और खाद देने में मेरे साथ रहती है।





एवरेस्ट के प्रथम माहेश्वरी आयोही वेंकटेश माहेश्वरी



वर्ष 2018 में 46 साल की उम्र में आदित्य बिरला फैशन एंड रिटेल लिमिटेड के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट के पद पर रहते हुए प्रथम प्रयास में ही विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट (8848 मीटर) पर चढ़ाई करके, ऐसा करने वाले मुंबई निवासी वेंकटेश माहेश्वरी पहले माहेश्वरी बने हैं। वेंकटेश की इस उपलब्धि ने विश्व भर में बसे संपूर्ण माहेश्वरी समाज को गौरवान्वित किया है। इस उपलब्धि के पश्चात उनके प्रेरक उद्घोषन को सुनने के लिए टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, आदित्य बिरला ग्रुप आदि बहुत सारे कार्पोरेट ग्रुप व एसोसिएट्स ने इन्हें आमंत्रित किया है। इस उपलब्धि पर न सिर्फ माहेश्वरी समाज अपितु संपूर्ण कार्पोरेट क्षेत्र ने भी गर्व महसूस किया। कारण यही है कि ऐसा साहसिक व कठिन कार्य संभवतः कार्पोरेट क्षेत्र में भी दुर्लभ ही है।

मार्केटिंग व प्रबंधन के विशेषज्ञ

माहेश्वरी समाज के प्रथम माउंट एवरेस्ट आयोही वेंकटेश माहेश्वरी का जन्म 1972 में हुआ था। बी.कॉम. तक शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात उन्होंने मार्केटिंग के क्षेत्र में एमबीए की शिक्षा 1994 में पूर्ण की। इसके बाद पिछले 25 वर्षों में विश्वभर के कई देशों जैसे ब्रिटेन, कनाडा आदि एवं भारत में रेमंड एपरल्स, टीसीएस, आदित्य बिडला फैशन व रिटेल लि. आदि कंपनियों

शारीरिक शक्ति के उपयोग जैसे क्षेत्र वाले के लिए यदि यह कहा जाए तो स्वाभाविक होगा लेकिन इससे बिल्कुल भिन्न प्रबंधन क्षेत्र में कार्य कर रहे वेंकटेश माहेश्वरी ने विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट के शिखर पर पहुंचकर कीर्तिमान बनाया है, तो अवश्य आश्चर्य होगा। लगभग 8848 मीटर ऊँची इस दुर्गम पर्वत की चोटी पर पहुंचने वाले वेंकटेश प्रथम माहेश्वरी पर्वतारोही हैं। ■ टीम SMT

में कार्य किया। रिटेल सेक्टर में उनका विश्वस्तरीय कौशल विशेष रूप से सप्लाई चेन, लॉजिस्टिक, मर्केन्डाईज़, प्लानिंग व कार्पोरेट ऑपरेशन आदि विधाओं में परिपूर्ण था। इन सभी विधाओं में डिजिटलाइजेशन के माध्यम से कार्य को गति देने में उन्हें विशेष महारथ हासिल रही। वर्तमान में आप अपनी कन्सल्टेंसी फर्म के माध्यम से विभिन्न उद्योग समूह को अपनी विशिष्ट सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

अपने निवास पर पर्वतारोहण का प्रारंभिक अभ्यास

माउंट एवरेस्ट की चढ़ाई के पूर्व उन्होंने 18 माह में अपने आपको शारीरिक रूप से तैयार किया। इसके तहत मुंबई में जिस भवन में निवास कर रहे हैं, उस 50 मंजिला भवन में हाथ एवं पांव पर वजन रख कर एवं मास्क आदि पहन कर पहाड़ों पर चढ़ाई जैसी अवस्था बना कर दिन में कम से कम 8 बार ऊपर-नीचे चढ़ने उतरने का दुर्गम कार्य किया। बिल्ला समूह में कार्य करते हुए भी 18 माह में उत्तराखण्ड की कई छोटी-छोटी पहाड़ियों पर चढ़ाई करने का सफलतापूर्वक अभ्यास किया। कई बार तो 7-8 दिनों तक लगातार पहाड़ों पर रहते हुए नियमित चढ़ाई का अभ्यास किया एवं पुनः मुंबई लौटकर अपने कार्य क्षेत्र को भी जारी रखा। उनकी इस लगन का परिणाम इस विश्वस्तरीय उपलब्धि के रूप में सामने आया।





कैलाशचंद्र लङ्घा, जोधपुर

आदतीय संस्कृति में वृक्षों को इतना अधिक महत्व दिया गया है कि उनकी पूजा करने तक का विधान बना दिया गया है। इसके पीछे हृषकी उपयोगिता ही है, जो बनाती है, हन्ते सूष्टि के लिये खास। संसार में पास जाने वाले हर एक पेड़-पौधे में कोई ना कोई औषधीय गुण भी जाऊ द्द होता है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि मध्यम आकार के पेड़ और छड़े-छड़े वृक्षों में भी गजब के औषधीय गुणों की अद्भुतता होती है। आईये जानें कुछ ऐसे वृक्षों को जिनमें छुपा है, औषधि का खजाना।

औषधियों का अकूत भंडार

वृक्ष



► बेल :

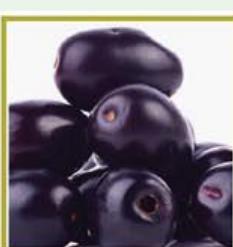
मंदिरों, आंगन, गास्टों के आस-पास प्रचुरता से पाये जाने वाले इस वृक्ष की पत्तियां शिवजी की आराधना में उपयोग में लाई जाती हैं। बेल की पत्तियों में टेनिन, लोह, कैल्शियम, पोटेशियम और मैग्नीशियम जैसे रसायन पाए जाते हैं। पत्तियों का रस यदि धाव पर लगाया जाए तो धाव जल्द सूखने लगता है। गुजरात के डांग जिले के आदिवासी बेल और सीताफल पत्तों की समान मात्रा मधुमेह के रोगियों को देते हैं। गर्भ में पसीने और तन की दुर्गंध को दूर भगाने के लिए यदि बेल की पत्तियों का रस नहाने के बाद शरीर पर लगा दिया जाए तो समस्या से छुटकारा मिल सकता है।



संपूर्ण भारत में दिखाई देता है। इसमें मार्गोसीन, निम्बिडिन, निम्बोस्टेरोल, स्टियरिक एसिड, ओलिव एसिड, पार्माटिक एसिड, एल्वोलाइड, ग्लूकोसाइड और वसा अम्ल आदि पाए जाते हैं। निंबैलियों को पीसकर रस तैयार कर लिया जाए और इसे बालों पर लगाया जाए तो जूएं मर जाते हैं। डांग-गुजरात के आदिवासियों के अनुसार नीम के गुलाबी कोमल पत्तों को चबाकर रस चूसने से मधुमेह रोग में आराम मिलता है।

► जामुन :

जंगलों, गांव व खेतों के किनारे और उद्यानों में जामुन के पेड़ देखे जा सकते हैं। जामुन में लौह और फास्फोरस जैसे तत्व प्रचुरता से पाए जाते हैं। इसमें कोलीन तथा फोलिक एसिड भी भरपूर होते हैं। पातालकोट के आदिवासी मानते हैं कि जामुन के बीजों के चूर्ण की दो-दो ग्राम मात्रा देने से बच्चे बिस्तर पर पेशाब करना बंद कर देते हैं। जामुन के ताजे पत्तों की लगभग 50 ग्राम मात्रा लेकर पानी (300 मिली) के साथ मिक्सर में रस पीस लें और इस पानी को छानकर कुल्ला करें, इससे मुंह के छाले पूरी तरह से खत्म हो जाते हैं।

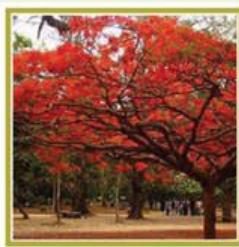


► नीम : प्राचीन आर्य ऋषियों से लेकर आयुर्वेद और आधुनिक विज्ञान भी नीम के औषधीय गुणों को मानता चला आया है। नीम व्यापक स्तर पर



► नीलगिरी :

यह पेड़ काफी लंबा और पतला होता है। इसकी पत्तियों से प्रान्त होने वाले तेल का उपयोग औषधि और अन्य रूप में किया जाता है। नीलगिरी की पत्तियां लंबी और नुकीली होती हैं जिनकी सतह पर गांठ पाई जाती हैं और इन्हीं गाठों में तेल संचित रहता है। शरीर की मालिश के लिए नीलगिरी का तेल उपयोग में लाया जाए तो गंभीर सूजन तथा बदन में होने वाले दर्द से छुटकारा मिलता है। वैसे आदिवासी मानते हैं कि नीलगिरी का तेल जितना पुराना होता जाता है, इसका असर और भी बढ़ता जाता है। इसका तेल जुकाम, पुरानी खांसी से पीड़ित रोगी को छिड़कर सुंघाने से लाभ मिलता है।



► पलाश : मध्यप्रदेश के लगभग सभी इलाकों में पलाश या टेसू प्रचुरता से पाया जाता है। इसकी छाल, पुष्प, बीज और

गोंद सभी औषधीय महत्व के होते हैं। पलाश के गोंद में थायमिन और रिबोफ्लेविन जैसे रसायन पाए जाते हैं। पतले दस्त होने के हालात में यदि पलाश का गोंद खिलाया जाए तो अतिशीघ्र आराम मिलता है। पलाश के बीजों को नींबू रस में पीसकर दाद, खाज और खुजली से ग्रसित अंगों पर लगाया जाए तो फायदा होता है।



►पीपल :

पीपल के औषधीय गुणों का बखान आयुर्वेद में भी देखा जा सकता है। मुंह में छाले हो जाने की दशा में यदि पीपल की छाल और पत्तियों के चूर्ण से कुल्ला किया जाए तो आराम मिलता है। पीपल की एक विशेषता यह है कि यह चर्म-विकारों को जैसे-कुछ, फोड़े-फुंसी, दाद-खाज और खुजली को नष्ट करता है।

डांगी आदिवासी पीपल की छाल घिसकर चर्म रोगों पर लगाने की राय देते हैं। कुष्ठ रोग में पीपल के पत्तों को कुचलकर रोगग्रस्त स्थान पर लगाया जाता है तथा पत्तों का रस तैयार कर पिलाया जाता है।

►अमलतास :

झूमर की तरह लटकते पीले फूल वाले इस पेड़ को सुंदरता के लिए अक्सर बाग-बगीचों में लगाया जाता है हालांकि जंगलों में भी इसे अक्सर उगता हुआ देखा जा सकता है। इसके पत्तों और फूलों में ग्लाइकोसाइड, तने व जड़ की छाल में टेनिन के अलावा ऐन्थ्राकिनीन, फ्लोवेफिन तथा फल के गूदे में शर्करा, पेक्टीन, ग्लूटीन जैसे रसायन पाए जाते हैं। पेट दर्द में इसके तने की छाल को कच्चा चबाया जाए तो दर्द में काफी राहत मिलती है। पातालकोट के आदिवासी बुखार और कमजोरी से राहत दिलाने के लिए कुटकी के दाने, हर्ष, आंवला और अमलतास के फलों की समान मात्रा लेकर कुचलते हैं और इसे पानी में उबालते हैं, इसमें लगभग पांच मिली शहद भी डाल दिया जाता है और ठंडा होने पर रोगी को दिया जाता है।

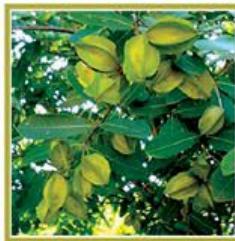


►रीठा :

एक मध्यम आकार का पेड़ होता है जो अक्सर जंगलों के आसपास देखा जा सकता है। इसके फलों में सैपोनिन, शर्करा और पेक्टिन नामक रसायन पाए जाते हैं। आदिवासियों की मानी जाए तो रीठा के फलों का चूर्ण नाक से सुधने से आधे सिर का दर्द या माइग्रेन खत्म हो जाता है।

पातालकोट के आदिवासी कम से कम 4 फल लेकर इसमें 2 लौंग की कलियां डालकर कूट लेते हैं और चिमटी भर चूर्ण लेकर एक चम्मच पानी में मिला लेते हैं और धीरे-धीरे इस पानी की बूंदों को नाक में टपकाते हैं। इनका मानना है कि यह माइग्रेन के इलाज में कारगर है।

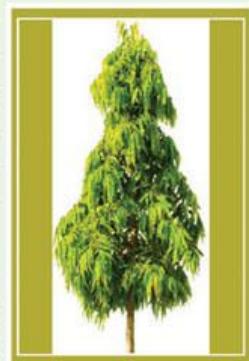
►अर्जुन : अर्जुन का पेड़ आमतौर पर जंगलों में पाया जाता है। यह धारियों-युक्त फलों की वजह से आसानी से पहचान में आता है इसके फल कच्चेपन में हरे और पकने पर भूरे लाल रंग के होते हैं। औषधीय महत्व में इसकी छाल और फल का ज्यादा उपयोग होता है। अर्जुन की छाल में



अनेक प्रकार के रासायनिक तत्व पाये जाते हैं जिनमें कैल्शियम कार्बोनेट, सोडियम व मैग्नीशियम आदि प्रमुख हैं। आदिवासियों के अनुसार अर्जुन की छाल का चूर्ण तीन से छह ग्राम गुड़, शहद या दूध के साथ दिन में दो या तीन बार लेने से दिल के मरीजों को काफी फायदा होता है। वैसे अर्जुन की छाल के चूर्ण को चाय के साथ उबालकर भी ले सकते हैं। चाय बनाते समय एक चम्मच इस चूर्ण को डाल दें, इससे उच्च-रक्तचाप भी सामान्य हो जाता है।

►अशोक :

ऐसा कहा जाता है कि जिस पेड़ के नीचे बैठने से शोक नहीं होता, उसे अशोक कहते हैं। अशोक का पेड़ सदैव हरा-भरा रहता है, जिस पर सुंदर, पीले, नारंगी रंग के फूल लगते हैं। अशोक की छाल को कूट-पीसकर कपड़े से छानकर रख लें। इसे तीन ग्राम की मात्रा में शहद के साथ दिन में तीन बार सेवन करने से सभी प्रकार के प्रदर्श में आराम मिलता है। पातालकोट के आदिवासियों के अनुसार यदि महिलाएं अशोक की छाल 10 ग्राम को 250 ग्राम दूध में पकाकर सेवन करें तो माहवारी संबंधी परेशानियां दूर हो जाती हैं।



►कचनार :

हल्के गुलाबी, लाल और सफेद रंग लिए फूलों वाले इस पेड़ को अक्सर घरों, उद्यानों व सड़कों के किनारे सुंदरता के लिए लगाया जाता है। मप्र के ग्रामीण अंचलों में दशहरे के दौरान इसकी पत्तियां आदान-प्रदान कर एक-दूसरे को बधाइयां दी जाती हैं। इसे सोना-चांदी की पत्तियां भी कहा जाता है। पातालकोट के आदिवासी व हर्बल जानकार जड़ों के दर्द और सूजन में आराम के लिए इसकी जड़ों को पानी में कुचलते हैं और उबालते हैं। इसको दर्द और सूजन वाले भागों पर बाहर से लेपित करने से काफी आराम मिलता है। मधुमेह की शिकायत होने पर रोगी को रोज सुबह खाली पेट इसकी कच्ची कलियों का सेवन करना चाहिए।

►गुंदा :

गुंदा मध्यभारत के बनों में देखा जा सकता है, यह एक विशाल पेड़ होता है जिसके पत्ते चिकने होते हैं। आदिवासी अक्सर इसके पत्तों को पान की तरह चबाते हैं और इसकी लकड़ी इमारती उपयोग की होती है। इसे रेतु के नाम से भी जाना जाता है। छाल की लगभग 200 ग्राम मात्रा लेकर इतने ही मात्रा पानी के साथ उबाला जाए और जब यह एक चौथाई शेष रहे तो इससे कुल्ला करने से मसूड़ों की सूजन, दांतों का दर्द और मुंह के छालों में आराम मिल जाता है। छाल का काढ़ा और कपूर का मिश्रण तैयार कर सूजन वाले हिस्सों में मालिश की जाए तो फायदा होता है।





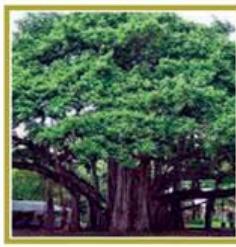
► फालसा :

फालसा एक मध्यम आकार का पेड़ है जिस पर छोटी बेर के आकार के फल लगते हैं। यह मध्यभारत के वनों में प्रचुरता से पाया जाता है। खून की कमी होने पर फालसा के पके फल खाना चाहिए, इससे खून बढ़ता है। अगर शरीर में त्वचा में जलन हो तो

फालसा के फल या शर्करा को सुबह-शाम लेने से अतिशीघ्र आराम मिलता है। यदि चेहरे पर निकल आयी फुंसियों में से मवाद निकलता हो तो उस पर फालसा के पत्तों को पीसकर लगाने से मवाद सूख जाता है और फुंसिया ठीक हो जाती है।

► बरगद :

बरगद को 'अक्षय वट' भी कहा जाता है, क्योंकि यह पेड़ कभी नष्ट नहीं होता है। बरगद का वृक्ष घना एवं फैला हुआ होता है। पेशाब में जलन होने पर दस ग्राम बरगद की हवाई जड़ों का बारीक चूर्ण, सफेद जीरा और इलायची (दो-दो ग्राम) का बारीक चूर्ण एक साथ गाय के ताजे दूध के साथ लिया जाए तो अतिशीघ्र लाभ होता है। पातालकोट के आदिवासियों के अनुसार बरगद की जटाओं के बारीक रेशों को पीसकर दाद-खाज खुजली पर लेप लगाया जाए तो फायदा जरूर होता है।



► बहेड़ा :

बहेड़ा मध्य भारत के जंगलों में प्रचूरता से उगने वाला एक पेड़ है, जो बहुत ऊंचा, फैला हुआ और लंबे आकार का होता है। इसके पेड़ 18 से 30 मीटर तक ऊंचे होते हैं। पुरानी खांसी में 100 ग्राम बहेड़ा के छिलके लें, उन्हें धीमी आंच में तवे पर भून लीजिए और इसके बाद पीस कर चूर्ण बना लीजिए। इसका एक चम्मच शहद के साथ दिन में तीन से चार बार सेवन बहुत लाभकारी है। बहेड़ा के बीजों को चूसने से पेट की समस्याओं में आराम मिलता है और दांतों की मजबूती के लिए भी अच्छा उपाय माना जाता है।



► शहतूत :

मध्य भारत में ये प्रचूर मात्रा में पाया जाता है। वनों, सड़कों के किनारे और बाग-बगीचों में इसे देखा जा सकता है। शहतूत की छाल और नीम की छाल को बराबर मात्रा में कूटकर इसके लेप को लगाने से मुहांसे ठीक हो जाते हैं। शहतूत में विटामिन-ए, कैल्शियम, फास्फोरस और पोटेशियम अधिक मात्रा में मिलता है। इसके सेवन से बच्चों को पर्याप्त पोषण तो मिलता ही है, साथ ही यह पेट के कीड़ों को भी समाप्त करता है। शहतूत खाने से खून से संबंधित दोष समाप्त होते हैं।

700 अधिक प्रोफेशनल बॉयोडेटा के साथ

श्री माहेश्वरी मेलापक

विवाह योग्य युवक-युवतियों की विश्वस्तरीय डायरेक्ट्री

- विभिन्न वर्गों के लिये भिन्न-भिन्न पृष्ठ
- उत्कृष्ट बॉयोडाटा व आकर्षक कलेवर आज ही
- आज ही सुरक्षित करवाएँ अपनी प्रति



पृथक से प्रति बुक करवाने के लिए
शुल्क मात्र (डाक खर्च अतिरिक्त)

अब इंटरेंट ऑफर्स - आपके छात्र

हाइटेक व प्रोफेशनल
युवक-युवतियों की
पहली पसन्द

'श्री माहेश्वरी मेलापक'
स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया खाता क्रं.-31725815057
IFSC Code-SBIN0030062

में जमा कर जमापर्ची की छायाप्रति कार्यालय को प्रेषित करें।

90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे), इंदौर रोड, उज्जैन (मप्र)
मो.- 96305-62161, 74770-72161, 94250-91161
e-mail : srimaheshwarimelapak@gmail.com



माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति के साथ ही सातुड़ी तीज जुड़ी हुई है। प्राचीन मान्यताओं के अनुसार श्रावण वश 72 उमराव पत्थर की प्रतिमा में परिवर्तित हो गए थे, तब उनकी पत्नियों ने अपनी तपस्या से भगवान शिव व माता पार्वती को प्रसन्न किया। भगवान शिव ने उन उमरावों को पुनः जीवन प्रदान किया। इन उमरावों ने पुनः जीवन प्राप्त कर तत्काल तलवार आदि शस्त्रों का त्याग कर तराजु को ग्रहण किया एवं माहेश्वरी समाज की स्थापना की। भगवान शिव ने उमरावों को पुनर्जीवित किया, तब उन्हें भूख लगी। भोजन के लिए वहाँ अन्य वस्तुएं उपलब्ध नहीं होने से प्रभु के आदेश पर वहाँ उपलब्ध बालू रेती के पिंड बनाए गए एवं भगवान शिव ने मंत्र द्वारा उन रेत के पिंडों को सतू के पिंडों में परिवर्तित कर दिया। ये सतू पिंड खाकर हमारे पूर्वजों ने पेट की ज्वाला शांत की एवं क्षत्रिय वर्ण से वणिक वर्ण की ओर नई जीवन यात्रा माहेश्वरी के रूप में प्रारंभ की।

प्राचीन कथा की तरह परंपरा कायम

इसी कथानुसार माहेश्वरी समाज भादवा तीज को विशिष्ट पर्व 'सातुड़ी तीज' के रूप में मनाता आ रहा है। जिस तरह तलवार एवं कृपाण से पिंडों को बड़े कर हमारे पूर्वजों ने खाया उसी तरह आज भी चाकू से (चांदी के सिक्के से भी) या खुरपी से पिंडों को बड़ा करने की परंपरा चली आ रही है। अनेक दिनों से तपस्या में लीन महिलाओं ने उपवास जंगल में उपलब्ध कच्चे दूध, ककड़ी, नींबू एवं प्रभु द्वारा प्रदत्त सतू को ग्रहण करके तोड़ा था। इसी प्रकार आज भी माहेश्वरी महिलाएं तीज के दिन उपवास रखकर शाम को नीमझी की पूजा करके चंद्र दर्शन कर अर्ध्य देती हैं और अपना उपवास कच्चे दूध, ककड़ी, नींबू, सतू से ही खोलती हैं। इस दिन के लिए विशेष मिठान्न

भाद्रपद के कृष्ण पक्ष की तृतीया को जब कजली तीज मनाती है, तो माहेश्वरी समाज इसी दिन गौरी पूजन कर सातुड़ी तीज मनाता है। कारण है, इस दिवस का माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति की पौराणिक कथा से जुड़ा होना। आईये जानें, क्यों मनाते हैं, सातुड़ी तीज और कैसे होता है, इसका आयोजन?

मधु ललित बाहेती, कोटा



माहेश्वरी समाज का विशिष्ट पर्व सातुड़ी तीज



सतू बनाया जाता है। गेहूं का आटा, बेसन, मैदा या चावल के आटे को सेंककर थी, पीसी शककर, सूखे मेवे आदि मिला कर शिवजी के पिंड के समान इसका आकार बनाया जाता है, इसलिए इसे पिंडा भी कहते हैं। यह सतू सभी प्रकार की शक्ति को बढ़ाने वाला पाचक, हल्का और सुपाच्य आहार है।

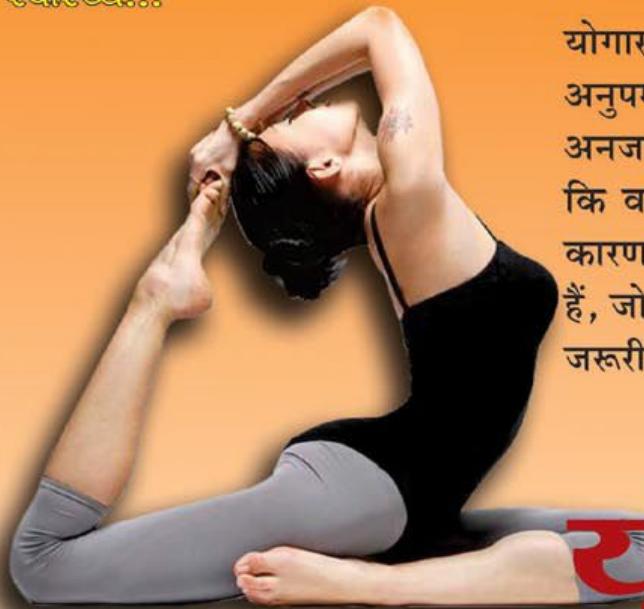
ऐसे होती है तीज की पूजन

यह पर्व हमारे प्रकृति प्रेमी होने का जीवंत उदाहरण है। इसमें हरियाली और पेड़-पौधों का विशेष रूप से पूजन करके पार्वतीजी से अखंड सौभाग्य मांगा जाता है। नीम के पेड़ की डाली (जिस पर नई पत्तियां उगी हुई हों) और आंकड़े के पेड़ की डाली को एक पाटे पर मिट्टी में रोपते हैं, उसके पास ही एक तालाब बनाते हैं जिसमें कच्चा दूध और पानी भरते हैं (मिट्टी से भी बना सकते हैं या परात में भी दूध पानी भर सकते हैं)। इसी को नीमझी रोपण कहते हैं, जो दोपहर में ही कर लिया जाता है। नीम की डाली की पूजा करने के पीछे उद्देश्य यह है कि इस डाली की तरह ही छोटे-छोटे पौधे लगाएं और उनकी देखभाल करें और नीम के औषधीय गुण महत्व तो जगजाहिर हैं, ही। सूर्य देव के अस्ताचल में चले पर संध्या

समय महिलाएं एवं युवतियां शृंगार करके सामूहिक रूप से नीमझी एवं शिव परिवार का पूजन करती हैं। रोली, मोली, मेहंदी, काजल, बिंदी आदि लगाकर नीमझी को गोटे की ओढ़नी ओढ़ते हैं व फूल, दूब चढ़ाते हैं। सतू का भोग लगाते हैं। दीपक एवं अगरबत्ती जलाकर दूध पानी के तालाब में नीमझी, सतू, नींबू, खीरा, नश, मोती, चुनरी, अंगूठी का अक्स उसमें देखते हैं और कहते जाते हैं... 'नीमझी में नीमझी देखी, नीमझी में सतू देखो... देखो सोई टुट्यो...' और गीत गाते गाते पूजा करते हैं।

ऐसे होती है ब्रत की पूर्णाहुति

रात्रि में चंद्रमा उगने के बाद अर्ध्य दिया जाता है। अर्ध्य देते समय बोलते हैं- 'सोना को संकलों, मोत्यां को हार, बड़ी तीज (कजली तीज) का चांद के अरग देवता, जीवो बीर-भरतार।' अर्ध्य देने के बाद पिंडा (सतू) पासा बड़ा किया जाता है। पति या भाई चांदी के सिक्के से पिंडे का एक टुकड़ा तोड़ते (बड़ा करते) हैं। पति द्वारा पत्नी को कच्चे दूध के 7 घूंट पिलाकर उपवास खुलावाया जाता है। महिलाएं कलपना निकल कर सास-ननद को देकर अखंड सौभाग्यवती का आशीर्वाद लेती हैं। इसके बाद पूजा की हुई नीमझी का एक पत्ता सतू के साथ देकर कहती है, 'नीमझी मौठी' माना जाता है कि ऐसा कहने से वे पीहर सुधारल सभी जगहों पर अपने मीठे व्यवहार से सभी का दिल जीत लेती हैं। इस ब्रत का उद्यापन विवाह के बाद प्रथम वर्ष में ही यदि कर सकें तो बहुत अच्छा, नहीं तो जब भी मौका लग जाए तब जरूर करना चाहिए। इसमें 18 पिंडे एवं उसके साथ 18 नीमझी बना कर 18 सुहागिनों को बांटते हैं। सासुजी को कपड़े और कलपना भेंट करते हैं।



योगासन सम्पूर्ण मानवता को भारतीय मनीषियों की अनुपम देन है। कुछ वर्ष पूर्व तक आम दुनिया के लिये अनजान समझे जाने वाले योग की स्थिति आज यह है कि वर्तमान में विश्व योग दिवस मनाया जा रहा है। कारण यह है कि योगासन वह चमत्कारिक लाभ देते हैं, जो कोई दवा भी नहीं दे सकती। बस इसके लिये जरूरी है, सही नियम।

□ टीम SMT

सही नियम से ही करें योगासन

हठयोगप्रदीपिका के अनुसार युवा, वृद्ध, अतिवृद्ध, व्याधित या दुर्बल ऐसे कोई भी व्यक्ति योगासन का अभ्यास कर योगसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। 'योग' यह वच्चों में शारीरिक व्यायाम एवं श्वसन, एकाग्रता, तनावमुक्ति के लिए एक उत्कृष्ट प्रशिक्षण है। इसी को ध्यान में रखते हुए कई योग शिविर ही नहीं बल्कि पाठशालाओं में भी योग का प्रशिक्षण दिया जाता है। वैज्ञानिक स्वयं अब योग के बारे में यह स्वीकार करने लगे हैं कि ये अपने आपमें एक चिकित्सा विज्ञान है और वह भी चिकित्सा की अन्य विधाओं की तरह अत्यंत प्रभावशाली। याद रखें इसमें सही तरीके से किये गये योगासन ही औषधि का काम करते हैं।

ऐसे करें योगासन

- आसनों का अभ्यास प्रायः प्रातःकाल में खाली पेट करना चाहिए। इसके लिए प्रातः 5 से 7 बजे तक का समय सबसे अधिक अनुकूल तथा बेहतर होता है। वास्तव में यदि सुबह समय न हो, तो सायंकाल में आसनों का अभ्यास कर सकते हैं। शौच आदि के बाद ही आसनों का अभ्यास करें।
- योगासनों का अभ्यास पवित्र, स्वच्छ तथा समतल भूमि, जहाँ आवाज न हो ऐसी जगह पर करें।
- योगासनों के अभ्यास के लिए जमीन पर कम्बल जैसे वस्त्र विछाने चाहिए। आजकल बाजार में उपलब्ध होने वाली खास चटाई (योगमेट) का प्रयोग भी योगासन करने के लिए कर सकते हैं।
- आसन करने के तुरंत बाद कुछ खाना नहीं चाहिए। आसन करने के बाद कम से कम आधे घंटे तक किसी भी प्रकार का भोजन चाहे खाद्य रूप या पेय रूप न खाएं।
- अधिक उम्र वाले, कमज़ोर हड्डियों वाले व्यक्तियों एवं रज़ाःप्रवृत्ति समय तथा गर्भवती महिलाओं को यदि योगासन करने ही हों तो, शिक्षक या विशेषज्ञ के पर्यवेक्षण में ही करें।
- प्रशिक्षित योगाभ्यासी या 'योग शिक्षक' की सलाह के अनुसार तथा उनके निरीक्षण में ही योगासन की शुरूआत एवं उनका अभ्यास करें।



7. योग अभ्यास के शुरूआती दिनों में सुखासन, पद्मासन जैसे सुलभ आसन करें। बाद में यथा समय कठिन आसन धीरे-धीरे किए जा सकते हैं। खुद से करने की अनुमति नहीं मिलती, तब तक शिक्षक के पर्यवेक्षण में आसनों का अभ्यास करें।

किस योग का क्या उपयोग

- **सिद्धासन-** दीर्घकाल बैठने के लिए करें
- **कुकुटासन-** पेट की समस्या जैसे अपचन, अंगमर्द में लाभ दे।
- **वज्रासन -** जठराग्नि वृद्धि करें, पाचन सुधारे, आध्मान, आनाहतशा अधोवायु में लाभ दे।
- **सर्वांगासन -** पृष्ठवंश (रीढ़ की हड्डी) का रक्त संवहन सुधारे, साथ ही लचीलापन बढ़ाए।
- **मत्स्यासन-** जठराग्नि वृद्धि करे, श्वास (दमा) जैसे विकारों में लाभ दे। उर, ग्रीवा एवं कटिकी मांसपेशियों का तनाव कम करें।
- **हलासन-** पृष्ठवंश (रीढ़ की हड्डी) तथा यकृत के लिए लाभकारी। जीर्ण मलावष्टुभ, अधोवायु में अवश्य करें।
- **धनुरासन-** पृष्ठवंश (रीढ़ की हड्डी) को लचीला, दृढ़ तथा पुष्ट बनाए। मन्दाग्नि, अधोवायु में लाभ दे। स्कन्ध से लेकर बाहु, पाद, जंघ एवं जानु की मांसपेशियों तथा नाड़ियों को ताकत दे।
- **भुजंगासन-** प्रजनन संस्थान के अवयवों के लिए हितकर, कब्ज, अजीर्ण में करें, गर्भिणी को वर्ज्य है।
- **पश्चिमोत्तानासन-** स्थौल्य में उदरवृद्धि (तोंद) कम करें, यकृत-प्लीहा वें कार्य सुधारे, अर्श, मधुमेह व्याधि में लाभ करें, स्वास्थ्य बनाए रखें।
- **मयूरासन-** तुरंत ताजगी लाए, अजीर्ण, गुल्म, उदर, यकृत के विकार जैसे रोगों में लाभ दें। शरीर में रक्त संवहन सुधारे।

- **मत्स्येन्द्रासन-** वायु की गति का नियमन एवं जठराग्निप्रदीप करे।
- **शवासन-** थकान दूर करे, मन को शांति दे।
- **सिद्धासन/वज्रासन/मुक्तासन/गुप्तासन -** सभी आसनों में मुख्य आसन है, जो 72,000 नाड़ियों का मल शोधन करे।
- **पद्मासन-** सभी व्याधियों में हितकर, विशेषतः कटितथा अधो भाग के नाड़ियों को दृढ़ एवं लचीला बनाए।
- **भद्रासन-** समस्त व्याधियों में लाभ दे।
- **उष्ट्रासन-** ग्रीवा एवं पसलियां दुड़ बनाए, कटि और उदर की स्थूलता कम करे, त्रिदोष नाशन, पाचनशक्ति की वृद्धि करे, शरीर में लचीलापन बढ़ाए।
- **चक्रासन-** ऊरु, उदर, कटि, ग्रीवा, हस्त, पाद तथा जानु इन सभी अवयवों का बल एवं लचीलापन बढ़ाए, साथ ही स्वास्थ्य बढ़ाए।
- **बद्धपद्मासन-** तन्द्रा-निद्रा-आलस्य, मलावष्टुभ तथा स्वप्न दोष में लाभ दे, पाचनशक्ति बढ़ाए। कटि से उपर के अंगों की पुष्टिकर, श्वास, कास, भग्ंदर में लाभ दे। उदरवृद्धि व कब्ज में लाभ दे।
- **अर्धमत्स्येन्द्रासन-** कटि, जंघा, वक्ष, बाहु, ग्रीवा की नाड़ियों तथा स्नायु की पुष्टि करे, पाचन सुधारे। साथ ही मूत्रदाह, प्रमेह में लाभ दे।
- **त्रिकोणासन-** संपूर्ण शरीर में योग्य प्रकार से रक्त का संवहन करने में मदद करे, पृष्ठ, कटी, ग्रीवा, स्कन्थ तथा हस्त को बल दे।
- **शीर्षासन-** अच्छी नींद आने में लाभकर, नाक, कान एवं मुख की व्याधियों में लाभ दे। यह आसन 10 मिनिट से ज्यादा समय तक न करें।
- **शलभासन-** पैर की मांसपेशियों को सुदृढ़ बनाए। वात, पित्त एवं

कफजन्य विकार तथा मधुमेह में लाभ दे।

- **ऊर्ध्वसर्वांगासन-** मस्तिष्क, हृदय, फुफ्फुस इन अवयवों की पुष्टि करे। वात एवं रक्त के विकार में लाभ दे, पाचनशक्ति बढ़ाए।

योगों का योग है सूर्य नमस्कार

सूर्य नमस्कार यह बारह आसनों का समूह है। यह बारह नमस्कारों का एक आवर्तन है, जिसमें दक्षासन, नमस्कारासन, पर्वतासन, हस्तपादासन, पादप्रसरणासन, मूधरासन, चतुरंगप्रणिपातासन, अष्टांगप्रणिपातासन, भुजंगासन, पुनःमूधरासन, एकपादस्थितासन एवं पुनः हस्तपादासन का अन्तर्भीक होता है। इन्हीं बारह आसनों के आधार पर सूर्यनमस्कार की बारह अवस्थाएं हैं। इसके प्रयोग से शरीर में लाघव उत्पन्न होता है। जाठराग्नि बढ़ती है तथा मन और शरीर सुदृढ़ होता है। 'योग' यह एक ऐसी कला है, जिसके द्वारा मन, शरीर एवं आत्मा का नियंत्रण किया जा सकता है। खासकर, योगासनों के अभ्यास से मांसपेशियों की ताकत, लचीलापन बढ़ने के कारण स्वास्थ्य बनाए रखने में मदद होती है, जो आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में अत्यंत आवश्यक है।



Boost your Immunity for Positive Health !



१८७२ से आयुर्वेद सेवा

Ayush Kwath Dispersible Tablets



Shree Dhootapapeshwar Limited • Authentic • Standardised • Safe • Efficacious • 145+ years of Ayurved Tradition

॥ जय श्री कृष्ण ॥

भगवान श्रीकृष्ण की ब्रजभूमि गोवर्धन में परिक्रमा मार्ग में
'श्री गिरिजधरण माहेश्वरी सेवा टस्ट'
द्वारा संचालित अत्याधुनिक सुविधायुक्त माहेश्वरी भवन



माहेश्वरी भवन, गोवर्धन

आन्योर परिक्रमा मार्ग, दानघाटी के पास, गोवर्धन 281502 (उ.प्र.)
दूरभाष- 0565-2815832, मो. 88591-11222

www.mbgoverdhan.com

E-mail : mbgoverdhan@gmail.com

आप अपना आरक्षण ऑनलाइन अथवा फोन से करवा सकते हैं

उपलब्ध सुविधायें

- » 26 डबलमूल ए.सी. कमरे (डबल-बेड) इन कमरों में ए.सी., गीजर, मिनिफ्रिज, डिजिटल लॉकर, टॉवेल आदि की सुविधायें
- » 26 एसी कमरे (डबल बेड) गीजर की सुविधा सहित।
- » 4 ए.सी. कमरे (3 बेड) गीजर की सुविधा सहित।
- » 2 एसी मिनी हॉल (10 बेड)
- » 46 कूलर युक्त कमरे (डबल बेड)
- » 2 मिनी हॉल (6 बेड) एयर कूलर सहित
- » 1 डोरमेट्री (2.4 बेड) एयर कूलर सहित
- » 1 एसी डाइनिंग हॉल एवं किचन
- » सभी कमरों में अटेच लैट-बॉथ की सुविधा।
- » सत्संग हॉल 200 व्यक्तियों की बैठकर कथा सुनने की व्यवस्था (शीघ्र एसी युक्त होगा)
- » 2000 स्क्वेयर फीट का किचन एवं डाइनिंग हॉल निजी उपयोग के लिये, जिसमें यात्री अपने रथोदयों द्वारा भोजन बनाना सकते हैं।
- » दोनों भवनों में लिफ्ट की सुविधा।
- » कारों एवं बसों की सुरक्षित पार्किंग का स्थान।
- » पार्क कट के सम्बन्धित लिखुत सफाई के लिये 125 केरीए एवं 25 केरीए के जनरेटर।

बजरंगलाल बाहेती (अध्यक्ष)

मो.- 98290-79200

विनोद कुमार बांगड़ (महामंत्री)

मो. 094142-12835

जुगल किशोर बाहेती (कोषाध्यक्ष)

मो. 98291-56858

उपलब्ध सुविधायें

- » ए.सी. व टी.वी. से सुसज्जित 47 डबल बैडरूम (अटेच्ड लैट, बॉथ)।
- » 4 फैमिली ए.सी. हॉल (6 व्यक्तियों की क्षमता वाले)।
- » अत्याधुनिक किचन के साथ वातानुकूलित भोजनशाला।
- » वाई-फाई सुविधा से युक्त पूरा भवन
- » विभिन्न मंजिलों पर जाने के लिये दो लिफ्ट की सुविधा।
- » स्वच्छ आर ओ पेयजल की सुविधा
- » भव्य एयरकंडीशन सत्संग हॉल।
- » कार पार्किंग की सुरक्षित व्यवस्था।

श्यामसुंदर कासट

अध्यक्ष

मो.- 098315-55555

रामस्वरूप जैथलिया

कार्यकारी अध्यक्ष

मो.- 096490-79999

विनोद कुमार बांगड़

महामंत्री

मो. 094142-12835

गोविंद गोपाल सोनी

कोषाध्यक्ष

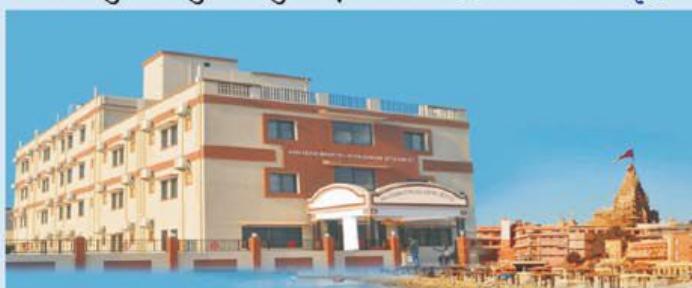
मो. 98240-26961

श्री द्वारिकाधीश विजयते

भगवान श्रीकृष्ण की कर्मभूमि

द्वारकाधाम

में 'श्री अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा टस्ट' द्वारा संचालित अत्याधुनिक सुविधायुक्त एकमात्र माहेश्वरी अतिथि गृह



माहेश्वरी सेवा कुंज

21, द्वारकेश पार्क सोसायटी (अम्बुजा प्लाट), नागेश्वर रोड,
देवभूमि द्वारका-361335 (गुजरात),

दूरभाष- 02892-235553 / 235554, मो. 097271-22111

E-mail : maheshwarisewakunj@gmail.com



सेवापथ के 'भामाशाह'

पञ्चश्री बंशीलाल राठी

"भामाशाह" शब्द मात्र आर्थिक सहयोग तक ही सीमित नहीं हो सकता। यह शब्द कितना व्यापक हो सकता है, उसी का उदाहरण हैं, चैन्नई निवासी खींचसर राजस्थान के सपूत समाजसेवी पद्मश्री बंशीलाल राठी। आपने तन - मन व धन सभी प्रकार से समाजसेवा के पावन यज्ञ में आहुति देकर "भामाशाह" शब्द को सही अर्थ प्रदान किया है। आप आगामी 14 अगस्त को अपनी उम्र के 87 वर्ष पूर्ण कर 88वाँ जन्मदिवस मनाने जा रहे हैं।

टीम SMT

समाजसेवा की जब भी बात हो और उसमें चैन्नई निवासी वरिष्ठ समाजसेवी पद्मश्री बंशीलाल राठी का जिक्र न हो यह हो नहीं सकता। कारण है कि जहाँ भी आवश्यकता पड़ी, आपने न सिर्फ धन से बल्कि तन व मन से भी मुक्त हस्त से अपना सहयोग देने में कोई कसर नहीं रख छोड़ी। तन-मन व धन से उन्होंने समाज को अपना माना तो समाज ने भी उन्हें इस वृहद परिवार के मुखिया की तरह सम्मान देने में कभी कोई कसर नहीं रख छोड़ी। यह उनकी प्रबल समाजसेवा की भावना ही है कि उन्होंने जो सेवा के पौधे दशकों पूर्व रोपे उन्हें वे उप्र के इस 87 वें पड़ाव पर भी उसी तरह सींच रहे हैं, वह बढ़ती उम्र की असमर्थता परवाह किये बिना। यदि वे बेड पर हैं और कोई समाज का कोई कार्य लेकर पहुंच जाए तो भी उसे खाली हाथ नहीं लौटना पड़ता।

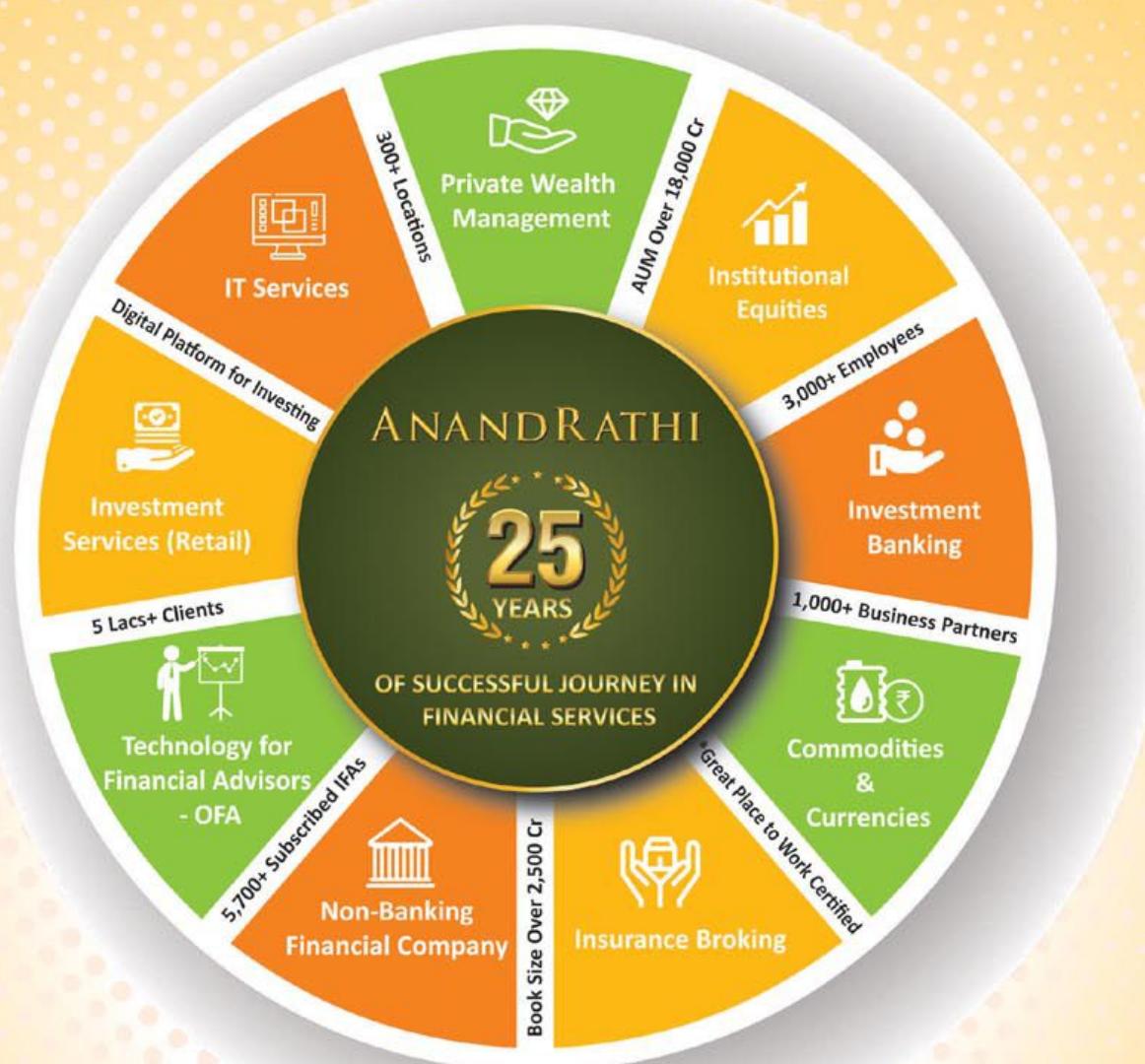
खींचसर का नाम किया रोशन

सम्पान स्वरूप बाबूजी के सम्बोधन से समाज में जाने जाने वाले वरिष्ठ समाजसेवी पद्मश्री राठी का जन्म 14 अगस्त 1933 को नागौर (राजस्थान) के ग्राम खींचसर में सेठ श्री गंगाधर राठी के यहाँ एक विलक्षण पुत्र के रूप में हुआ। यह विलक्षणता नहीं तो क्या है कि मात्र प्राइमरी स्तर तक शिक्षा ग्रहण करने के बावजूद उन्होंने शून्य से शिखर की ऊँचाई प्राप्त की। वर्तमान में स्टील, फाइबर, एक्सपोर्ट आदि कई व्यवसाय व उद्योगों का संचालन कर रहे हैं। समाजसेवा के अंतर्गत अभा माहेश्वरी महासभा के सभापति जैसे शीर्ष पद की जिम्मेदारी भी संभाली। समाज की कई संस्थाओं व ट्रस्टों के विकास के मूल में आपका अभूतपूर्व योगदान है। उन्होंने समाज को राह दिखाई कि सिर्फ संस्था बनाकर छोड़

देना ही नहीं बल्कि उसकी देखरेख कर उसे बड़ा करना भी हमारा कर्तव्य होता है। ऐसी अनिनित संस्थाएँ हैं, जिनमें प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से बाबूजी सहयोगी बने हुए हैं।

समाज की सेवा में रहे समर्पित

बाबूजी अ.भा. माहेश्वरी महासभा के कार्यकारी मंडल सदस्य तथा शीर्ष सेवा संस्था श्री आदित्य विक्रम बिड़ला व्यापार सहयोग केंद्र के कार्याध्यक्ष पद की जिम्मेदारी सफलतापूर्वक निभा रहे हैं। वर्तमान में श्री आदित्य विक्रम बिड़ला व्यापार सहयोग केंद्र समाज के आर्थिक विकास की धुरी बन चुका है। इसकी स्थापना भी श्री राठी के अभा माहेश्वरी महासभा के सभापतित्वकाल में वर्ष 1997 में हुई थी। इसके पश्चात यह बिड़ला उद्योग समूह की चेयरपर्सन राजश्री बिड़ला की अध्यक्षता में सतत रूप से कार्य कर रहा है। प्रारंभ से ही श्रीमती बिड़ला की अध्यक्षता में सतत रूप से कार्य कर रहा है। प्रारंभ से ही श्रीमती बिड़ला ने श्री राठी को इस संस्था का नेतृत्व कार्याध्यक्ष के रूप में सौंप दिया था। तब से ही इसे शून्य से शिखर की ऊँचाई देने में श्री राठी के नेतृत्व का बहुत बड़ा योगदान है। इसे उनका जज्बा ही कहा जाए कि संस्था द्वारा कोष संग्रहण का जो भी लक्ष्य तय किया गया श्री राठी ने सदैव ही उससे अधिक की लक्ष्य पूर्ति की। पद्मश्री राठी के मार्गदर्शन में केंद्र ने कोरोना महामारी के कारण उत्पन्न हुए आर्थिक विषम स्थितियों में भी अपना आर्थिक योगदान देकर समाज के जरूरतमंद स्वव्यवसायियों को सम्बल दिया।



ANAND RATHI

Call us on 1800 200 1002 / 1800 121 1003 or log on to www.rathi.com

Anand Rathi Share & Stock Brokers Ltd. / AnandRathi Advisors Ltd.

Regd. Office: Express Zone, A Wing, 9th Floor, Western Express Highway, Opposite Oberoi Mall, Goregaon (E), Mumbai - 400063, India. Tel: 022 6281 7000
 BSE (Mem.ID.949) CM: INB011371557 FO: INF010676931 BSE CD: Exchange Regn. | NSE (Mem.ID.06769) CM: INB230676935 FO: INF230676935 CD: INE230676935 | MSE (Mem.ID.1014) CM: INB260676938 FO: INF260676938 CD: INE260676935 | DP- NSDL: IN-DP-NSDL-149-2000, CDSL: IN-DP-CDSL-04-99. | Research Analyst - INI1000000834 | MCX: MXC/TCM/CORP/0525 Mem.ID.: ITCM8500 | NCDEX: NCDEX/TCM/CORP/0178 Mem.No.: TCM00147 | NCDEX SPOT: NCDEXSPOT/043/CO/08/10050 Mem.No.: 10050 | PMS: INP000000282 | MBD-INM000010478 | Investment Adviser: INA000000268 | AMFI: ARN-4478 is Registered under "Anand Rathi Share & Stock Brokers Ltd." | ARN-100284 is Registered under "AR Wealth Management Pvt. Ltd." | ARN-111569 is Registered under "AR Venture Fund management Pvt. Ltd." --We are a distributor of Mutual Fund. Anand Rathi Global Finance Limited is registered as NBFC Regn. No.: B-13.01682. Insurance is registered under "Anand Rathi Insurance Brokers Ltd." License No. 175. PMS registered under Anand Rathi Advisors Ltd. Insurance Products are distributed under Anand Rathi Insurance Brokers Ltd. PMS, PAS & Wealth Management are not offered in commodities segment. Commodities is registered under Anand Rathi Commodities Ltd. | *Anand Rathi Wealth Services Limited.

Disclaimer: Investment in securities market are subject to market risks, read all the related documents carefully before investing.
 Investments in Mutual Fund are subject to market risk, read all the related documents carefully before investing.

वेदों में कर्म को ही धर्म कहा गया है। जालोर निवासी समाजसेवी रामकुमार भूतड़ा वे कर्मवीर हैं, जिन्होंने समाजसेवा के अपने कर्म को ही धर्म बना लिया। उन्होंने जो भी किया चाहे वह व्यवसाय हो, राजनीति अथवा समाजसेवी संस्थाओं का नेतृत्व अपने इस “धर्म” के पालन में कोई कसर नहीं रख छोड़ी। आप आगामी जन्माष्टमी पर्व पर अपना 71 वाँ जन्मदिवस मनाने जा रहे हैं।

टीम SMT

जिन्होंने सेवा को बनाया धर्म

रामकुमार भूतड़ा

जालोर निवासी रामकुमार भूतड़ा की तीन विशिष्ट पहचान हैं। वे व्यवसायी जगत में प्रतिष्ठित व्यवसायी, राजनीति में सफल राजनेता तथा समाजसेवा में सफल नेतृत्वकर्ता के रूप में पहचान रखते हैं। इन तीन विशेषताओं के कारण इनकी त्रिवेणी की तरह एक विशिष्ट पहचान है और वह है, एक समर्पित समाजसेवी की छवि। श्री भूतड़ा के मन में समाज व मानवता की सेवा इस तरह रचि बसी हुई है कि इन्होंने त्रिवेणी का अंतिम लक्ष्य ही समाजसेवा बना दिया।

वर्तमान में आप भाजपा के राजस्थान प्रदेश कोषाध्यक्ष हैं। व्यवसाय जगत में श्री भूतड़ा की पहचान एक सफल ऐनाइट स्टोन व्यवसायी के रूप में है। इसे उन्होंने शून्य से शुरूआत कर शिखर की ऊँचाई के रूप में प्राप्त किया। उनकी दूसरी पहचान एक ऐसे निःस्वार्थ समर्पित समाजसेवी के रूप में है, जिन्होंने जहाँ आवश्यकता पड़ी तन-मन-धन से समर्पित भाव से अपना योगदान दिया। श्री भूतड़ा सेवा संस्था अ.भा. माहेश्वरी सेवा सदन के दो सत्रों तक सतत अध्यक्ष रहे एवं अपने इस कार्यकाल में उन्होंने संस्था का ऐसा चहुँमुखी विकास किया जो इतिहास बन गया। अ.भा. माहेश्वरी महासभा को भी महामंत्री के रूप में श्री भूतड़ा सफलतापूर्वक अपनी सेवा दे चुके हैं।

संघर्षों से हुई जीवन की शुरूआत

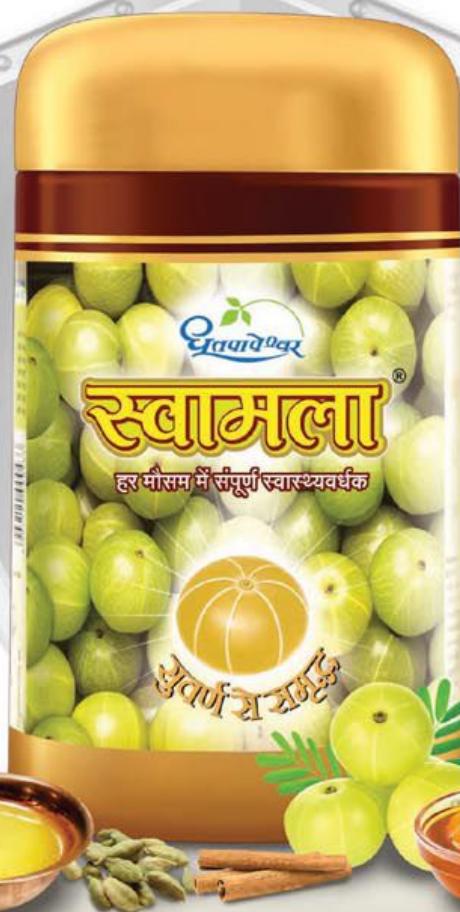
श्री भूतड़ा का जन्म सन् 1949 में राजस्थान के एक छोटे से गाँव डोडीयाना, जिला नागौर में स्व. श्री शिवदयाल भूतड़ा के यहाँ जन्माष्टमी पर्व पर एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। उन्हें भी अपने गाँव से बेहद लगाव रहा। अपने गाँव की सुविधाविहीनता व पिछड़ापन उन्हें बहुत कष्ट देता था। स्वयं की पढ़ाई भी उन्हें पारिक संस्कृत विद्यालय मेडता सिटी तथा कक्षा 9 से 10 तक की पढ़ाई साईनाथ विद्या मंदिर बडायली से पूर्ण करनी पड़ी। इसके बाद कक्षा 12वीं की परीक्षा उन्होंने पत्राचार से पढ़ाई कर उत्तीर्ण की। उनका सपना था कि उनका गाँव सुविधाओं में सबसे आगे रहे। बस इस सपने ने ही उन्हें राजनीति में भी सक्रिय कर दिया। शुरूआत से रही जनसंघ की विचारधारा ने उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की ओर प्रेरित कर दिया।

मात्र 18 वर्ष की आयु में शासकीय अध्यापक पद पर नौकरी लग गई, लेकिन उनके सिद्धांतों से नौकरी टकरा गई। विभाग के हाईकमान ने उन पर आरएसएस को छोड़ने के लिए दबाव बनाया। उन्हें आरएसएस से दूर हटना किसी भी कीमत पर मंजूर नहीं था। बस सिद्धांतों के इस टकराव में उन्होंने सन् 1967 में नौकरी को ही तिलांजलि दे दी। इसके पश्चात लंबे समय तक गाँव में व्यापार करते हुए गाँव की असुविधाओं को दूर करने के मिशन में लगे रहे और इसी में गाँव में सरपंच बनकर ग्राम विकास का इतिहास रच दिया। 1995 से जालोर में ग्रेनाइंड उद्योग की स्थापना की व व्यवसाय की नई यात्रा प्रारंभ की।

सेवा की चली सतत यात्रा

संघर्षपूर्ण अपनी व्यवसायिक यात्रा के बावजूद श्री भूतड़ा समाज के प्रति भी अपने कर्तव्यों को निभाने में पीछे नहीं रहे। समाज संगठन के अंतर्गत श्री भूतड़ा वर्ष 1990-96 तक नागौर जिला माहेश्वरी सभा के अध्यक्ष रहे। प्रादेशिक सभा के विभिन्न पदों पर रहकर कार्य किया। 2003 से 2012 तक अ.भा. माहेश्वरी सेवा सदन के दो सत्रों तक अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी का निर्वहन किया। अ.भा. माहेश्वरी महासभा के लगातार कार्यकारी मंडल व कार्य समिति सदस्य रहकर महामंत्री पद की जिम्मेदारी का सफलता पूर्वक निर्वहन किया। वैश्य सम्मेलन के जिला अध्यक्ष व प्रदेश उपाध्यक्ष पदों पर कार्य किया व साथ ही साथ भाजपा के विभिन्न पदों पर (मंडल अध्यक्ष व जिला उपाध्यक्ष व अन्य) कार्य करते हुए प्रदेश कोषाध्यक्ष जैसी बड़ी जिम्मेदारी का निर्वहन कर रहे हैं। आप आदित्य विक्रम बिड़ला मेमोरियल ट्रस्ट के सदस्य, कोटा होस्टल के ट्रस्टी, दीपक भूतड़ा स्मृति संस्थान के संस्थापक सदस्य, बोर्ड ऑफ गवर्नर एम.एन.आई.टी. जयपुर आदि कई पदों पर भी कार्यरत हैं। निःसंदेह आपने अपने जीवन में जिस किसी क्षेत्र में या पद पर कार्य किया है, अपने लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए उस के साथ पूर्ण न्याय करते हुए अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी है, जिसे वर्षों तक याद किया जायेगा।

इम्युनिटी ही मेरा सुरक्षा कवच!



स्वर्ण समृद्ध च्यवनप्राश!



स्वस्थ रहे, उन्नत रहे,
आयुर्वेद के रक्षाछत्र में रहे।



* मात्रा
बड़ों के लिए - १ बड़ा चमच (१५ ग्राम) दिन में २ बार
बच्चों के लिए - १ छोटा चमच (५ ग्राम) दिन में २ बार

सेन्त का खणाना, दो चमच रोणाना!

सकारात्मक स्वास्थ्य के लिए
रोगप्रतिकारक्षमता बढ़ाएं!

आयुष कवाथ

डिस्पर्सिबल टैबलेट्स

का प्रतिदिन सेवन बढ़ाएगा
आपकी रोग प्रतिकार क्षमता

F205DLA065x925H005



श्री धूतपेपेश्वर लिमिटेड • शास्त्रोत्तर • नानकीपुरा • सुरक्षित • आम दूषणा • १४५+ वर्षों की आयुर्वेद सेवा For Health & Trade Enquiries Tollfree: 1800 22 9874 www.sdiindia.com Now available on Amazon



घटक द्रव्य प्रति गोली:



तुलसी



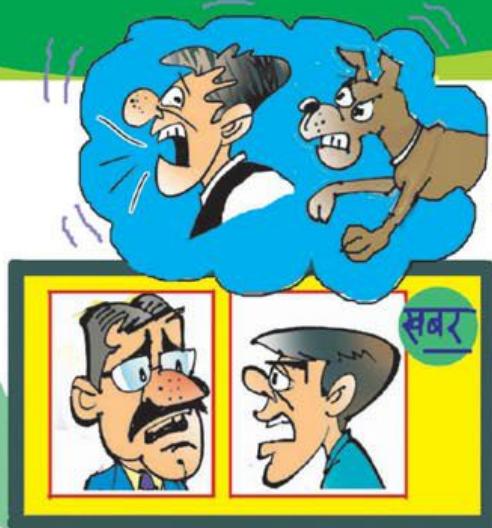
त्वक् (दालचीनी)



शुंथी



मरीच



जब कुते ने नेता को काटा तो टीवी पर कुछ यों बहस हुई



चन्द्रकांत जोशी, मुंबई

पर पहला सवाल दाग देता है, आप हमारे मोहल्ले में इतनी बार आए हमारे कुतों ने तो कभी आप पर हमला नहीं किया, फिर आपके कुते हमारे नेताजी पर क्यों झापटे। इसी बीच तीसरा बगैर रुके बोलना शुरू कर देता है। राजनीति का स्तर कितना गिर गया है, कुतों को लेकर बहस हो रही है। क्या हम किसी और विषय पर बात नहीं कर सकते।

इसी बीच एंकर और एंकरनी दर्शकों से आए ट्वीट की जानकारी देते हैं। एंकरी बोलती है अभी अभी हमारे एक दर्शक ने ट्वीट किया है—खबर अधूरी है कुतों के झापटने के बाद नेताजी कहाँ हैं, अस्पताल में हैं, कि चुनाव प्रचार कर रहे हैं। और टीवी पर उन कुतों को भी दिखाया जाए जो नेताजी पर झापटे थे, मैं अपने मोहल्ले के कुतों को भी ट्रैड करना चाहता हूँ कि हमारे मोहल्ले में जैसे ही कोई नेता आए उसकी ऐसी ही दुर्गति करदे। एंकरनी इस पर अफसोस जताती है कि हमारे दर्शक ऐसी घटिया प्रतिक्रिया दे रहे हैं। वह कहती है, हमें अपनी बहस को गंभीर बनाना है।

इसी बीच टीवी की खिड़की से एक और बंदरनुमा आदमी झाँकता है, वह बहुत गुस्से में है। आप ऐसे ट्वीट की बात ही क्यों कर रही है, इस देश में नेताओं की इज्जत ऐसी हो गई है कि कल से कोई ये भी लिख सकता है कि जिस मोहल्ले से कोई नेता निकले उसे पकड़कर जूते मारो।

इसी बीच एंकर और एंकरनी को कोई सूचना मिलती है, उनका रिपोर्टर उस जगह पहुँच गया है जहाँ कुतों ने नेताजी पर हमला किया था, उस घटना के कुछ चश्मदीदों से चर्चा करते हैं। एंकर रिपोर्टर से हमें इस घटना के चश्मदीदों से बात कराई थे। रिपोर्टर कहता है यहाँ लोग पूछ रहे हैं कि आप किसको कुता काटने की बात कह रहे हैं क्योंकि ये कुते तो दिन भर किसी पर झापटते रहते हैं। अगर इनका मूड होता है तो काटते हैं नहीं तो थोड़ी दूर पीछा करके बापस आ जाते हैं। कुछ चश्मदीद जो टीवी पर आने को उतावले हैं बताते हैं, हमारे मोहल्ले के कुते बड़े समझदार हैं, ये ऐसे गैरे लोगों को मोहल्ले में देखते ही उस पर भाँकने लगते हैं और यहाँ से भगा देते हैं। खासकर नेतानुमा आदमी पर जो कलफदार सफेद खादी पहनकर आता है उसे तो ये छोड़ते ही नहीं, क्योंकि हमने इनको ट्रैड ही ऐसा कर रखा है।

एंकर और एंकरनी को इस बात से हैरानी होती है कि कुते नेता को देखकर ही भड़कते हैं। इसी बीच कुछ और ट्वीट आ जाते हैं। एंकरनी बताती है कि हमें कई शहरों से धड़ाधड़ ट्वीट मिल रहे हैं कि हमारे मोहल्ले में भी ऐसे ही कुतों की ज़रूरत है। जिस शहर में जिस मोहल्ले में इन कुतों ने नेता को काटा है और नेताओं को ही काटने के आदी हैं, क्या ऐसे कुते हमें भी मिल सकते हैं।

एंकर बोलता है हमारी बहस लगता है दूसरी दिशा में चली गई है। हम इस बहस को यहाँ खत्म करते हैं।

इदार गली के कुते और उनके संगी साथी इसी बात का इंतजार करते रहे कि चैनल से कोई रिपोर्टर आकर उनसे भी पूछेगा कि उन्होंने नेता को क्यों काटा, लेकिन जैसा कि होता है चैनल वाले मुद्रे की गहराई तक नहीं जाते इसलिए ये कुते बेचारे यूँ ही निराश खड़े रहे।



प्रकृति के प्रति क्या हम अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं?

वर्तमान दौर में समाचार-पत्र पौधारोपण के समाचारों से भरे रहते हैं। इसके बावजूद हरियाली बढ़ने की जगह कम होती जा रही है। बिना व्यवस्थित योजना के होने वाले निर्माणों में कई बड़े वृक्ष काटकर धराशाही कर दिये जाते हैं, जबकि इतने वृक्ष लग नहीं पाते। ऐसे में विचारणीय हो गया है कि प्रकृति के प्रति क्या हम अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं, या मात्र खानापूर्ति ही की जा रही है? मानव-जीवन ही नहीं बल्कि सृष्टि को बचाना है, तो पर्यावरण को भी बचाना पड़ेगा। इस विषय पर आईये जानें इस स्तंभ की प्रभारी सुमिता मूंदडा से उनके तथा समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

कब तक हम प्रकृति के प्रति लापरवाह रहेंगे?



आधुनिक मशीनी युग में विशेषकर कोरोनाकाल में हम इंसानों के लिये अपनी शांसों को बचाये रखने एवं स्वस्थ जीवनयापन करने के लिए सर्वाधिक आवश्यक कार्य है, पर्यावरण का संरक्षण। आज आयुर्वेद

हमारे जीवन की संजीवनी बन गया है क्योंकि आयुर्वेदिक औषधियों को ग्रहण करके हम अपनी शारीरिक रोग-प्रतिरोधक क्षमता का स्तर बढ़ा रहे हैं और वर्तमान परिस्थितियों में यही हमारे पास कोरोना वायरस के विरुद्ध एकमात्र हथियार है। यह औषधियां भी तो वृक्षों की ही देन हैं, जिन्हें हम रोपित करना तो दूर पनपने भी नहीं देना चाहते। आज हमें आयुर्वेदिक औषधियों की किल्लत महसूस हो रही है, क्योंकि जिनका हमने कभी पोषण ही नहीं किया उनका फल कैसे मिलेगा? पिछले कुछ वर्षों से वृक्षारोपण के लिए जागरूकता बढ़ी जरूर है, पर अधिकांशतः पौधों को उचित स्थान पर रोपा नहीं जाता है जिससे उनके पोषण और देखरेख का अभाव रहता है और वो पल्लवित नहीं हो पाते। बस अपनी तसल्ली या लोक दिखावे के लिए हम पर्यावरण-वृक्षारोपण अभियान से जुड़ते हैं, नए-ए पेड़ लगाते हैं, तस्वीरें खिंचवाते हैं, सोशल मीडिया पर बढ़-चढ़कर तस्वीरों के साथ अपना प्रचार-प्रसार करते हैं, लोगों की बाहन्वाही बटोरते हैं और पर्यावरण रक्षण की अपनी जिम्मेदारी को पूर्ण मान लेते हैं। क्या सिर्फ पेड़ लगाने या बीज आरोपित करने तक ही हमारी जिम्मेदारी थी? आरोपित करने के बाद उसकी देखरेख क्या प्रकृति की जिम्मेदारी है? क्या हम अपने नवजात बच्चों को भी जन्म देकर भगवान भरोसे छोड़ देते हैं? हमें ऐसे अनेकोनेक सवालों का समाधान कर पर्यावरण के लिए अपने दायित्वों को पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ निभाने के लिए दृढ़संकल्प लेना होगा और तभी हमारा प्राकृतिक ऋण भी उतरेगा।

■ सुमिता मूंदडा, मालेगांव

विकास के लिए प्रकृति की उपेक्षा



प्रकृति सभी का समान रूप से भरण-पोषण करती है, फिर उसे सहेजने का दायित्व मुट्ठीभर लोग ही क्यूँ निभाते हैं? प्रकृति को जिन अनगिनत तरीकों व तीव्रता से क्षति पहुंचाई जाती है, उसके सामने चंद लोगों के प्रयास बौने साक्षित होते हैं। लॉकडाउन के बहाने प्रकृति ने संजीवनी जरूर पाई है। लेकिन अब अनलॉक के पश्चात भविष्य में यह स्थिति किस प्रकार बनी रहे यह चुनौती व जिम्मेदारी देश के हर व्यक्ति को समझानी होगी। मनुष्य की प्राथमिक जरूरतों को पूरा करने के लिए एक हद तक विकास की जरूरत समझी जा सकती है। पर हमें तो विकास का चस्का लग चुका है। अत्यधिक भौतिक सुख-सुविधाओं की कीमत हम प्राकृतिक असंतुलन के रूप में चुका रहे हैं। एक बड़ा तबका अनभिज्ञ व लापरवाह है, जो प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी को उपेक्षा की दृष्टि से देख रहा है। विकास के नाम पर तीव्रता से प्रकृति के हरे-भरे क्षेत्रों को समाप्त किया जा रहा है। जिन्हें वृक्ष काटे जाने हैं, कम से कम उतने पहले लगाए जाएं, उसके उपरांत ही कटाई की अनुमति मिले।

■ अनुश्री मोहता, खामगांव (महाराष्ट्र)



प्रकृति में ही खुशियों का खजाना



प्रकृति एवं प्राणीमात्र का अन्यान्याश्रित संबंध है। प्रकृति में ही खुशियों का अनमोल खजाना निहित है, किन्तु मानव अपने निजी स्वार्थ की पूर्ति के लिए प्रकृति का अंधाधुंध दोहन करता जा रहा है। प्रकृति प्रदत्त पेड़ हमारे जीवन के आधार हैं। भोजन, आवास, उपचार, छाया तथा समस्त प्रकार की सुविधाएं इन्हीं पेड़ों से उपलब्ध हैं। आज सड़कों के चौड़ीकरण, कल कारखानों की बढ़ती संख्या, नई कॉलोनियों की बसावट, रेल लाइनों का विस्तार, बांधों का निर्माण तथा उद्योगों की स्थापना के कारण वृक्षों की अपार कटाई हो रही है और हमारे अस्तित्व को खतरा उत्पन्न होता जा रहा है। वृक्ष हमें प्राण वायु का दान, भूस्खलन से बचाव, जीव जन्तुओं को संरक्षण प्रदान करते हैं। अतः वृक्षों की सुरक्षा व बढ़ोतरी के लिए आवश्यक है कि मंदिर व मस्जिदों में वृक्ष बाटिकाओं का निर्माण व भूमि कटाव स्थल पर वृक्षारोपण हो। गोचर भूमि व बंजर भूमि में अधिकाधिक पेड़ लगाएं। पर्व व उत्सवों पर वृक्षारोपण को बढ़ावा मिले। बड़े व छायादार पेड़ों को जड़ सहित उखाड़ कर अन्यत्र रोपित करें। उद्योगपतियों को अधिकाधिक पेड़ लगाने के साथ ही उन्हें सुरक्षित पनपाने हेतु व्यवस्थाएं करना भी आवश्यक है।

■ ममता माहेश्वरी, आगूंचा भीलवाड़ा

प्रत्येक व्यक्ति हो संकलिप्त



प्रकृति और पर्यावरण से मनुष्य का अभिन्न संबंध है? प्रकृति और पर्यावरण की शुद्धता पर ही मानव जाति का भविष्य और वर्तमान दोनों सुरक्षित हैं। सम्मता और संस्कृति के विकास के पश्चात ग्रामीण जीवन प्रायः

ग्रामों तक ही सीमित हो गया। विकसित ग्रामों ने शहरीकरण के मोहजाल में अपने नियमित जीवन को बदलते परिवेश में परिवर्तित करना प्रारंभ किया। इस नवीनीकरण एवं मशीनीकरण ने अर्थात् नए कल-कारखानों ने हमारे संपूर्ण जीवन को, दिनचर्या को, खान-पान को, रहन-सहन को, यहां तक कि विचारों को भी परिवर्तित कर दिया। हम स्वयं प्रकृति से दूर होकर कृत्रिम माहौल से जुड़ गए हैं। आज कृत्रिम खाना- पीना, फल-फूल ने हमें बीमारी का घर बनाया। ना शुद्ध हवा है, ना शुद्ध जीवन, ना शुद्ध पानी। अब पर्यावरण दिवस पर हम चंद पौधे लगाकर अपना नाम अखबारों की सुर्खियों में ला कर खुश हो रहे हैं। बच्चे को अंग्रेजी शिक्षा में आदर्श स्कूल मिले हैं, वहां खेलकूद के ग्राउंड हैं, पर हरियाली नहीं है। प्रकृति प्रेमी भी अब नहीं हैं, क्योंकि हम प्रकृति से विमुख होकर सिर्फ जिंदगी का भार ढो रहे हैं। मनुष्य अपने स्वार्थ की खातिर पेड़ों को कटवा रहा है, इसी वजह से प्राकृतिक आपदाएं आ रही हैं। हमें प्रकृति और पेड़ों को बचाना होगा और इसके लिये प्रत्येक व्यक्ति यह संकल्प ले कि अधिक से अधिक वृक्ष संरक्षण करेगा।

■ उर्मिला तापड़िया, बीकानेर

अपने भविष्य के लिये समझें जिम्मेदारी



प्रकृति यानी धरती मां की हरी-भरी गोद, जिसमें हम जन्म लेते हैं और जीवन यापन के लिए आवश्यक सभी वस्तुएं प्राप्त करते हैं। प्रकृति एक ऐसी मां जो अपने हर बच्चे पर समान दुलार लुटाती है और अपनी पीड़ा को भूलकर बच्चों का पालन पोषण करती है, किंतु आज हम आधुनिकता की दौड़ और भौतिक सुख-सुविधाओं में इतने रम गए हैं, कि प्रकृति के प्रति हमारा व्यवहार भी गैर जिम्मेदारी वाला हो गया है। हमारे द्वारा उपयोग में आने वाली प्लास्टिक की वस्तुओं, पॉलिथीन बैग, कीटनाशकों का प्रयोग और बढ़ती वाहनों एवं फेकिट्रियों की संख्या ने प्रकृति को अत्यधिक नुकसान पहुंचाया है। किंतु फिर भी हम चिंतित नहीं हैं। हमारा प्रकृति प्रेम मात्र दिखावा होकर रह गया है। किसी विशेष दिवस के उपलक्ष्य में पौधारोपण,

सेल्फी और फिर उस रोपे गए पौधे की अनदेखी? क्या प्रकृति के प्रति हमारा बस इतना ही कर्तव्य है? सच तो यह है कि प्रकृति की अवहेलना करके किसी भी संस्कृति को नहीं बचाया जा सकता। अभी भी समय है, हम अपनी जिम्मेदारियों को समझें और प्रकृति को बचाने का प्रयास करें, ताकि प्राकृतिक अवहेलना के दुष्परिणाम हमारी भावी पीड़ी को ना भोगना पड़े। तो आइए हम मिलकर प्रण करें कि हम प्रकृति को बचाएंगे, अपनी संस्कृति को बचाएंगे।

■ दीपा काबरा, गाडरवारा (म.प्र.)

पौधे की देखरेख की लें जिम्मेदारी



यह बात बिल्कुल सत्य है कि वर्तमान दौर में समाचार पत्र पौधारोपण को बढ़ावा देते हैं। इसके बावजूद हरियाली बढ़ने की बजाए कम होती जा रही है। इसका कारण यह है कि विभिन्न संस्थाओं व संगठनों का उद्देश्य मात्र पौधारोपण करके फोटो खिंचवाना है। पौधा पनप रहा है अथवा नहीं उससे उन्हें कोई सरोकार नहीं होता। किसी भी व्यक्ति को यह जिम्मेदारी नहीं सौंपी जाती कि वह उसकी देखभाल करें। जब तक किसी पौधे की जड़ विकसित होकर जर्मीन के अंदर से पानी खींचने जैसी सक्षम नहीं हो जाती तब तक उसे नियमित तौर पर सार संभाल करनी पड़ती है। इसके अलावा बीज पौधे के रूप में पनपे यह जरूरी नहीं। अतः जब भी बीज के माध्यम से पौधारोपण किया जाए तो अधिक मात्रा में बीजारोपण हो क्योंकि उनमें से कुछ ही व्यवस्थित रूप से पनप पाते हैं। यदि किसी संस्था या संगठन का पौधारोपण करते हुए फोटो प्रकाशित होता है तो प्रकाशक की जिम्मेदारी है कि वह हर महीने पौधे के विकास की फोटो भी मंगवाए। यकीन मानिए पौधारोपण के फोटो प्रकाशित होने बंद हो जाएंगे। आजकल के माता-पिता अपने नवजात का हर महीने का फोटो लेते हैं, उसी तरह पौधे के विकास का फोटो भी लें ताकि संगठन उसके प्रति पाबंद रहे। मेरा एक सुझाव यह भी है कि यदि बारिश का मौसम आने से पहले मिट्टी में खूब सारे बीज डालकर उसको गीला करके छोटे-छोटे बॉल्स बना लें और उसे खाली जगह या बगीचों में इधर-उधर डालते जाएं तो उनकी वातावरण मिलने पर उनमें से कुछ स्वतः ही पनप जाएंगे।

■ स्वाति मानन्धना, सुहासिनी, बालोतरा

अपने जीवन में पेड़ जरूर लगाएं



जीवन में सांसे हैं तो जीवन है। सांसों को चाहिए शुद्ध हवा, जो हमें पेड़ पौधों से मिलती है। पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने में पेड़ों का बहुत बड़ा योगदान है। केवल पेड़

लगाओ कहने से कुछ नहीं होता। हमें चाहिए अपने जीवन में एक-दो पौधे जरूर लगाएं और उनकी उचित देखभाल भी करें जिससे धरा पर पर्यावरण को बचाया जा सके। अगर किसी कारणवश वृक्ष काटना भी पड़े तो उससे पहले वहां पर उचित स्थान पर दूसरे वृक्ष लगाएं, फिर वृक्ष को हटाए। हर बार प्रकृति का दोहन हमारे लिए ही प्राकृतिक आपदाएं ला रहा है। जिस तरह हम अपने घर का दायित्व निभाते हैं, उसी प्रकार प्रकृति के प्रति अपने दायित्व को समझ उसमें अपना योगदान दें। हमें वृक्षारोपण का मात्र दिखावा ना करके, अपनी वास्तविक जिम्मेदारी समझ कर उसकी उचित देखभाल भी करनी चाहिए, तो उसका लाभ भविष्य में हमें ही मिलेगा, नहीं तो किसी ना किसी आपदा के रूप में विनाश रूपी तांडव का दुष्परिणाम हमारे सामने आता रहेगा। धरती को हमें अपने हाथों से जाना है। हमें पौधे मात्र दिखावे व सेल्फी के लिए नहीं अपितु अपने कल को संवारने के लिए लगाना है व उनकी उचित देखभाल करने का दायित्व स्वयं निभाना है।

■ रेखा राजेश लखोटिया, नागपुर

पर्यावरण के बारे में सोचना जरूरी



प्रकृति के विरोध में जायेंगे तो दुष्प्रभाव भुगतना ही होगा। आज कोरोना वायरस से पूरा विश्व भव्य की चपेट में आया हुआ है। इसका मूल कारण पर्यावरण का दूषित होना है। भारत की बड़ी आबादी आज गरीबी रेखा के नीचे रहती है। ऐसे में अंधाधुंध विकास की होड़ में पर्यावरण सुरक्षा और विकास के बीच संतुलन बैठाने की आवश्यकता है। हमें पर्यावरण को लेकर सर्वोच्च प्राथमिकता की नीति बनानी पड़ेगी तथा आम लोगों को साथ लेकर मानसिकता में बदलाव लाना होगा। एक समय भारत में बहुत धने वृक्षों का जंगल था, जो इस समय पूरा साफ कर दिया गया। ऐसे में यह जिम्मेदारी सरकार व हम लोगों की है कि नये-नये वृक्ष लगावें।

■ श्यामसुंदर धनराज लखोटिया, मालेगांव

प्रकृति संरक्षण - सांझी जिम्मेदारी



प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी सबकी है। अतः हम जितने ज्यादा पेड़ लगा सकते हैं, लगाने चाहिए। पर लगाए हुए और अपने आप उगे हुए पेड़ों की सुरक्षा और पालन भी बहुत महत्वपूर्ण है। इसके अलावा और

बहुत से छोटे छोटे ऐसे कार्य हैं जो हमें प्रकृति के हित में करने चाहिए। इस दिशा में प्रत्येक छोटा कदम भी आवश्यक है। यदि हमारे घर में कोई उत्सव है और हम गुब्बारों से सजावट करते हैं तो उत्सव के बाद पीछे शेष बचता है सिर्फ प्लास्टिक और यूज एंड श्रो का कचरा। यदि इसके स्थान पर हम फूलों से सजावट करें तो फूल की खेती से सूक्ष्म जीव जैसे मधुमक्खी, तितली आदि को आश्रय मिलता है और उत्सव के बाद बचे हुए फूल अच्छी खाद बनते हैं। इसी तरह पेयजल की बचत भी प्रकृति की सुरक्षा के लिए आवश्यक है। हम वाहन चलाते हैं जिस से प्रदूषण फैलता है। एक राजमार्ग सड़क को चौड़ी करने के लिए उसके किनारे लगे हजारों पेड़ काट दिए जाते हैं, इनको काट कर सड़क चौड़ी करने के स्थान पर पास में दूसरा मार्ग बनाया जा सकता है। इस से दुर्घटना में भी कमी आ सकती है पर हम सिर्फ तथाकथित विकास के बारे में सोचते हैं।

■ नग्रता माहेश्वरी, पाली

पेड़ों से प्यार करें

प्रकृति की पुरजोर कोशिश होती है कि वह मानव को खुशी दे, पर वही मानव अपनी कृति से प्रकृति को कुपित कर रहा है।



जिन वृक्षों की पूजा का विधान था, उन्हें हम अपने स्वार्थ के लिए जड़ से काट रहे हैं। हम जब प्रकृति से मिलने जाते हैं, तो वृक्षों पर कहीं दिल

बना देते हैं, तो कहीं अपना नाम लिख देते हैं। उन पर दिल ना बनाएं बिल्कुल उन्हें दिल से प्यार करें। नदियां-तालाब जो हमें शीतलता प्रदान करते हैं, हम उन्हें निर्माल्य, पौलिथीन और अन्य सामानों से पाठ देते हैं। लाखों हजारों बेल पत्ती की जगह एक बिल्वपत्र चढ़ाकर शिव को प्रसन्न करें। ध्वनि और वायु प्रदूषण को कम कर पक्षियों की दिल की धड़कन को रोक सकते हैं। याद रखें वृक्ष प्राण दाता है। जल जीवन दाता और पक्षी का कलरव आनंद दाता तभी तो हम प्रकृति के पास जाते हैं।

■ सुनीता महेश मल्ल, आमगांव महाराष्ट्र

सभी समझें अपनी जिम्मेदारी



आज प्रबृत्ति वें संरक्षण के लिए सभी देशों की सरकार और विभिन्न संगठन कार्य कर रहे हैं। अतः हमारा भी कर्तव्य है कि हम अपनी जिम्मेदारी से प्रकृति को सुंदर व संरक्षित रखें, स्वच्छ और स्वस्थ रखें। लेकिन मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति का दोहन भी करता है। फलस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों पानी, हवा, पर्यावरण आदि में शुद्धता का अभाव हो रहा है। आज आवश्यकता इन संसाधनों को बचाने की है। शुद्ध हवा के लिए पौधे लगाएं और उनकी उचित देखभाल करें और जो पेड़ लगे हुए हैं उन्हें संरक्षित करने में मदद करें। बच्चों को भी पेड़-पौधों का महत्व समझाएं। जल ही जीवन है, इसे व्यर्थ ना बहाएं। रहिमन पानी रखिए, बिन पानी सब सून। अतः रसोई में काम लिया पानी जैसे दाल, चावल के धोने का पानी सब्जियां या वृक्ष सींचने के काम में लें। कम दूरी के लिए गाड़ी का उपयोग ना करके पैदल चलें। पशुपालन करते हैं तो गाय के गोबर और गौमूर से भी प्रकृति की आबोहवा शुद्ध होती है।

■ भारती काल्या, कोटा

पौधा रोपण और सफाई में सहयोग



पर्यावरण का मतलब हमारे चारों तरफ का वातावरण अगर वह सारांशित है, तो निश्चित रूप से हमारी मानव सम्यता भी संरक्षित रहे गी।

पर्यावरण संरक्षण जल संरक्षण का सीधा संबंध वृक्षरोपण से है। ज्यादा वृक्ष ज्यादा शुद्ध हवा पृथ्वी भी वर्षा के पानी को ज्यादा अवशोषित करेगी और इससे निश्चित ही भूमिगत जलस्तर बढ़ेगा। हम अपनी आदतों में बदलाव लाकर बहुत सारा पानी बचा सकते हैं। वॉटर हार्डिस्टिंग सिस्टम को अपनाना चाहिए। अगर हम वृक्षरोपण या सफाई में अपना योगदान नहीं दे सकते तो हमें वृक्ष काटने या गंदगी फैलाने का भी अधिकार नहीं है। देश के हर नागरिक की अगर यही सोच हो तो पर्यावरण अपने आप सुरक्षित रहेगा। हमने जंगल काटकर सीमेंट कंक्रीट के जंगल खड़े कर दिए हैं। पर्यावरण बचाने के लिए 3 आर महत्वपूर्ण हैं। पुनः उपयोगी रीसायकल पर्यावरण संरक्षण जल संरक्षण हम सबकी जिम्मेदारी है।

■ उषा भट्ट उज्जैन

हम पर्यावरण के प्रति गम्भीर नहीं



बेशक किसी को कड़वा लगे लेकिन मैं स्पष्ट शब्दों में कहती हूं कि कोई भी प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी नहीं निभा रहा है। हर समाज संगठन में यही कहा जाता है कि

पौधे लगाओ, लेकिन सभी समाज में पौधे लगाकर सिर्फ और सिर्फ फोटो, प्रदर्शन के लिए ही भेजे जाते हैं। फिर उन वृक्षों का कोई भी ध्यान नहीं देता। यह सब दिखाबे की खानापूर्ति की जाती है। यह भी सच है कि सुष्टि को बचाने के लिए हमें पर्यावरण पर बहुत ध्यान रखना चाहिए। प्रकृति हमारे जीवन के लिए स्वच्छ वायु, पीने के लिए साफ पानी और खाने के लिए कंदमूल फल उपलब्ध कराती है। आज उसकी सुरक्षा का ही सवाल उठ रहा है। 50-60 साल पहले धरती पर धने जंगल थे, कल-कल बहती सतिताएं, निर्मल झील, झरने थे। जब तक धरती पर वृक्ष बचे हैं, तब तक हमारी सांसें चलती रहेंगी। यदि हम जीवित रहना चाहते हैं तो पर्यावरण के बारे में ठोस कदम उठाना चाहिए। ■ कुमकुम काबरा, बरेली

अनावश्यक उपभोग पर हो नियंत्रण



प्रकृति वो माँ है जो हमारा पालन-पोषण करती है। किन्तु मनुष्य की लालसा है वैभव, सुविधा, साम्राज्य, तकनीक, उद्योग, धन आँर प्राप्तिश्वाद।

इसीलिए तो हम जाने-अनजाने अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार अधिक से अधिक उन्नत कपड़ों, फर्नीचर, विद्युत उपकरणों, ईंधन पीते वाहनों और विविध सुविधाओं से धिरे रहते हैं और इन सभी को उपलब्ध कराने वाले उद्योगों को उत्तरोत्तर बढ़ावा देते हैं। इस प्रकार का जीवन जीते हुए विभिन्न अवसरों पर पर्यावरण के संरक्षण की बातें करना परिहास जैसा लगता है। उपभोग के बिना तो जीवन सम्भव नहीं और ना ही हम अपनी जीवन शैली बदल पाएंगे; किन्तु एकल प्रयोग प्लास्टिक, सजावटी फर्नीचर, ईंधन की अनावश्यक खपत, नित नए मोबाइल और कपड़े खरीदने से तो स्वयं को रोक ही सकते हैं। हम अपनी सुविधाओं, लालसाओं और इच्छाओं पर नियन्त्रण रखते हुए, निरन्तर प्रकृति का ध्यान करते हुए, यदि थोड़ा भी योगदान कर पाएँ तो ये हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उपहार होगा।

■ प्रतीक भारत पलोड़, बैंगलोर

वैज्ञानिकों के सुझावों का अनुसरण करें



हमारी वस्तुवादी एवं विस्तारवादी प्रवृत्ति ने हवा-पानी को तो दूषित किया ही है अपितु अन्न को भी कीटनाशक व कृत्रिम रासायनिक खाद्यों से विषेला बना दिया है।

वैज्ञानिक प्रगति व इकॉनोमिक ग्रोथ की परिकथाओं के पीछे प्रकृति के साथ खिलवाड़ की कहानी छिपी है। इतना ही नहीं विविध प्रकार की महामारियां इसी का परिणाम हैं। कोरोना आक्रमण के पीछे भी कहीं न कहीं प्रकृति का अपमान व दोहन ही छिपा है। अतः पर्यावरण विनाश करने का सीधा सा अर्थ है कि हम स्वयं अपने डेश वारंट पर हस्ताक्षर कर रहे हैं। सौ बातों की एक बात यही है कि हमें पर्यावरण संरक्षण हेतु ध्यान देना होगा। मात्र पौधारोपण ही पर्याप्त नहीं अपितु यह भी आवश्यक है कि पेड़ों के काटने पर प्रतिबंध लगाया जाए। वायु प्रदूषण रोकने के लिए पुराने वाहनों के इंजन का प्रयोग नहीं किया जाए। घरों व ऑफिस में एयर कंडीशन का उपयोग कम मात्रा में किया जाए। एयर कंडीशनर से निकलने वाली सीएफसी गैस वातावरण में गर्मी का उत्सर्जन करती है। इसी प्रकार पर्यावरण संरक्षण के लिए वैज्ञानिकों द्वारा दिए गए अन्य सुझावों का भी पालन हो।

■ **विमला जाजू,** पाली मारवाड़

नियमों से खिलवाड़ कर रहे



प्रश्न-“प्रकृति के प्रति क्या हम अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं” का उत्तर होगा “बिल्कुल नहीं”। बल्कि हममें से अधिकतर लोग प्रकृति के नियमों से खिलवाड़ कर रहे हैं। हमने अवैध रूप से

भूमिगत जल का अत्यधिक दोहन कर कई जगहों को डार्क जोन में बदल दिया है। पेड़ लगाने में हमारी कोई रुचि नहीं है लेकिन पूरी तरह से सरकारी निषेधाज्ञा होने के बावजूद अवैध सरकारी संरक्षण में सरकार की नाक के नीचे बड़े-बड़े पेड़ों की जलाने व अन्य औद्योगिक गतिविधियों के खातिर बलि दी जा रही है। खनिजों के नाम पर हम अपनी खदानों व पहाड़ियों का जो अंधाधुंध दोहन कर रहे हैं, उसकी वजह से देश के विभिन्न भागों में आने वाले छोटे-मोटे भूकम्प हमें आने वाली बर्बादी की कहानी सुना रहे हैं। प्रकृति से खिलवाड़

का ही परिणाम है जो हम वर्तमान में कोरोना जैसी विश्वव्यापी महामारी से अपने आपका बचाव करने हेतु संघर्षरत हैं। विश्व भर में औद्योगिक गतिविधियों व अन्य कारणों से कार्बन उत्सर्जन व ग्रीन गैसों का लगातार अत्यधिक उत्पादन हमें पूर्ण विनाश की ओर ढकेल रहा है। अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर कई बार विचार साझा करने व सहमति होने के बावजूद कोई भी विकसित देश इस मामले में ईमानदारी नहीं बरत रहा है। प्रकृति को बचाने के लिए सरकार द्वारा पेड़ों को काटे जाने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना व कड़े दंड प्रावधान की व्यवस्था करना, भूजल के अवैध दोहन को आपराधिक कृत्य घोषित करना व पहाड़ियों की कटाई को एक सीमा तक प्रतिबंधित घोषित किया जाना आवश्यक है। इन उपायों से कुछ हद तक हमें प्रकृति संरक्षण में मदद मिल सकती है।

■ **सुरेंद्र बजाज,** जयपुर

सुर्खियों के लिये न करें पौधारोपण



इठलाता हुआ, हग-भरा सावन आ गया, नयी बहारें, नये संदेश एवं फिसे नये संकल्प लेकर। प्रकृति बिना भेदभाव के समानता के साथ अपना सर्वश्रेष्ठ हमें देती है। परंतु प्रकृति को बचाना, उसकी रक्षा करना, आज की पहली जरूरत बन गयी है। विकास के नाम पर मनुष्य ने प्रकृति का जिस-जिस रूप में दोहन किया या उपयोग किया और जिस तरह वस्तुओं को अनुपयोगी मानकर, प्लास्टिक को, रसायनों को आसपास के परिवेश में फेंका है, उससे व्यक्ति का पर्यावरण के साथ इतना संतुलन बिगड़ रहा है कि वह विनाश के मुँह की ओर जाता जा रहा है। प्रकृति की चित्रकारी कायम रहे इस बात के प्रति हम उदासीन होते जा रहे हैं। इससे तन-मन की शान्ति प्रभावित हो रही है। जरूरत है हरित क्षेत्रों को विकसित करने की। वृक्षारोपण सिर्फ अखबारों या सोशल मीडिया पर सुर्खियां बटोरने तक सीमित होकर न रह जाएं। जो पौधे हमने रोपित किये हैं, उनकी परिवार के सदस्यों की तरह उचित देखभाल कर नये संकल्पों को क्रियान्वित करना भी बेहद जरूरी है। छोटे-छोटे स्तर पर ही सही समिति बनाकर हम कार्य शुरू कर सकते हैं।

वृक्ष वायुमण्डल में नमी बनाए रखते हैं और तापमान की वृद्धि को रोकते हैं। अतः वृक्षों की कटाई पर नियंत्रण कर, जल संचय एवं जल प्रबंधन को भी विशेष महत्व दिये जाने की आवश्यकता है। नवीन प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करना होगा। लोगों को ओज़ोन परत के क्षरण के भावी खतरे के प्रति जागरूक करना होगा। मिलजुल कर पर्यावरण के साथ मित्रवत व्यवहार करते हुए ओज़ोन परत के हितैषी बन जाये तो निश्चित ही आने वाले समय में अच्छे परिणाम सामने आएंगे।

■ **डॉ. सूरज माहेश्वरी,** जोधपुर

पंचतत्वों को रखें संतुलित



शरीर हो या प्रकृति सभी पांच तत्व से बने हैं और वे हैं जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि और आकाश। इनमें संतुलन रहना चाहिए तभी

पर्यावरण सब तरह से अनुकूल रहेगा। आजकल भिन्न-भिन्न कारणों से इनकी मात्रा में असंतुलन बढ़ता जा रहा है जो चिंता का कारण है। पेड़-पौधे जीवन को बचाने में ही नहीं अपितु पर्यावरण को सुरक्षित रखने में भी अहम रोल अदा कर रहे हैं। यही कारण है कि हमारे यहां वृक्षों की अत्यधिक उपयोगिता को स्वीकार कर मानवीय भावनाओं के वशीभूत होकर उन्हें ईश्वर का अवतार माना गया है। इसके साथ-साथ हमें सिखाया गया है कि वास्तव में प्रकृति हमारी संरक्षक है, पोषक है इसलिये हमें प्रकृति की मूल संपदा को बचाये रखते हुए उसके ब्याज से काम चलाते रहना चाहिए तभी हम अपनी भावी पीढ़ियों के लिए प्रकृति की मूल संपदा को संजोकर, बचाकर रख पायेंगे। वनों के प्रति सजग न रहना और भावी पीढ़ियों की चिन्ना न करना उनके प्रति अनाचार होगा, अन्याय होगा। अब सभी सरकारें समय-समय पर कार्यक्रम बनाकर वृक्षारोपण कर भी रही हैं लेकिन अभी भी वृक्षारोपण पश्चात जो देखभाल होनी चाहिये वहां ढील देखने को मिलती है। इसलिये जनता को स्वयं वृक्षारोपण पश्चात उसकी देखभाल का जिम्मा उठाना चाहिए।

■ **गोवर्धनदास बिनाणी,** बीकानेर



IS:1786

CM/L - 6943589



GBR TMT

THE STRENGTH WITHIN

www.gbrmetals.com

Manufacturers of High quality
MS Billets and TMT Bars



Works:
#295, G.N.T Road,
Peravallur Village,
Ponneri Taluk - 601 206
Tamil Nadu
Website: www.gbrmetals.com

Registered Office:
#4, Ramanan Road,
Chennai - 600 079
Tamil Nadu
Ph: +91 44 25292151
E-mail: sales@gbrmetals.com

खुश रहे - खुश रखें पीड़ा को विस्मृत करें, सृजन के संकल्प को स्मृति में रखें

दुर्घटनाएँ सभी की जिंदगी में होती रहती हैं। आदमी बड़ा हो या छोटा, जीवन में कभी न कभी हादसों से गुजरना ही पड़ता है। सभी महान व्यक्ति जीवन में विपरीत हालात का सामना कर चुके हैं लेकिन यदि दृष्टि अध्यात्मिक हो तो हादसे से हुए विनाश में भी सृजन किया जा सकता है। सृजन की यही वृत्ति हमें दुख, पीड़ा, कष्ट, परेशानी और निराशा से उबार लेगी।

श्रीराम ने सीता अपहरण जैसे विपरीत हालात देखे थे तो श्रीकृष्ण ने अपने बचपन में दुर्घटनाओं की लंबी शृंखला देखी थी। वृद्धावन के बन में आग लग जाना, पिता नेदवाबा पर राक्षसों के आक्रमण आदि। महावीर ने अपनो से दुर्घटनाएँ झेलीं तो मोहम्मद ने इस्ताम को हादसों के बीच गुजारकर सलामत स्थापित किया था। कौन बचा है कुदरत की मार से।

हादसे तो होते ही हैं, सवाल है कि उनका सामना कैसे किया जाए। भागवत में कहा है याद करने पर बीता हुआ सुख भी दुख देता है तो फिर दुख तो दुख देगा ही। जीवन में हुई दुर्घटनाओं के बाद उसकी पीड़ा को जितनी



पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

जल्दी विस्मृत कर देंगे उन्हीं ही शीघ्रता से नया सृजन कर पाएंगे। इसलिए पीड़ा को विस्मृत करें और सृजन के संकल्प को स्मृति में रखें।

राम-कृष्ण से लेकर अब तक जितने भी महान लोग हुए हैं उन्होंने जीवन के विपरीत हालात में पीड़ा को भी सुख में बदलने की कला सिखाई। अध्यात्म ने कहा है अपने साक्षी हो जाओ। राम-कृष्ण से लेकर अब तक जितने भी महान लोग हुए हैं उन्होंने जीवन के विपरीत हालात में पीड़ा को भी सुख में बदलने की कला सिखाई। अध्यात्म ने कहा है अपने साक्षी हो जाओ। इसी साक्षी भाव को जागरण, ध्यान, मुक्ति कहा गया है, जो भीरु होते हैं वे भगवान को उपलब्ध नहीं होते। भगवान ने कहा, “मैंने जो जीवन दिया है उसे विपरीत परिस्थितियों में आपने कैसे गुजारा, मैं उसका भी हिसाब रखता हूँ।”

इसलिए जब संकट आए तो बाहर की व्यवस्थाएँ तो हमें अपने कर्म से जुटानी हैं लेकिन अंतरमन की व्यवस्थाओं को अध्यात्म से सुनिवेजित करना है। परिणामतः भीतर से हम शांत होंगे और बाहर बेहतर नवसृजन कर पाएंगे।

जल देवता

वेद-पुराण-कुरान-बायबिल
सहित सभी धर्मग्रन्थों ने भी कहा है-
'जल है तो कल है'।
इन्हीं सद्दर्थों से सन्दर्भित
डॉ. विवेक चौरसिया
के जल पर केन्द्रित लेखों का संग्रह
'जल देवता'.



जिनमें आप पायेंगे
न सिर्फ धाराय संस्कृति
बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने
स्वीकारी है
जल की महता।

Rs. 150/-
दाक बर्च सुरु

खूबसूरती से जीएँ

55 के बाद

55 के बाद की जिंदगी सप्नों का
अन नहीं बल्कि उहैं
साकार करने का स्वर्णिम समय है.
यह इसके लिए जरूरी है
खूबसूरती से जीना कैसे जीएँ...
इसी के सूच बताती है

डॉ. एच.एल. माहेश्वरी
की पुस्तक
“खूबसूरती से जीएँ
55 के बाद”
Rs. 120/-
दाक बर्च सुरु

ऋषि मुनि प्रकाशन

आपसे कहा जाता है -

- » संकट निवारण हेतु पारी में नरियल बहा दें।
- » सांप दिखे तो काम टालें।
- » नल को पानी टपकता न छोड़ें।
... और भी बहुत कुछ तो फिर...

ऐसा क्यों?

a i s a k y o n ●

जिसमें छुपा है आपके हर क्यों का जवाब



प्रश्न उठना स्वाभाविक है -
“ऐसा क्यों?” लेकिन इसका
उत्तर देगा कौन?
इसका उत्तर देती गहन
अध्ययन से संजोई पुस्तक

Rs. 100/-
दाक बर्च सुरु

90, विद्यानगर, सौंवर रोड, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2526561, 2526761, मो. 094250-91161



पंचखादा गणपतिजी का प्रिय प्रसाद है।

सामग्री- 1कप गेहूँ का आटा, 1 बड़ा चम्मच धी, 1/2 कप पीसी शक्कर, 1 बड़ा चम्मच खसखस भुनकर बारीक किया हुआ, 1कप सुखा नरियल का कीस (बुरदा), 25 ग्राम बारीक कटा किसमिस, 50 ग्राम बारीक कटा खारक, 50 ग्राम बारीक कटी खुरमानी, 50 ग्राम बारीक कि हुई खड्डी शक्कर, 8-10 इलायची का पावडर,

विधि- नरियल के बुरादे को धीमी गैस पर भूनें, धी में आटा भी धीमी आँच पर भून लें। एक बड़े बातल में नरियल, खसखस, किसमिस, खुरमानी, खारक भूना आटा, इलायची पावडर, पिसी शक्कर इन सब को अच्छे से मिक्स करे। आप का यह पंचखादा प्रसाद तैयार है। जब गणपतिजी विराजमान होते हैं और उठते हैं, उस दिन सब भक्त नाच नाच कर थक जाते हैं, तब ताकत आने के लिए यह प्रसाद विशेष तौर पे बनाया जाता है।



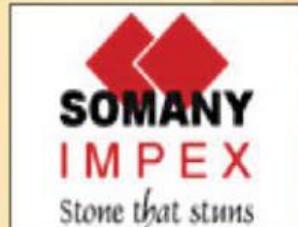
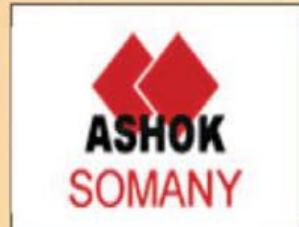
पूणम राठी, नागपुर
9970057423

अच्छी नसीहतों का असर
आजकल इसलिए नहीं होता
क्योंकि...

लिखने वाले और पढ़ने वाले
दोनों ये समझते हैं कि
ये दूसरों के लिए हैं...



ASHOK SOMANY



M/s. ASHOK SOMANY & Co.

Mining of Natural Stone & Tiles

Khol House, Circular Road, Rewari - 123401 (Hry) Vill-Kund, Distt. - Rewari (Hry)

Tel. : 01274-225385, Mob. : 981245677, Res. : 01274-260088, 260048

Email : accounts@sonanyimpex.ind.in

factory@sonanyimpex.ind.in, somanyimpex@gmail.com



AAKASH SOMANY

SOMANY NATURAL STONES (I) Pvt. Ltd.

All Kind of Natural Stone & Tiles

Plot No.5, Delhi Rewari Road, Rewari-12340 1 (Hry)

Mobile : 9812345677, 9812028488

Email : mines@sonanyimpex.ind.in | somanyimpex@gmail.com

SOMANY IMPEX

Exporter of All Kind of Natural Stone & Tiles

Khol House, Circular Road, Rewari-123401 (Hry), Unit-Khol Road, Vill-Kund, Distt. - Rewari (Hry)

Tel.: 01274-225385, Mob. : 9812028488, 9215689102

Email: accounts@sonanyimpex.ind.in

factory@sonanyimpex.ind.in, somanyimpex@gmail.com

DEVVRAT OVERSEASE

All Kind of Natural Stone & Tiles

Vil. Mehtawas, Mehtawas Road (Raj), Mobile : 9812345677, 9812025385

Email: mines@sonanyimpex.ind.in | somanyimpex@gmail.com

SOMANY (P.G) INSTITUTE OF TECHNOLOGY & MANAGEMENT

Running B.Tech & M.Tech in different Disciplines of Engineering

Near Delhi-Jaipur Highway No. 8, Beside 3 km, From Rewari City, Rewari (Hry) Tel. 01274-261239, 261781

Fax: 01274-261239, Mob. 9541069998

Email : Info@sitmrewari.com | admin@sitmrewari.com | accounts@sitmrewari.com

आपणी बच्चा



- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

आपाणा बच्चा आपाणों आइनो

खम्मा धणी सा हुक्म आपा हमेशा आपाणी सन्तान सूं चहुंमुखी विकास री उम्मीद करा कि वे सब, संस्कार सद्-व्यवहार, सेवा भाव, सद् गुण सूं भरपूर हुवे और ये सब आपाणी संतान में तो खास हुवणा चहिजै.. पर आपाने साथे यों भी विचार करणो चहिजै कि आपाणे खुद में भी ये सब गुण है या नहीं...

हुक्म जरा आपा ध्यान देवा तो आपाने खुद ने आश्चर्य हुवेला कि अभी तक वे सब योग्यता और पात्रता खुद में नहीं है कि अन्य लोग आपाणे प्रति आदर- भाव या सत्कारपूर्ण व्यवहार करें। दूजा ने छोड़ो आपाणी जीवन शैली सूं आपाणा घर रा ही असन्तुष्ट है, वाणे खुद ने आपाणा सूं बहुत शिकायत है। जबकि हुक्म जीवन ऐडो होवणो चहिजे की सबसूं पेहला आपाणी सन्तान आपाणो नाम लेते ही गर्व री अनुभति कर सके।

हुक्म बच्चा उपदेशों सूं नहीं उदाहरणों सूं सीखे ...बच्चों रो पहलो उदाहरण पंचतन्त्र री कहानियां नहीं आपा खुद हौं... क्योंकि वे सबसूं ज्यादा नजदीक आपाणे कने रेहवे। बच्चों रो पहलो विश्वविद्यालय खुद रे परिवार में माता-पिता ही है।

खुद ने बेहतर बणावण वास्ते सबसूं महत्वपूर्ण है विनम्र व्यवहार वाणी में मिठास ...हुक्म ज्यों तलवार री कीमत धार सूं हुवे इंसान री कीमत नम्र व्यवहार मधुर बोली सूं हुवे। शब्दों में भी जान हुवे जिणसूं व्यक्तित्व री पहचान हुवे। बचपन में पढियोंडो संस्कृत रो एक छंद है कि..

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिक-काकयोः।

वसंतःसमये प्राप्ते, काकः काकः पिकः पिकः पिकः॥

अर्थात्- कौवो भी काळो हुवे कोयल भी। दोनों में भेद नजर नहीं आवे पर बसन्त ऋतु आवण पर साफ नजर आ जावे कि कुण कोयल है कुण कौवो। हुक्म जो कर्कश बोले वो कौवो जो मधुर बोले वह कोयल। तय आपाणे करणो है कि आपाने कौवो बणनों है या कोयल ..

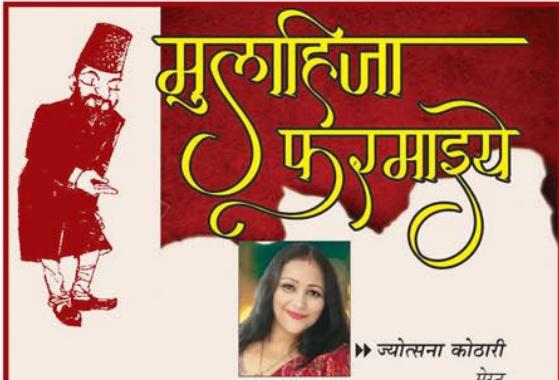
आपाणे स्वभाव री उप्रता दूषित सोच रो असर ही आपाणे बच्चों पर पड़े। अगर खुद में इण सबरी कमियां हैं तो सबसूं पेहला स्वयं रे प्रति सजगता री जरूरत है स्वयं ने संस्कारित करण री जरूरत है।

हुक्म एक बच्ची ने स्कूल री मैडम पुछियों 'बेटा आप क्लास में सभी के साथ इतनी शालीनता सम्मान के साथ कैसे पेश आती हों..?'

बच्ची बहुत सुंदर जवाब दियो- 'इसमें कोई विशेष बात नहीं है मेरे घर मे सभी एक दूसरे के साथ ऐसे ही पेश आते हैं।'

आपाणा बच्चा ही आपाणो आयनों है जो आप देवोला वो ही लौट ने आवेला।

स्वाति 'सर' जैसलमेरिया



► ज्योत्सना कोठारी
मेरठ

- तुम अपने पास रखों अपने सूरज का हिसाब
मुझे तो आखिरी घर तक दिया जलाना है
- अपनों के अवरोध मिले हर वक्त रवानी वही रही
सांसों में तूफानों के रफ्तार पुरानी वही रही
- लाख सिखाया दुनिया ने, हमको भी कागोबार मगर
धोखे खाते रहे और मन की नादानी वही रही
- यही तय जानकर कूदा उसूलों की लड़ाई में
कि रातें कुछ ना बोलेंगी चिंगारों की सफाई में
बुरी सीचों के कारोबार में इतनी कमी तो है
कमाई होती है बरकत तो नहीं होती कमाई में
- पी मिलन को तरसते हैं दोनों के ही नैन.....!!!
मात्र राधा ही नहीं कृष्ण भी होते हैं राधा बिन बेचैन..!!
- प्रकृति तेरा रूठना भी जरूरी था,
इंसान का घमंड टूठना भी जरूरी था।
हर कोई खुद को खुदा समझ बैठा था,
उसका ये शक दूर होना भी जरूरी था।
चाँद पर जाने की चाहत थी
पर धरती का सँवरना जरूरी था
मैं सब कुछ हासिल कर सकता हूँ
इस गलतफहमी से निकलना जरूरी था।।।

काढ़िन कॉन्ट्रुक





राशिफल

संकेत सिद्धार्थों के



पं. विनोद रावल

(ज्योतिर्विद)

फोन : 0734-2515326

मेष

यह माह आपके लिए मिले-जुले प्रभाव बाला रहेगा। पुराने रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। हृषील्लास का वातावरण निर्मित होगा। रुपए पैसे का आवागमन बना रहेगा। खुशखबरी मिलेगी। मौज मस्ती एवं मनोरंजन का लुज उठाएंगे। प्रियजनों से भेट होगी। खर्च की अधिकता रहेगी। बच्चों की ओर से अनुकूलता रहेगी। स्थाई संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता मिलेगी। पुरानी विवाद सुलझाएंगे। परिवार में विवाह संबंध के योग बने रहेंगे। लेन-देन में सावधानी रखना आवश्यक रहेगा।



वृषभ

यह माह आपके लिए यात्रा के लिए शुभ रहेगा। चुनौती भरे कार्यों में सफलता मिलेगी। संपत्ति से संबंधित प्रकारण में अनुकूलता आएगी परंतु मन उदास रहेगा और बाणी पर नियंत्रण रखना आवश्यक रहेगा। संतान से संबंधित रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। परिवार में शुभ एवं मांगलिक कार्य के अवसर प्राप्त होंगे एवं विवाह संबंध होने के योग बनेंगे। पाचन तंत्र एवं पेट की गैस से तकलीफ रह सकती है। अचानक आय होने के योग बनते हैं किंतु मन में अज्ञात भय भी बना रहेगा। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी।



मिथुन

यह माह आपके लिए मिला जुला असर करक रहेगा। इसमें रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे किंतु नवीन कार्य भी अटकेंगे। बाणी से लोगों को प्रभावित करने में सफलता प्राप्त होगी। दूसरों के कार्य अधिक करना पड़ेंगे। पत्नी एवं बच्चों से संबंधित कार्य रुक-रुक कर होंगे परंतु ही जाएंगे। झुठे आरोप का भी सामना करना पड़ेगा। पांव में कष्ट होने के योग बनते हैं। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। शासन सत्ता में रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। खर्च की अधिकता बढ़ी रहेगी। भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। भाई की ओर से सहयोग प्राप्त होगा।



कर्क

यह माह आपके लिए शुभ समाचार प्रदान करने वाला होगा। स्थानांतरण के योग हैं एवं साथ-साथ स्थाई संपत्ति में वृद्धि के योग बनेंगे। पाचन तंत्र से संबंधित कष्ट के योग रहेंगे। मुख्य भोजन का लुप्त उठाएंगे। पति पत्नी की ओर से अनुकूलता रहेगी। पति पत्नी में भ्रेमण्य वातावरण निर्मित होगा एवं दांपत्य सुख की प्राप्ति के योग रहेंगे। विवाह संबंध होने के योग रहेंगे। लंबी यात्रा होगी। मामा परिवार से वैतारिक मतांतर होंगे। अपनी क्षमता के अनुरूप कार्य करने एवं प्रदर्शन करने में सफलता मिलेगी। ऐसा कह सकते हैं कि अपने बलबूते पर प्रगति करेंगे। भौतिकवाद का प्रभाव आपके ऊपर बना रहेगा एवं पिता पक्ष से लाभ होगा।



सिंह

यह माह आपके लिए विजय प्रदान करने वाला होगा। विरोधी परास्त होंगे। सोचे हुए कार्य में सफलता मिलेगी। मन प्रसन्न होगा। रुके हुए कार्य पूर्ण होने से हृषील्लास का वातावरण निर्मित होगा। संतान से संबंधित कार्यों में सफलता मिलेगी। सोच शक्ति बढ़ेगी और स्थाई संपत्ति से संबंधित प्रकरण में सफलता मिलेगी। ऋण के माध्यम से स्थाई संपत्ति का निर्माण होगा। आय में अचानक वृद्धि होगी। यात्रा के योग रहेंगे। पुराने भित्रों से भेट होगी एवं जिही स्वभाव के कारण खर्च अधिक करना पड़ेगा।



कन्या

यह माह आपके लिए शुभ समाचार प्रदान करने वाला होगा। मकान सुख में वृद्धि होगी। सोचे हुए कार्य पूर्ण होंगे। संतान से संबंधित कार्य में सफलता मिलेगी। विरोधी परास्त होंगे किंतु दांपत्य जीवन में प्रतिकूलता का सामना करना पड़ेगा। ऋण के माध्यम से संपत्ति का निर्माण होगा। राजनीतिक प्रभाव बढ़ेगा। राजनीतिक कार्यों में सफलता मिलेगी। राजकीय पक्ष की अनुकूलता मिलेगी। पिता पक्ष से लाभ होगा। भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करेंगे। शुभ समाचार मिलेगा। पुराने भित्रों से भेट होगी एवं शुभ एवं मांगलिक कार्य होने के योग रहेंगे। धार्मिक भावना से परिपूर्ण रहेंगे।



तुला

यह माह आपके लिए आर्थिक रूप से श्रेष्ठ रहेगा। भाई एवं परिवारजनों का स्नेह प्राप्त होगा। विरोधी परास्त होंगे। शुभ एवं मांगलिक कार्यों से संबंधित रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। शत्रु का नाश होगा। दांपत्य जीवन में अनुकूलता रहेगी। सुख्याद नमकीन व्यञ्जनों का लुक्फ उठाएंगे। मौज-मस्ती, मनोरंजन आदि पर खर्च करेंगे। राजकीय पक्ष की अनुकूलता मिलेगी। समाज में पद एवं प्रतिष्ठा मिलेगी। गरीबों के लिए खर्च करेंगे एवं यश कीर्ति मिलेगी। आय के नवीन साधनों की प्राप्ति होगी। संतान के रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे।



धनु

इस माह आपके लिए लेखन प्रकाशन से संबंधित कार्यों से अचानक धन लाभ के योग रहेंगे। शुभ एवं मांगलिक कार्य में भाग लेंगे तथा संतान से संबंधित कार्य में सफलता मिलेगी। शिक्षा, साहित्य, लेखन, प्रकाशन से संबंधित कार्यों में यश कीर्ति की प्राप्ति होगी किंतु जीवन साथी के स्वास्थ्य की चिंता बनी रहेगी। लंबी यात्रा के योग रहेंगे। राजकीय पक्ष से अनुकूल व तमाम प्रतिकूलता दोनों का सामना करना पड़ेगा। भित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। व्यय की अधिकता रहेगी।



मकर

यह माह आपके लिए प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा। प्रशासनिक क्षमता में वृद्धि होगी। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। नौकरी के शुभ अवसर प्राप्त होंगे। वाहन सुख एवं मकान सुख की अनुकूलता रहेगी। चुनौती भरे कार्यों में सफलता मिलेगी। संतान से संबंधित कार्यों में परेशानी का सामना करना पड़ेगा। शिक्षा में भी परिश्रम की तुलना में सफलता से संतोष नहीं रहेगा। ठड़े पेय का आनंद लेंगे। विवाह संबंध होने के योग रहेंगे। दांपत्य जीवन की अनुकूलता रहेगी। लंबी यात्रा के योग रहेंगे। राजकीय पक्ष से पुरस्कार मिलने के योग, अचानक धन लाभ के योग एवं व्यय पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा। स्वादिष्ट भोजन का आनंद उठाएंगे।



कुम्भ

यह माह आपके लिए मिला जुला प्रभावकारी रहेगा। विरोधी परास्त होंगे। चुनौती भरे कार्यों में सफलता मिलेगी। संतान से संबंधित कार्यों में परेशानी का सामना करना पड़ेगा। शिक्षा में भी परिश्रम की तुलना में सफलता से संतोष नहीं रहेगा। ठड़े पेय का आनंद लेंगे। विवाह संबंध होने के योग रहेंगे। दांपत्य जीवन की अनुकूलता रहेगी। लंबी यात्रा के योग रहेंगे। राजकीय पक्ष से पुरस्कार मिलने के योग, अचानक धन लाभ के योग एवं व्यय पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा। स्वादिष्ट भोजन का आनंद उठाएंगे।



मीन

यह माह आपके लिए आय की दृष्टि से उत्तम रहेगा। संपत्ति से संबंधित प्रकरण में उलझन पैदा होगी। वाणी की बजह से कई कार्य बनते हुए रुक जाएंगे। मानसिक तनाव का सामना करना पड़ेगा। दांपत्य जीवन में अनुकूलता रहेगी। वाहन से सावधानी रखना होगी। धार्मिक यात्रा के योग रहेंगे। प्रशासन में जान पहचान का क्षेत्र बढ़ेगा। आय के नवीन साधनों की प्राप्ति होगी। शौक, मौज मस्ती एवं मनोरंजन पर खर्च करेंगे। कार्य व्यवसाय में वृद्धि होगी।

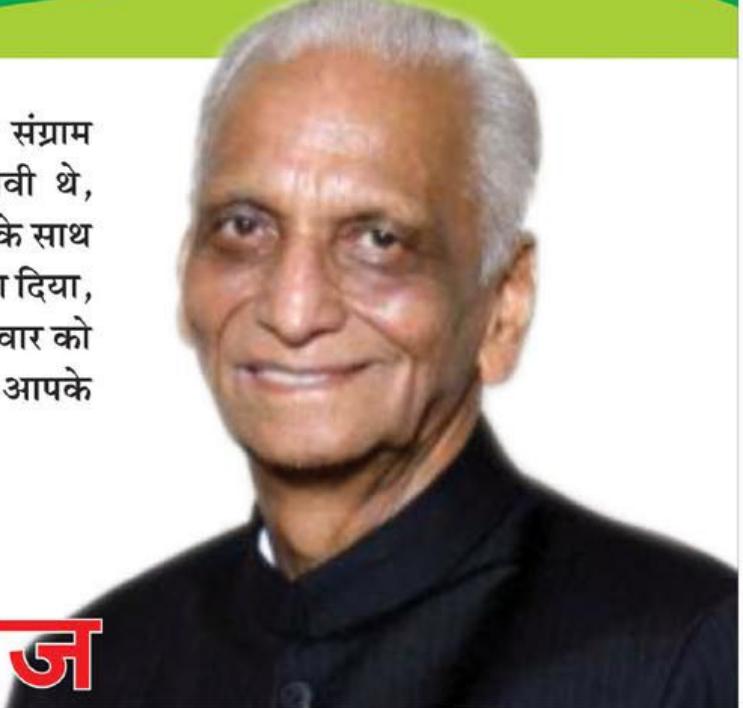


हैदराबाद निवासी वरिष्ठ समाजसेवी व स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री ब्रजभूषण बजाज एक ऐसे समाजसेवी थे, जिन्होंने न सिर्फ हर समाजसेवी गतिविधि को देश के साथ अमेरिका तक में भी तन-मन-धन से अपना सहयोग दिया, अपितु समाज की सेवा के पथ पर अपने संपूर्ण परिवार को भी प्रेरित किया। समाज आगामी 26 अगस्त को आपके प्रथम पुण्य स्मृति पर श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

सेवा पथ का संबल थे

ब्रजभूषण बजाज

हैदराबाद ही नहीं बल्कि अमेरिका में भी अपनी समाजसेवा की विशिष्ट पहचान रखने वाले ख्यात वरिष्ठ समाजसेवी श्री ब्रजभूषण बजाज ऐसे समाजसेवियों में से एक थे, जिन्होंने स्वयं पद प्रतिष्ठा की लालसा तो नहीं की लेकिन तन-मन-धन से अपना सहयोग देने में भी कोई कसर नहीं रख छोड़ी। श्री बजाज कई संस्थाओं रामायण मेला, माहेश्वरी प्रादेशिक सभा आदि से सक्रिय रूप से जुड़े रहे। बालिका शिक्षा के लिए आपने हैदराबाद में पिताजी के नाम पर एक कन्या महाविद्यालय की स्थापना भी की थी, जिसमें वर्तमान में 700 बालिकाएं पढ़ाई कर रही हैं। हैदराबाद में एक नसिंग होस्टल की स्थापना भी उनका सपना था। इसका उद्घाटन गत सितंबर 2019 में उपराष्ट्रपति वैकेंया नायदु, गोवा की तत्कालीन राज्यपाल मृदुला सिन्हा, तेलांगना की राज्यपाल तमीलीसाई सौंदरराजन के कर कमलों से हुआ। सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में भी वे काफी सक्रिय रूप से जुड़े रहे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भी भाग लिया था। आप अपनी समाजसेवा की विरासत पत्नी डॉ. सरोज बजाज, नार्थ-अमेरिका माहेश्वरी महासभा से संबद्ध दो पुत्र अनुराग एवं पराग, पौत्र आदित्य, यश, अनंत और अर्जुन, पुत्री अर्चना व दामाद निर्भय, दोहित्र नेहा और नीरज को साँप गए हैं।



पिता की प्रेरणा, पत्नी का साथ

स्व. श्री बजाज के लिए पिता स्व. श्री वृद्धावनदास बजाज उनके सच्चे मार्गदर्शक व आदर्श थे। पिताजी सच्चे देशभक्त व स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। अतः बचपन से ही श्री बजाज को देशप्रेम की भावना विरासत में मिली। समाजसेवा के पथ पर स्व. श्री बजाज को धर्मपत्नी डॉ. बजाज का साथ मिला। डॉ. सरोज बजाज अत्यंत विदुषी महिला होने के साथ ही परिवार के प्रति इस तरह समर्पित रहीं कि जिससे सभी पुत्र-पुत्री सुसंस्कारित हो गए। श्रीमती बजाज ने उज्जैन के विक्रम विवि से पूर्व कुलपति व ख्यात साहित्यकार डॉ. शिवमंगलसिंह सुमन के निर्देशन में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की थी। परिवार के प्रति उनके समर्पण के बारे में स्व. श्री बजाज ने एक साक्षात्कार में स्वयं कहा था कि बच्चों के लालन-पालन से लेकर कुशल अद्वागिनी के रूप में उन्होंने जो योगदान दिया है, उसके ऋण को वे जीवित रहते तो ठीक मरणोपरांत भी नहीं उतार सकते। श्री बजाज के पिता ने नारी शिक्षा व सशक्तीकरण की जो ज्योति जलाई थी, श्री बजाज ने उसे मशाल बनाने का सदैव प्रयास किया। धर्मपत्नी डॉ. बजाज महिला दक्षता समिति की अध्यक्ष हैं, लेकिन श्री बजाज व्यक्तिगत रूप से तन-मन-धन से इस संस्थान को सदैव पोषित करते रहे।

ज्वेलरी प्रोडक्ट की डिर्टीब्यूटरशीप शहर रन्तर पर देना है
इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें

महाकाली सिल्वर एण्ड गोल्ड प्रा.लि. कोल्हापुर (महा.)

संपर्क- निलेश डांगरा, मो.98223-70069

सी-5, सिल्वर झीन, कागल हातकंगले फाईव स्टार, MIDC कोल्हापुर (महा.)

E-mail-orders.mahakalijewellers@gmail.com

स्मृति शेष

जालौर निवासी समर्पित वरिष्ठ समाजसेवी श्रीरामस्वरूप जैथलिया नहीं रहे। हर मानव सेवी व समाजसेवी गतिविधि में न सिर्फ समाजसेवी अपितु मुक्तहस्त वाले भामाशाह की भूमिका निभाने वाले श्री जैथलिया की अब सिर्फ स्मृतियाँ ही शेष हैं। गत 28 जून को आपने अपनी अंतिम सांस लेकर सभी स्नेहीजनों को अकेला छोड़ दिया।

नहीं रहे मानवता के पुजारी रामस्वरूप जैथलिया

अन्नदान के महत्व को समझते हुए अन्नक्षेत्र शुरू किया, जिसमें दानदाताओं के सहयोग से प्रतिदिन सैकड़ों गरीब एवं असहाय व्यक्तियों को तथा पुष्कर आने वाले निराश्रित साधु-सन्तों को भोजन कराया जा रहा है। वर्तमान में कोरोना महामारी के कारण सरकार द्वारा घोषित लॉकडाउन में भी यह क्रम अनवरत चल रहा था। इसके साथ ही भोजन के पैकेट अन्य जरूरतमंदों को भी वितरित किये जा रहे थे।

गोवर्धन से भवन निर्माण की शुरूआत

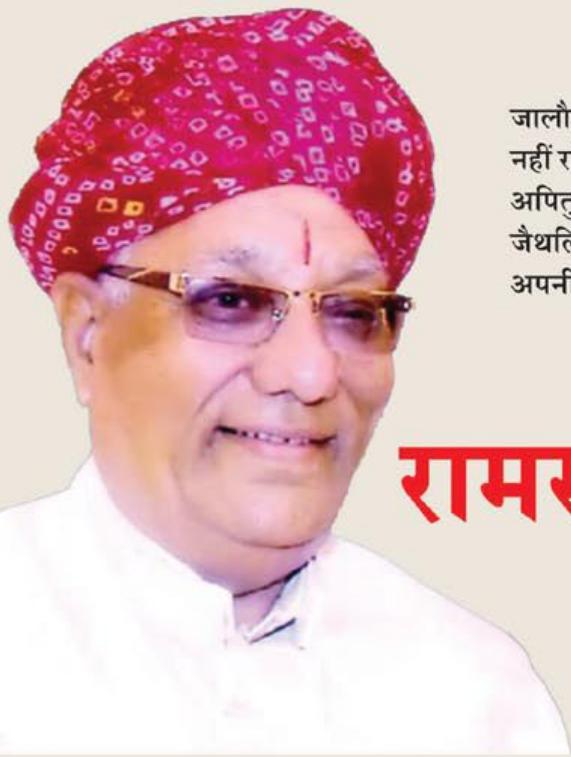
स्व. श्री जैथलिया की आस्था प्रभु श्री गिरिराजधरण, गोवर्धन में शुरू से ही रही है। उन्होंने देखा कि वहाँ जाने वाले यात्रियों को भोजन एवं आवास की बहुत कमी महसूस होती थी। पण्डितजी श्री भागचंद जोशी अजमेर वालों की प्रेरणा से अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर सन् 1999 में श्री गिरिराजधरण माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट की स्थापना की, जिसके प्रथम अध्यक्ष महासभा के पूर्व सभापति जोधराज लड्डा, कोलकाता थे। आज इस ट्रस्ट द्वारा निर्मित भवन में भारत वर्ष के कोने-कोने से यात्री पहुंचकर आधुनिक सुविधाओं युक्त भवन का लाभ उठा रहे हैं।

माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट की स्थापना

गोवर्धन स्थित माहेश्वरी भवन की उपयोगिता एवं महत्वता देखते हुए एवं सेवा के क्षेत्र में एक कदम और आगे बढ़ाते हुए श्री जैथलिया के मार्गदर्शन एवं श्यामसुंदर कास्ट, कोलकाता की अध्यक्षता में श्री अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट की स्थापना की गई। जिसके अंतर्गत श्री द्वारिका धाम में एक अत्याधुनिक सुविधायुक्त श्री माहेश्वरी सेवा कुंज नाम से एक विशाल भवन का निर्माण किया गया। इसके पश्चात श्री जैथलिया ने ट्रस्ट के पदाधिकारियों के समक्ष भगवान श्री जगन्नाथ की नगरी पुरी धाम में भी एक भवन बनाने का प्रस्ताव रखा, जिसे सभी ने सहर्ष स्वीकार किया। स्व. श्री जैथलिया ने स्वयं अपने साथियों के साथ पुरी जाकर समुद्र किनारे से कुछ ही मीटर की दूरी पर एक 36000 वर्ग फुट का भूखण्ड ट्रस्ट के नाम से क्रय किया। शीघ्र ही इस भूखण्ड पर सर्वसुविधा युक्त अत्याधुनिक भवन का निर्माण कार्य शुरू कर दिया जायेगा।

स्वयं ने करवाया भागवत पारायण

स्वयं श्री जैथलिया धार्मिक भावनाओं से अत्यंत ओतप्रोत रहे। यही कारण है कि आपने अपने जीवन काल में कई धार्मिक आयोजनों में अहम भूमिका निभाई। इतना ही नहीं अपने जीवन के अंतिम कुछ दिनों पूर्व श्री जैथलिया ने श्रीमद भागवत कथा का श्री द्वारिका धाम एवं श्री पुष्कर जी में पारायण किया था। इसमें उन्होंने व्यासपीठ पर विराजमान होकर अपने मुखार्विंद से इसका श्रवण कराया था। यह उनकी भगवान श्री कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति को प्रकट करती है।



जीवन की प्रारम्भिक अवस्था से ही जिसे मानव सेवा, समाजसेवा के संस्कार मिले हो, ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के धनी रामस्वरूपजी जैथलिया का गत 28 जून को देहावसान हो गया। आपका जन्म पुष्कर के पास नागौर जिला के ग्राम थांवला में हुआ था। फिर अद्वान्गिनी के रूप में श्री रामनिवास फोफलिया की धर्मपारायण व विदुषी सुपुत्री शांता देवी का साथ मिला। वर्तमान में जालौर में आपका परिवार दो पुत्रों नंदकिशोर एवं संजय जैथलिया तथा पुत्री शकुंतला व दामाद कमल मूढ़ा अपने परिवार के साथ निवासरत हैं।

आजीविका के रूप में

जैथलिया परिवार ग्रेनाइट स्लेट के व्यापार से श्रीराधामाधव ग्रेनाइट एक्सपोर्ट फर्म के माध्यम से सम्बद्ध सम्पूर्ण भारत वर्ष में सुदूर क्षेत्रों तक अपने विशिष्ट पहचान रखता है। जिसको स्व. श्री जैथलिया के पौत्र कृष्णकांत जैथलिया अपनी सूझावूज्ञ एवं मेहनत से बखूबी सम्भाल रहे हैं।

आपकी पौत्रवधु सी.ए. नग्रता जैथलिया (सुपुत्री गोपाल कृष्ण अरूण झंवर, व्यावर-भीलवाड़ा) भी जालौर नागरिक सहकारी बैंक लि. की डायरेक्टर है। आपके पिताजी सेठ साहब स्व. श्री छोगलाल जैथलिया थांवला ग्राम के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। परिवार से प्राप्त उच्च संस्कारों से प्रभावित होकर आपने शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात गांव में ही रहकर सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में कार्य करते हुये मानव सेवा एवं समाज सेवा को ही अपने जीवन का ध्येय बना लिया था।

सेवा कार्यों के लिए मुक्त हस्त

आपने ग्रामीण क्षेत्रों में पीने के पानी की समस्या को देखते हुए जन साधारण की सुविधा हेतु प्याऊ, हैंडपम्प एवं कुओं के निर्माण के साथ गांव के बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले, इस हेतु स्कूल भवन एवं माहेश्वरी भवन, गौशाला तथा मंदिर इत्यादि के महत्वपूर्ण निर्माण कार्य करायें। आप अ.भा. माहेश्वरी महासभा के सक्रिय सदस्य तथा अ.भा. माहेश्वरी सेवा सदन पुष्कर के फाउण्डर ट्रस्टी भी रहे एवं इसके भवन निर्माण से लेकर व्यवस्थाओं तक में आपने तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग दिया। सन् 1996 में आपने माहेश्वरी परमार्थ संस्थान पुष्कर की स्थापना की और



MAKE THE
RIGHT CHOICE
FOR YOUR HOME



DO THE
AKALMAND
THING!



RR KABEL LTD. Regd. Office : Ram Ratna House, Oasis Complex, P. B. Marg, Worli, Mumbai - 400 013.

T : +91 - 22 - 2494 9009 / 2492 4144 • F : +91 - 22 - 2491 2586 • E : mumbai.rrkabel@rrglobal.in

Corp. Office : 305/A, Windsor Plaza, R. C. Dutt Road, Alkapuri, Vadodara - 390 007.

T : +91 - 265 - 2321 891 / 2 / 3 • F : +91 - 265 - 2321 894 • E : vadodara.rrkabel@rrglobal.in

www.rrkabel.com • www.rrglobal.in



Reaching 7500 villages, 9 million people.

Over 100 million Polio vaccinations.

5,000 medical camps / 20 hospitals:

1 million patients treated. 100,000 persons tested on 32 health parameters through Health Cubed. Over 50 deaf and mute children moved from the world of silence to the sound of music through the cochlear implant. More than 6,600 persons had their vision restored through the Vision Foundation of India.

EDUCATION

Our 56 schools accord quality education to 46,500 students. Mid-day meals provided to 74,000 children. Solar lamps given to 4.5 lakh children in the hinterland. Fostering the cause of the girl child through 40 Kasturba Gandhi Balika Vidyalayas.

SUSTAINABLE LIVELIHOODS

100,000 people trained in skill sets. 45,000 women empowered through 4500 SHGs. 200,000 farmers on board our agro-based training projects.

MODEL VILLAGES

We have adopted 300 villages for transformation into model villages. Of these over 90 villages have already reached the model village stature. And much more is being done through the Aditya Birla Centre for Community Initiatives and Rural Development, spear-headed by Mrs. Rajashree Birla.

Because we care.

**NUMBERS MEAN A LOT
BUT A SMILE MEANS EVERYTHING!**



ADITYA BIRLA GROUP



RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2020-2022
Despatch Date-02 August, 2020

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com